सीखती सिखाती अरवरी नदी

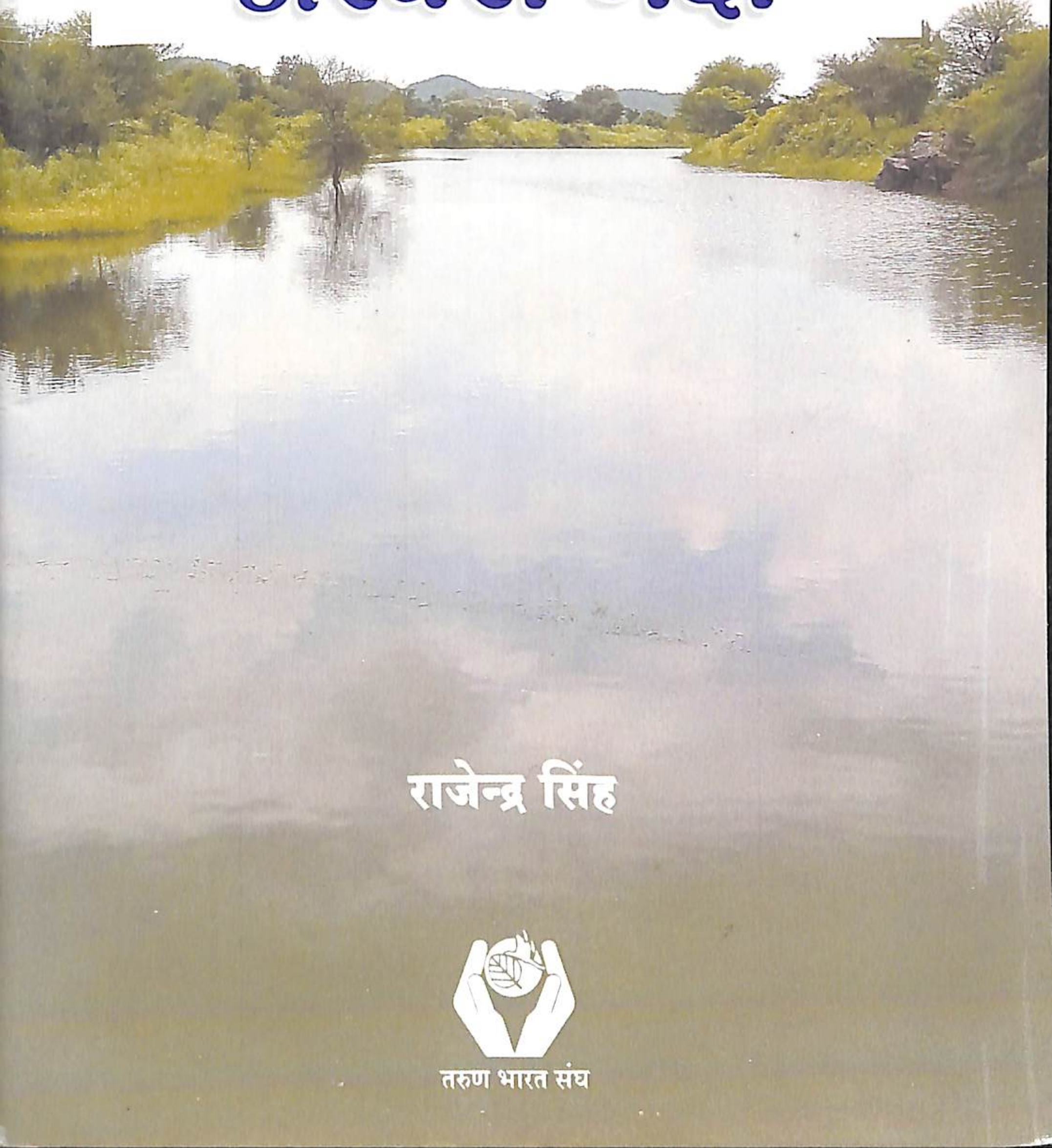

राजेन्द्र सिंह

तरुण भारत संघ

तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति के.आर. नारायणन्, राजस्थान के महामहिम राज्यपाल अंशुमान सिंह, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को अरवरी नदी का काम दिखाते हुए

जबर सागर (हमीरपुर)

सीखती सिखाती अरवरी नदी

राजेन्द्र सिंह

तरुण भारत संघ
भीकमपुरा–किशोरी, थानाग़ाज़ी, अलवर–301 022

प्रथम संस्करण : मई, 2014

लेखक : राजेन्द्र सिंह

सहयोग : कन्हैयालाल गुर्जर, छोटेलाल मीणा,
मुरारीलाल शर्मा, गोपाल सिंह,
मौलिक सिसोदिया, रेनू सिसोदिया

ग्राफिक्स : राहुल सिसोदिया

प्रकाशक : तरुण भारत संघ,
भीकमपुरा, किशोरी, थानाग़ाज़ी
अलवर-301 022 (राजस्थान)
दूरभाष : 01465-225043

वितरक : जल बिरादरी
34/24, किरण पथ, मान सरोवर
जयपुर-302 020
दूरभाष : 0141-2391092

E-mail : watermantbs@yahoo.com
jalpurushtbs@gmail.com

मूल्य : 50.00 रुपये

समर्पण

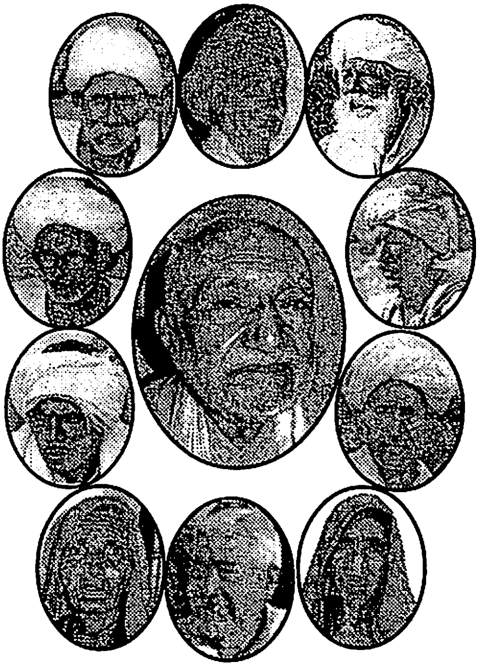

भारत की नदियों व गंगा माँ के प्रवाह को निर्मल व अविरल बनाये रखने के लिए आत्मोत्सर्ग हेतु तत्पर एवं पूर्ण समर्पित 'स्वामी श्री ज्ञानस्वरूप सानन्द' (प्रो. जी.डी. अग्रवाल); परम्परागत जल संरक्षण कार्यों को वैज्ञानिक स्तर पर सफल सिद्ध करने वाले सी.एस.ई., नई दिल्ली के पूर्व निदेशक स्व. डा. अनिल अग्रवाल; सुप्रसिद्ध सर्वोदय विचारक स्व. श्री सिद्धराज ढड्ढा; जल संरक्षण के तकनीकी पहलू को वैज्ञानिक आधार पर एवं प्रायोगिक स्तर पर सुस्पष्ट समझाने वाले प्रो. राशिद हयात सिद्दीक़ी; ग्रामीण स्तर पर अरवरी नदी को देश दुनिया में एक सफल आदर्श के रूप में प्रस्तुत करने वाले प्रथम अरवरी-सांसद स्व. श्री छाजू राम गुर्जर (समरा); स्व. रामचन्द्र मीणा (कालेड़); स्व. सेढूराम गुर्जर (दारोलाई); स्व. सून्दरा पटेल (भाँवता); श्री धन्ना पटेल (कोल्याला); श्री रूड़मल मीणा (हमीरपुर); पूर्व अरवरी-सांसद श्री अर्जुन गुर्जर (कोल्याला); श्रीमती मनभर (भाँवता); श्रीमती रूपा (भूरियावास) एवं वर्तमान अरवरी सांसद श्री दयाभान जी शर्मा को सादर समर्पित।

प्रस्तावना

'सीखती सिखाती अरवरी नदी' पुस्तक देश भर की सूखी नदियों को पुनर्जीवित करने के लिए अरवरी क्षेत्र के सफल सामुदायिक प्रयासों के प्रभाव को दर्शाती है। वैसे तो इस नदी के बारे में देश भर के बड़े-बड़े लेखक, वैज्ञानिक एवं विद्वज्जन समय-समय पर हिन्दी व अंग्रेजी में अपने लेखों, पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं एवं सम्पादकीय आदि के माध्यम से विस्तृत जानकारी देते रहे हैं; पर प्रस्तुत पुस्तक में अरवरी नदी जलागम क्षेत्र के स्थानीय जन-समुदाय द्वारा जल-संकट के समाधान, अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के लिए संघर्ष और ग्राम-स्वावलम्बन की दिशा में किये गये कार्यों का संक्षेप में दिग्दर्शन किया गया है। पूर्व में इस नदी के बारे में विस्तार से लिखने वालों में सर्व श्री जसभाई पटेल, स्व. अनिल अग्रवाल, प्रो. जी. डी. अग्रवाल, श्री के.जी.व्यास, अनुपम मिश्र, प्रो. मोहन श्रोत्रिय, अविनाश, प्रो. एम. एस. राठौर एवं अरुण तिवारी आदि विद्वज्जन प्रमुख हैं। इनके अलावा श्री ललित बहल व आमिर खान जैसे प्रख्यात फिल्म-निर्माताओं ने तो इस नदी के पुनर्जीवन पर फिल्में भी बनाई हैं। अरवरी नदी को आज पूरे देश और दुनिया में जाना जाता है। यह नदी जल-स्रोतों का दोहन कर के सजल नहीं हुई, बल्कि बाढ़ और सुखाड़ का समाधान कर के सदानीरा बनी है।

अरवरी नदी के पुनर्जन्म पर सबसे पहले 1996 में जसभाई पटेल ने एक अंग्रेजी पुस्तक लिखी थी। एक बहुत बड़े वैज्ञानिक होते हुए भी उन्होंने अरवरी नदी के पुनर्जीवन को एक हैरत अंगेज करिश्मा कहा था। प्रो. जी. डी. अग्रवाल ने इस नदी क्षेत्र के गाँवों का सर्वेक्षण कर मूल्यांकन करते हुए कहा था - "यहाँ के समाज ने जिस परम्परागत विधि से यहाँ पर जल-संरक्षण कार्य किया है; वही दुनिया की सबसे सरल, टिकाऊ व सस्ती विधि है। यहाँ के लोगों ने इस क्षेत्र के भू-जल व अधो भू-जल के भण्डारों को खुले तौर पर देख व समझ कर तदनुसार काम किया है। यहाँ का समाज कम वर्षा-जल में भी संतुलित खेती करने की तरकीब जानता है। हमें यहाँ के समाज से जल संकट से उबरने का तरीक़ा सीखना चाहिये।"

प्रो. मोहन श्रोत्रिय व अविनाश ने 'अरवरी नदी के पुनर्जन्म की कथा' में लिखते हुए बताया है कि अरवरी नदी जलागम क्षेत्र के लोगों ने अपनी नदी को पुनर्जीवित कर के दुनिया को एक नई राह दिखाई है। यहाँ के लोग दुनिया भर में व्याप्त जल-अभाव से उत्पन्न संकट को बख़ूबी समझते हैं। प्रो. एम. एस. राठौर ने अरवरी नदी के पुनर्जीवन पर एक विधिवत् शोध कर के यहाँ के लोगों की अद्भुत सूझबूझ और संयमित अनुशासन का सम्मान करते हुए कहा है कि 'अरवरी नदी' क्षेत्र के लोग अब इक्कीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में, कथित आधुनिक विकास की राह पर दौड़ते हुए विश्व को, भयावह जल-संकट के समाधान का परम्परागत व स्व-परीक्षित उपाय सिखाते हैं। अरवरी क्षेत्र के लोगों ने अरवरी नदी जलागम क्षेत्र में बसे हुए सभी गाँवों का एक 'नदी घाटी संगठन' (अरवरी संसद्) बना कर एक बड़े करिश्मे का काम किया है। 'अरवरी संसद्' नामक यह संगठन, कम से कम वर्षा-जल की उपलब्धता में भी देश और दुनिया को जीना सिखाता है तथा उन्हें, मरती हुई नदियों को पुनर्जीवित करने की राह पर चलना भी सिखाता है। जल संरक्षण के प्रभाव को वैज्ञानिक दृष्टि से समझने के लिए आस्ट्रेलिया की वैज्ञानिक शोधार्थी श्रीमती क्लेयर भी यहाँ शोध करने आई थी। उसने अरवरी क्षेत्र के भिन्न-भिन्न स्थलों पर जल-संरक्षण के कार्यों का काफ़ी गहराई से अध्ययन करके, यहाँ के काम के प्रभाव को दर्शाया है।

हमारे देश के महामहिम राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन् भी 28 मार्च 2000 को अरवरी नदी क्षेत्र के लोगों का करिश्मा देखने और उनका उत्साह बढ़ाने हेतु स्वयं अरवरी नदी पर आये थे। दर असल वे विभिन्न विश्वस्त सूत्रों के माध्यम से अरवरी क्षेत्र के लोगों द्वारा पानी के काम हेतु किये गये प्रयासों की प्रशंसा सुन चुके थे। वे उनके सफल प्रयासों से प्रभावित होकर पुरस्कार देने हेतु उन्हें राष्ट्रपति भवन (दिल्ली) में बुलाना चाह रहे थे। पर अरवरी क्षेत्र के लोगों ने उनको विनम्रता पूर्वक संदेश भेजा कि राष्ट्रपति जी ! यदि आप हमारे काम से सचमुच प्रभावित हैं; तो आपको यहाँ स्वयं आकर हमारे कामों को प्रत्यक्ष देखना चाहिये। स्वयं देखने के बाद ही पुरस्कार देंगे तो हमें अच्छा लगेगा। इस बात को माननीय राष्ट्रपति जी ने बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार किया। उन्होंने आते

समय वायुसेना के विमान में बैठे–बैठे जब अरवरी नदी जलागम क्षेत्र की हरियाली को देखा, तो आश्चर्य–चकित हो गये थे। उन्होंने आनन्द–विभोर हो कर कहा था कि लोगों के संगठन और उनके परम्परागत ज्ञान से कैसे एक नदी क्षेत्र एकदम हराभरा हो गया है ! महामहिम ने यहाँ आने के बाद यहाँ के लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा था– **''भारत में असली स्वराज्य सच में आप जैसे लोगों के प्रयासों से ही आ सकता है। आपने वर्षा–जल का संरक्षण कर के अरवरी नदी को पुनर्जीवित करने का एक पुनीत कार्य किया है। मैं आग्रह करता हूँ कि पूरे देश भर में जहाँ भी इस तरह के कामों की ज़रूरत हो, वहाँ का समाज अवश्य ऐसे काम करे।''**

महामहिम राष्ट्रपति जी के अलावा 'अरवरी नदी' व 'अरवरी संसद्' का काम देखने केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री सुन्दर लाल पटवा, जल संसाधन मंत्री श्री सोमपाल शास्त्री व केन्द्रीय जल–संसाधन मंत्री प्रो. सैफुद्दीन सौज़ भी यहाँ आये थे। श्री सौज़ साहब ने अरवरी नदी में हुए कार्यो को देख कर यहाँ के लोगों द्वारा वाष्पीकरण रहित परम्परागत तकनीक से किये गये भू–जल संरक्षण के काम की प्रशंसा करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई दी और इस बाबत उन्हें दो पृष्ठ का एक बधाई–पत्र भी लिखा था।

अरवरी नदी में मछलियों के ठेके के कारण उठे विवाद को मिटाने के लिए दिसम्बर 1998 में न्यायमूर्ति श्री वैंकट चलैया जी (पूर्व मुख्य न्यायाधीश), उच्चतर न्यायालय के निर्देशन से न्यायमूर्ति श्री गुलाब चन्द गुप्ता, मुख्य सचिव श्री मीठालाल मेहता एवं उप कुलपति श्री टी.के. उन्नीथान भी यहाँ आये थे। उन्होंने यहाँ पर उपस्थित 7000 लोगों के समक्ष अरवरी नदी के विवाद को मिटाते हुए कहा कि ''भारत के सांवैधानिक क़ानून के अनुसार तो यह नदी, राजस्थान सरकार की ही है; पर प्रकृति प्रदत्त क़ानून के अनुसार यह नदी, अरवरी नदी जलागम क्षेत्र में बसे सभी 72 गाँवों की है। इसके जल व मछलियों आदि का संरक्षण व उपयोग करने का हक़ उक्त सभी गाँवों का ही होना चाहिए। लेकिन जब तक कोई लोकतान्त्रिक ढाँचा नहीं बन जाता, तब तक इसकी देखभाल राजस्थान सरकार करे।'' इस निर्णय की अनुपालना में ही तो एक सशक्त लोकतान्त्रिक ढाँचे के रूप में 'अरवरी संसद्' का गठन हुआ था।

राजस्थान के, अतिरिक्त मुख्य सचिव स्व. बी. एस. सिंह एवं अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री रामलुभाया ने भी अरवरी नदी क्षेत्र का अवलोकन कर के कहा था कि राजस्थान के जल-संकट का समुचित समाधान व एकमात्र उपाय यह 'सामुदायिक विकेन्द्रित जल-प्रबन्धन' ही है। समाज जब इस तरीक़े से काम करने लग जायेगा, तो स्वत: ही पानीदार बन जायेगा।

कर्नाटक के जल-संसाधन मंत्री श्री एच. के. पाटिल ने भी अरवरी नदी क्षेत्र के लोगों की प्रशंसा करते हुए भरी सभा में उन्हें बधाई दी और कहा कि हम भी आप लोगों से सीख लेकर अपने क्षेत्र की 'ईचन हल्ला' नदी पर इसी तरह का काम करेंगे। उड़ीसा के मंत्री ने भी अरवरी नदी के कामों को देख कर कहा कि हम भी अपने राज्य में ऐसा ही काम करेंगे।

केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री रघुवंश प्रसाद सिंह ने तो अरवरी नदी क्षेत्र में स्थानीय लोगों की जन-भागीदारी से किये गये कार्यों को देख कर ही 'नरेगा' योजना का ढाँचा तैयार किया था। इस योजना में जल-संरक्षण कार्यों को ही प्राथमिकता दी गई थी और अरवरी क्षेत्र में किये गये जल-संरक्षण कार्यों को ही 'नरेगा' के कार्यों का आधार बनाया गया था। लेकिन दुःखद बात है कि 'नरेगा' आज 'मनरेगा' तो बन गया, पर अरवरी की तर्ज़ पर काम नहीं हो पाया।

उक्त लोगों के अलावा देश भर के लगभग सभी राज्यों से तथा पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, जर्मनी, जापान, स्वीडन, इटली, यू. के., अमेरिका, इंग्लैण्ड तथा अन्य देशों के भी अन्तर्राष्ट्रीय मेहमान 'अरवरी नदी' व यहाँ के लोगों का करिश्मा देखने व समझने समय-समय पर आते रहे हैं। अपने देश में वापस जाकर वे यहाँ पर देखी-समझी तरकीब को अपने-अपने क्षेत्र में आजमाते व अपनाते भी हैं। पिछले 25 वर्षों में यहाँ पर किये गये जल-संरक्षण कार्यों तथा लोगों के संगठन को देखने-समझने हेतु यहाँ पर लाखों की संख्या में देशी-विदेशी मेहमान आ चुके हैं और अभी भी उनका आना-जाना जारी है।

अरवरी नदी के पुनर्जीवन की कहानी और इसके प्रबन्धन के लिए बनी 'अरवरी संसद्', दोनों ही सरल, सहज और सामुदायिक कार्य हैं। जिस सरलता और सहजता से समुदाय ने ये काम सम्पादित किये हैं, वैसे ही कामों से दूसरी सूखी और मरी हुई नदियों को भी समाज अपने ही श्रम, समझ व संगठन से

निश्चित ही पुनर्जीवित कर सकता है। बस! जरूरत है तो केवल आत्म-बल, मनोबल और दृढ़ इच्छा शक्ति की। जिस तरह का काम और जैसा संगठन अरवरी नदी क्षेत्र में हुआ है, वैसा ही काम पूरे देश में होना चाहिये। यह बात, यहाँ पर सीखने के लिए आने वाले लाखों लोगों ने अपने अरवरी भ्रमण के दौरान तथा अन्यत्र भी जाकर कही है। अरवरी नदी क्षेत्र के 'ताल, पाल व झाल' ने इस क्षेत्र के भू-जल भण्डारों को भर कर नदी को पुनर्जीवित कर शुद्ध सदानीरा बनाया है। इसी तरह से आज पूरे समाज को भी सदानीरा बनाने की ज़रूरत है।

यह पुस्तक हमें ऐसा ही करने की प्रेरणा देने वाली पुस्तक है। इस पुस्तक में एक नदी घाटी की धरती पर वहाँ के लोगों द्वारा किये गये 28 सालों के कामों के सफल प्रयासों के प्रभाव का वर्णन है। यह पुस्तक लोगों द्वारा पानी के लिए किये गये भौतिक कार्यो का तो वर्णन नहीं करती; लेकिन उनके द्वारा किये गये कार्यो के प्रभावों को बताने व दिखाने का सरलतम उपाय अवश्य खोजती है। यह पुस्तक आँखों देखा बदलाव, मन में हुआ अहसास तथा कुछ अच्छा करने का आभास कराती है।

इस पुस्तक में अरवरी जल-विवाद को मिटा कर नदी की लोकतान्त्रिक व्यवस्था बनाने की एक छोटी-सी कहानी है। यह कहानी मरती हुई छोटी-बड़ी नदियों को पुनर्जीवित करने तथा लोकतान्त्रिक व्यवस्था को सफल एवं समय सिद्ध अनुभवों की दास्तान बना सके; ऐसी मेरी सद् इच्छा है। इसी से तो सीख ले कर सरसा, भगाणी-तिलदह, जहाज वाली, रूपारेल, साबी व महेश्वरा नदियाँ (राजस्थान); इलाहाबाद की नदियाँ (उत्तर प्रेदश); माँ अग्रणी नंदी (महाराष्ट्र) व ईचन हल्ला नदी (कर्नाटक) के बाशिन्दों ने सफलता पाई है। मेरी इच्छा है कि अरवरी की तरह ही देश की अन्य सभी छोटी नदियाँ सामुदायिक प्रबन्धन के द्वारा पुनर्जीवित हो कर शुद्ध सदानीरा बनें। इसी उद्‌देश्य को ध्यान में रखते हुए यह पुस्तक लिखी गई है।

'सीखती सिखाती अरवरी नदी' पुस्तक हम अपने उपाध्यक्ष प्रो. जी. डी. अग्रवाल (वर्तमान में स्वामी ज्ञान स्वरूप सानन्द) को सादर समर्पित करते हैं। स्वामी जी ने 'माँ गंगा' को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए अब अपना शेष जीवन गंगा माँ को समर्पित कर दिया है।

अरवरी नदी भी गंगा माँ की ही एक छोटी-सी धमनी है। आपने गंगा माँ के साथ-साथ इस धमनी को भी पुनर्जीवित कर स्वस्थ रखने का कार्य इस क्षेत्र के समुदाय व तरुण भारत संघ के साथ मिल कर किया है। यह पुस्तक प्रो. जी. डी. अग्रवाल (वर्तमान में स्वामी ज्ञान स्वरूप सानन्द) को समर्पित करते हुए अपने आप को धन्य मानते हैं।

इनके अलावा यह पुस्तक उन सभी जल-प्रेमियों को भी सादर समर्पित है, जिन्होंने अरवरी नदी जलागम क्षेत्र में जल, जंगल, ज़मीन व जन-भागीदारी के लिए तन-मन-धन से पुनीत कार्य किया है। अरवरी नदी को पुनर्जीवित करने हेतु लोगों को जोड़ने में इन लोगों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है, जो आज हमारे बीच नहीं हैं- स्व. गोपाल सिंह, सून्दरा गुर्जर, (भाँवता); छींतर डोई, हरसाय डोई, नाथू कोली (कोल्याला); रामधन मीणा (सेवा का गुवाड़); रामचन्द्र मीणा (कालेड़); बद्री गुर्जर (देव का देवरा); छाजू राम गुर्जर (समरा); सेढू गुर्जर (दारोलाई); प्रभात गुर्जर (चैनपुरा); तेजाराम गुर्जर (बाग़ की ढाणी-रायसर); राम प्रताप गुर्जर (बराणा की ढाणी) आदि।

इनके अलावा जिन लोगों का आज भी निरन्तर सहयोग मिलता रहता है, उनमें प्रमुख हैं- सर्व श्री धन्ना गुर्जर, अर्जुन गुर्जर, (कोल्याला); छोटेलाल गुर्जर, राम सहाय 'मास्टर जी' (भाँवता), वीरेन्द्र सिंह 'मास्टर जी' (पड़ाक); दयाभान जी शर्मा (प्रतापगढ़); गजराज सिंह जी (जगन्नाथपुरा); रूड़मल मीणा, शम्भु दयाल 'मास्टर जी' (हमीरपुर); मूलचन्द पटेल (राज्याली-समरा); चुन्नी लाल गुर्जर, (ग्यार्‌या-समरा); गोपी गुर्जर, हीरालाल 'बाबूजी'(चौक्याला-कालेड़); रामप्रताप जी (खान्याँ), नानगराम मीणा (बस्सी) आदि। इन सभी को यह पुस्तक समर्पित करते हुए अपने आप को गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

इस पुस्तक को लिखने में मेरे साथ गोपाल सिंह व कन्हैया लाल ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रेनू सिसोदिया, मौलिक सिसोदिया छोटे लाल मीणा एवं मुरारी शर्मा ने भी सर्वेक्षण व साक्षात्कार करने में सहयोग किया है। रेनू सिसोदिया ने सर्वेक्षण सारणी का विश्लेषण करने का काम भी किया है। इन सबके सहयोग के बिना इस पुस्तक को तैयार करना सम्भव नहीं था।

राजेन्द्र सिंह

रामजीपुरा तरुणशाला में महिला मीटिंग

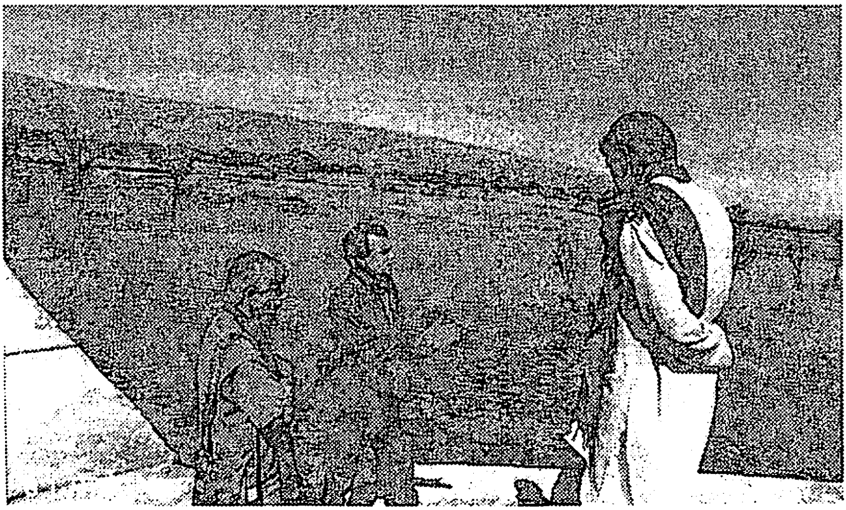

अरवरी किनारे पहुँचे शान्ति प्रतिष्ठान के अनुपम मिश्र, एफ.ए.ओ. (नेपाल) के प्रेम शर्मा और हमीरपुरवासी

भौगोलिक परिचय

अरवरी नदी का उद्गम राजस्थान के पूर्वोत्तर भाग में स्थित अलवर जिले की तहसील थानाग़ाज़ी व जयपुर जिले की तहसील जमुवा रामगढ़ व विराटनगर के कुछ हिस्से से होता है। अरवरी नदी की एक मुख्य धारा तहसील थानाग़ाज़ी के आगर गाँव के पास काँकड़ की ढाणी व धोली दाँती-सेवा का गुवाड़ा से तथा दूसरी धारा भाँवता-कोल्याला(भूरियावास) से प्रारम्भ होती हुई दक्षिण दिशा में आगे को बढ़ जाती है। एक अन्य धारा जोधूला व आमका से चलकर पड़ाक गाँव से होती हुई चौसला गाँव के पास मुख्यधारा में मिल जाती है। ये तीनों धाराएँ प्रतापगढ़ से आगे चाँदपुरा के पास, अरवरी नदी के मुख्य उद्गम 'शिव दहड़ा' की धारा, जो नागेल दारोलाई, लालपुरा व माधोगढ़ से शुरू होकर आती है; उससे मिल जाती है। इसी में लोठावास व पलासाना से आने वाली धारा भी आकर मिल जाती है। आगे हमीरपुर के पास भी कई छोटे-बड़े नालों का पानी अरवरी नदी की मुख्य धारा में आकर मिल जाता है। एक अन्य धारा भाँवता-कोल्याला के 'भैंरूदेव लोक वन्यजीव अभयारण्य' से शुरू होकर खरड़ाटा, डूमोली, साँवतसर, झिरी व जगन्नाथपुरा होते हुए समरा गाँव के पास आकर मुख्य धारा में मिल जाती है। जैतपुर गूजरान व नटाटा से होकर एक धारा और आती है, जो कलजपुरी के बाँध को भरती हुई सैंथल सागर से पूर्व ही मुख्य अरवरी नदी में मिल जाती है। ये सब धाराएँ आपस में मिलती हुई अंत में 'सैंथल सागर' में समाहित हो जाती हैं। यही मुख्य अरवरी नदी है।

अरवरी नदी की एक मुख्य सहायक धारा जो 'बिड़ीला नदी' के नाम से जानी जाती है। यह जयपुर जिले की जमुवा रामगढ़ तहसील के चलपली, धीरावास, बहलोड़, चैनपुरा व रायसर गाँवों से गुजरती हुई खरड़ बाँध को भरती हुई आगे बढ़ती है। इसी बाँध में एक धारा सामरेड़ की ओर से तथा एक धारा महँगी की ओर से भी आकर मिलती है। खरड़ बाँध को भरने के बाद अरवरी नदी की यह सहायक धारा सायपुर, आँधी, थली व जगतसर होते हुए अंत में 'सैंथल सागर' में जाकर मिल जाती है।

सैंथल सागर को भरने के बाद अरवरी नदी नाभाला, सैंथल व पीलवा के पास से होती हुए नाँगल दासा के पास सरसा नदी को भी अपने में मिला लेती है। इससे आधा एक किलोमीटर ही आगे चलकर ये दोनों संयुक्त नदियाँ जहाजवाली नदी और भगाणी-तिलदह नदियों को भी अपने में समाहित करती हुई अपना नाम 'साँवाँ नदी' के रूप में बदलकर बाँदीकुई के झूथाहेड़ा कलाँ व बैजूपाड़ा गाँवों के पास 27 डिग्री 02 मिनट 35 सैकण्ड उत्तरी अक्षांश व 76 डिग्री 46 मिनट 48 सैकण्ड पूर्वी देशान्तर पर बाण गंगा में विलीन हो जाती हैं। बाण गंगा (उतंगन नदी) आगे रेहावली का पुरा व रीथल गाँवों के बीच 26 डिग्री 59 मिनट 01 सैकण्ड उत्तरी अक्षांश व 76 डिग्री 26 मिनट 49 सैकण्ड पर यमुना नदी में मिल जाती है। यमुना नदी प्रयाग (इलाहाबाद) में जाकर राष्ट्रीय नदी गंगा जी में समाहित हो जाती है और गंगा जी अंत में 'गंगासागर' में जाकर सागर-स्वरूप हो जाती है, जिसका दर्शन हमें एक विशाल समुद्र के रूप में होता है।

अरवरी नदी का जलागम क्षेत्र मुख्यतः पहाड़ी क्षेत्र है। पहाड़ियों के बीच की ज़मीन ही खेती के उपयोग में आती है। यहाँ की मिट्टी दोमट व कहीं-कहीं पथरीली है। दोमट मिट्टी फ़सल के लिए तथा पथरीली मिट्टी पेड़-पौधों के लिए उपयोगी है। विश्व के मानचित्र में अरवरी नदी जलागम क्षेत्र 27 डिग्री 00 मिनट 37.5 सैकण्ड से 27 डिग्री 20 मिनट 57 सैकण्ड उत्तरी अक्षांश तथा 76 डिग्री 4 मिनट 15 सैकिण्ड पूर्वी देशान्तर से 76 डिग्री 17 मिनट 36 सैकण्ड पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। अरवरी नदी का जलागम क्षेत्र 492 वर्ग किलोमीटर है। अरवरी नदी में ऊपरी क्षेत्र के गाँव काँकड़ की ढाणी से सैंथल सागर तक की सीधी दूरी 35 किलोमीटर तथा नदी में घुमावदार दूरी 45 किलोमीटर है। इसके सबसे ऊँचे पर्वत शिखर का लेवल समुद्र तल से 710 मीटर है। तलहटी में इस जलागम क्षेत्र के सबसे ऊपर के गाँव काँकड़ की ढाणी का लेवल समुद्र-तल से 479 मीटर ऊपर तथा सबसे नीचे के क्षेत्र सैंथलसागर का लेवल समुद्र तल से 335 मीटर ऊपर है। इस प्रकार काँकड़ की ढाणी से सैंथल सागर तक सीधा ढाल प्रति कि.मी. 4.11 मीटर तथा घुमावदार नदी का औसत ढाल प्रति कि.मी. 3.20 मीटर है।

अरवरी नदी के जलागम क्षेत्र में सन् 1985 से 2014 तक तरुण भारत संघ व गाँव के सहयोग से कुल 402 जल-संरक्षण संरचनाओं का निर्माण हुआ है।

अरवरी क्षेत्र में प्रवेश

वर्ष 1985 में मरणासन्न अरवरी नदी को देख कर यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि यह नदी कभी पुनः जीवित भी हो सकती है। अकाल का दौर शुरू हो चुका था। कुओं का जल-स्तर निम्न से निम्नतर होता जा रहा था। पानी के लिए त्राहि-त्राहि मची हुई थी। सरसा नदी क्षेत्र के गाँव गोपालपुरा में तरुण भारत संघ और गाँव के लोगों की सहभागिता से पानी का काम शुरू हो चुका था। उधर अरवरी नदी अन्तिम साँसें ले रही थी।

यों तो यहाँ की अन्य नदियों का भी यही हाल था, पर अरवरी नदी का सूख जाना, यहाँ के लोगों के लिए ज़्यादा गम्भीर बात थी। क्योंकि यहाँ के बुजुर्गों ने अपने बाल्य-काल में कभी इस नदी को शुद्ध सदानीरा व निर्मल अविरल बहते हुए देखा था। उन लोगों को अब यह सूखी नदी एक बेजान लाश के समान दिखाई दे रही थी। लोग अपनी प्यारी नदी को जीवित तो करना चाहते थे, पर क्या करें? कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। वे कुछ भी कर पाने में असमर्थ थे। और सरकार...... सरकार तो केवल चुनावों के दौरान ही कुछ-कुछ सक्रिय दिखाई देती थी, बाक़ी समय में तो चादर तान के सो ही जाती थी। ग्राम-पंचायतों के पास भी तब इतना बड़ा बजट नहीं होता था, जिससे अपने गाँव में पानी के काम के लिए बढ़ावा दे सकें। निरुपाय गाँव वाले निराश हो कर बैठ गये थे।

इसी दौरान 30 जनवरी से 10 फरवरी 1987 तक श्री सिद्धराज ढड्ढा के नेतृत्व में 'तरुण भारत संघ' ने एक 'ग्राम-स्वराज्य पदयात्रा' शुरू की थी, जो यहाँ के अलग-अलग गाँवों में अलग-अलग लोगों द्वारा

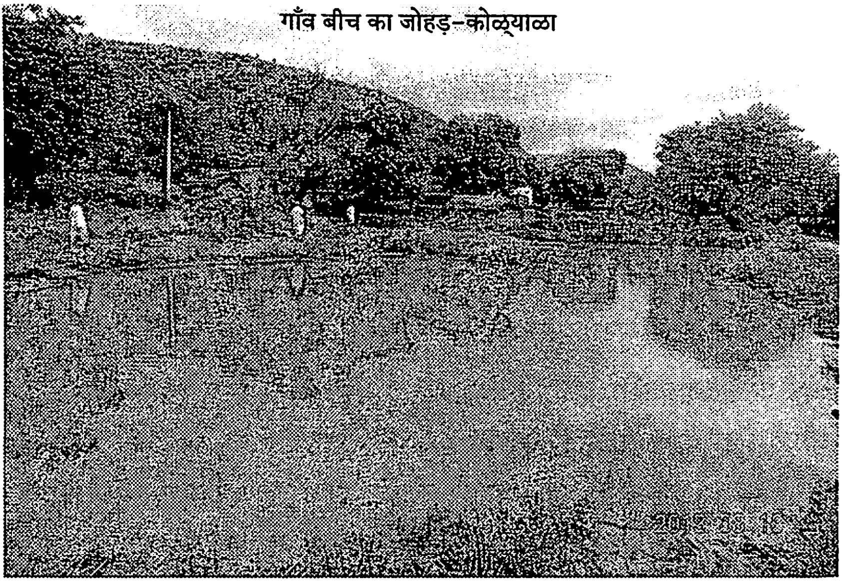

संचालित की गई थी। इसी यात्रा के दौरान फरवरी 1987 के प्रथम सप्ताह में तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता पहली बार 'अरवरी नदी' क्षेत्र के हमीरपुर गाँव में पहुँचे थे।

रूड़मल मीणा अपनी पुरानी हवेली में जेवड़ी (रस्सी) बाँट रहा था। तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं को आया देख कर उसने उनसे परिचय किया। जब उसे मालूम हुआ कि ये लोग एक संस्था 'तरुण भारत संघ' के कार्यकर्ता हैं और पानी के काम में लोगों की मदद करते हैं, तो उसने अपने गाँव में भी पानी का काम करने की गुज़ारिश की। उसे 11 फरवरी 1987 को थानाग़ाज़ी में किये जा रहे किसान-सम्मेलन में आने को कहा गया। इस सम्मेलन में हमारे साथ प्रख्यात सर्वोदयी विचारक श्री सिद्धराज ढड्ढा भी उपस्थित थे। इस सम्मेलन में जल व जंगल संरक्षण के साथ ही साथ देशी खाद-बीज व ग्राम-स्वावलम्बन के बारे में भी बातचीत हुई।

सम्मेलन के बाद एक दिन रूड़मल मीणा तरुण भारत संघ के प्रारम्भिक कार्यालय भीकमपुरा में आया। उसने अपने गाँव हमीरपुर में पानी का काम करने का आग्रह किया। गोपालपुरा का काम उसने देखा था; क्योंकि गोपालपुरा में

उसकी रिश्तेदारी थी। इसलिए वह श्रमदान की पूरी प्रक्रिया से वाक़िफ़ था। उसके आग्रह पर गाँव में जाकर साइट देख कर काम शुरू कर दिया गया। सबसे पहले 'जोगियों वाली जोहड़ी' का काम शुरू हुआ था। इसके बाद तो गाँव में तथा आसपास के अन्य गाँवों में पानी के कामों का एक सिलसिला ही शुरू हो गया।

धीरे-धीरे अरवरी नदी जलगाम क्षेत्र के उद्गम के गाँवों में भी पानी के कामों की शुरूआत होने लगी। देखते ही देखते उद्गम से संगम तक पूरे अरवरी क्षेत्र में पानी के अच्छे-अच्छे काम होते ही चले गये। पानी के इन कामों के प्रभाव से 1990 में अरवरी नदी में फिर से पानी दिखाई देने लगा; जो अक्टूबर माह तक बहता दिखाई दिया। यह देख कर लोगों का हौसला और बढ़ा तथा काम भी तीव्र गति से आगे बढ़ा। सन् 1996 के चौमासे के बाद अरवरी नदी पूरे साल बहने लगी। बस ! अरवरी नदी पुनर्जीवित हो गई और तब से अब तक वह शुद्ध सदानीरा हो कर बह रही है। लोगों को अपनी मेहनत का फल मिल गया। आज वे पूरी तरह से प्रसन्न और संतुष्ट हैं।

पानी के काम से पूर्व की स्थिति के बारे में पूछने पर हमीरपुर के रूड़मल मीणा पानी के संकट से उत्पन्न अपनी दुःखद स्थिति की आपबीती कहानी सुनाते हुए कहते हैं- " संस्था के काम से पूर्व, अकाल के दौरान भीषण जल-संकट के कारण मुझे उदर-पूर्ति व आजीविका के लिए बाहर जाना पड़ा था। मैं मेहनत मज़दूरी के लिए जयपुर चला गया था। बड़ी विषम परिस्थितियों में रहते हुए, मुझे वहाँ कई तरह के अच्छे-बुरे काम करने पड़े थे। वहाँ मेरे ही जैसे अन्य लोगों की भी लगभग यही हालत थी।

रूड़मल मीणा कहते हैं- "इस तरह के काम के दौरान 1987 के प्रारम्भ में मैं जब गाँव आया तो तरुण भारत संघ से सर्म्पक हो गया। बस! तभी से संस्था के साथ जुड़ कर मैं अपने गाँव के लिए तथा दूसरे गाँवों के लिए पानी के काम में यथा सम्भव सहयोग करता रहता हूँ। आज हमारा इलाक़ा पानी के मामले में समृद्ध है। आज हम पानीदार हैं। अब हम सब खुश हैं।

'सीखती सिखाती अरवरी नदी'

19 वीं सदी में शुद्ध सदानीरा बहने वाली 'अरवरी नदी' 20 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में सूख गई थी। नदी बेसिन में बसे हुए गावों के जवान लोग पानी के अभाव में शहरों की तरफ पलायन करने लगे थे। गाँव उजड़ने लगे। गाँवों में केवल बुजुर्ग लोग-लुगाई और बच्चे ही बचे हुए थे, जो लाचारी, बेकारी व बीमारी का जीवन जीने को मज़बूर थे।

1987 में अरवरी क्षेत्र के हमीरपुर व भाँवता आदि गाँवों में बचे हुए लोगों ने बादलों की गोद से निकली पानी की बूँदों को ऐसे ढंग से पकड़ना शुरू किया कि उन पर सूरज की टेढ़ी नज़र न लगे। गाँव के लोगों ने अपनी परम्परागत सूझबूझ से, सूख चुके कुओं में उतर-उतर कर, धरती के अन्दर की सलों (परतों) को देखा और परखा। मिट्टी की परख, धरती का ढाल, वर्षा का वेग, बादलों के आपस में टकरा कर बरसने तथा पानी की उपलब्धता आदि बातों का ज्ञान लोगों में जहाँ-तहाँ बिखरा पड़ा था। 'तरुण भारत संघ' ने इसी बिखरे पड़े अनमोल ज्ञान को जोड़ने का काम शुरू किया। बिखरे पड़े इस ज्ञान को जोड़ने की पहल लोगों ने अपनी प्यास बुझाने के काम से की। लोगों ने बादलों से निकली पानी की बूँदों को पकड़ने के लिए जोहड़, तलाई, बाँध, एनीकट,

ताल

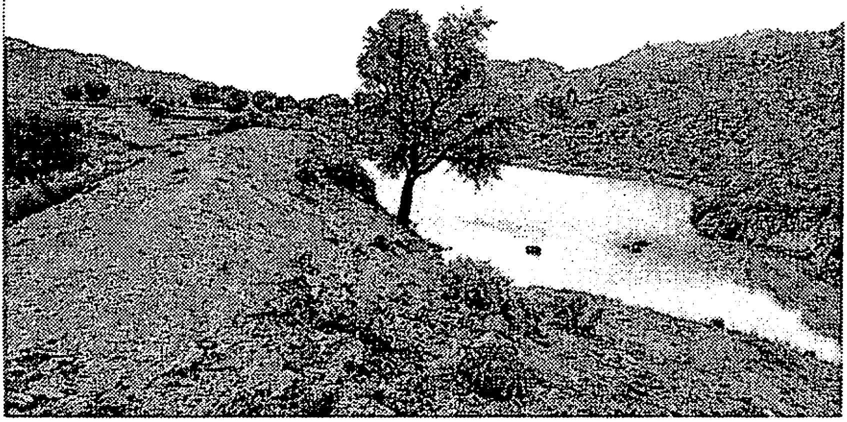

गूदड़्या वाला जोहड़ - दारोळाई

चैकडैम, खेत–तलाई, मेड़बन्दियाँ व झालरे आदि भिन्न–भिन्न प्रकार की जल–संरक्षण संरचनाओं का निर्माण 'ताल, पाल और झाल' के सिद्धान्त पर शुरू किया था। यहाँ 'ताल, पाल, व झाल' के बारे में जानना समीचीन होगा।

तालः – यह मिट्टी से बनी एक अर्ध–चन्द्राकार संरचना होती है। ताल को ही विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों में जोहड़, जोहड़ी, तालाब, तलाई, तलैया, पोखर, पोखरा, नाडा, नाडी आदि नामों से भी जानते हैं। यह चिकनी मोरम मिट्टी में, जहाँ भी झील या गहराई मिल जाये, वहाँ बनाई जा सकती है।

ताल–निर्माण बहुत पुरानी परम्परा है। सर्वमान्य है कि मानव सभ्यता मुख्यतः नदियों के किनारे ही पनपी है। धीरे–धीरे जब आबादी बढ़ने लगी तो लोगों को नदियों से दूर जाना पड़ा। नदियों से दूर जाने पर स्वाभाविक है कि लोगों को पीने के पानी की समस्या भी आने लगी। 'आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है।' लोगों ने अपने आवास के आसपास ही वर्षा–जल को संरक्षित करने की विधि खोज निकाली। इस विधि से निर्मित संरचना ही कालान्तर में 'ताल' कहलाने लगी। ताल मुख्यतः पशु–पक्षियों, जंगली जानवरों, तथा मनुष्यों के पीने व नहाने आदि के काम आता है। इसके अलावा ताल से आसपास के कुओं का जल–स्तर भी ऊपर आता है। ताल की पाल पर मिट्टी का कटाव नहीं हो, इस के लिए पाल पर वनस्पति, घास, दूब आदि लगानी चाहिये। ताल के जल को सूरज की नज़र से बचाने के लिए इसकी दक्षिण दिशा में पेड़–पौधे लगाने चाहिये।

तालों के किनारे ही किसी ज़माने में मानव–सभ्यता और सामाजिक संस्कारों ने जन्म लिया था। ताल समाज को प्रकृति का सम्मान करना सिखाते थे और ताल ही उनके जीवन की ज़रूरतें भी पूरी करते थे। ये किसी के निजी लाभ या लालच को पूरा करने के लिए नहीं बनाये जाते थे, बल्कि ये सब के साझे भविष्य और वर्तमान के लिए शुभ का हेतु बनते थे। ये लोगों को जल–संरक्षण हेतु त्याग, तपस्या व श्रम–निष्ठा का व्यवहार करना सिखाते थे। ताल में भरा वर्षा–जल समाज का पुण्य–फल माना जाता था। इसीलिए इस पर सभी का समान हक़ होता था।

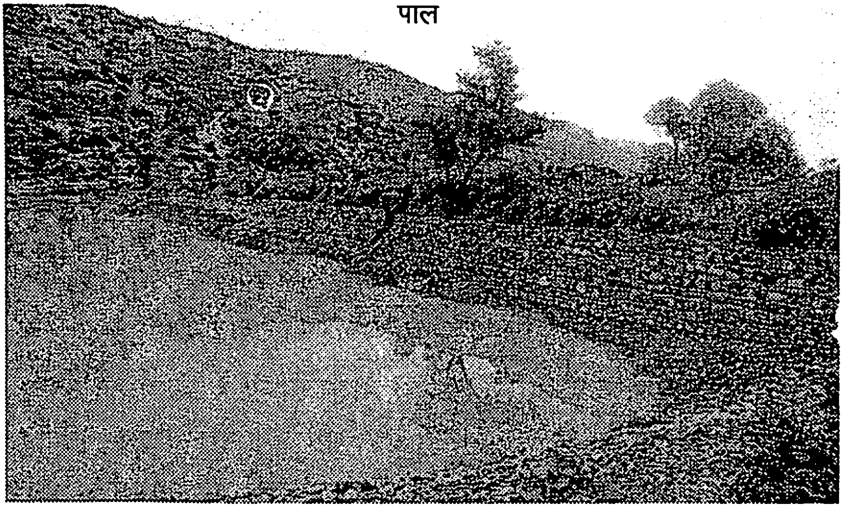

भैंरूजी वाला बाँध - कोळ्याळा-भाँवता

ताल भू-जल व अधो भू-जल भण्डारों के लिए स्पंज का काम करता है। यह, वर्षा के जल को अपने अन्दर समा लेता है। धरती के पेट में समाहित यही संरक्षित जल, धीरे-धीरे ताल के नीचे अथवा नदी में प्रवाह पैदा करता है। ताल के इस स्पंजी प्रवाह से ही तो 'अरवरी नदी' प्रवाहित हुई है।

ताल ज़्यादातर नीचे की तरफ़, लेकिन मुख्य धारा से हटकर बनते हैं। इनमें ऊपर से आने वाला पानी ही इकट्ठा होता है। ताल इस एकत्र पानी को जीवन देने का तथा धरती माता को सरस बनाने का काम करते हैं। मनुष्य, पशु-पक्षी व धरती का पेट भरना ही तालों का मुख्य उद्देश्य है। अरवरी नदी जलागम क्षेत्र में अब तक 184 तालों का निर्माण किया जा चुका है।

पालः- पाल प्रायः समतल अथवा कम ढलान वाली भूमि पर बनाई जाती हैं। समतल भूमि पर पाल सीधी बनाई जाती हैं। कहीं-कहीं ढलान वाली भूमि पर भी पाल सीधापन देकर बना ली जाती है। पाल प्रायः मिट्टी की ही होती है। पाल की डिजाइन(लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई, मोटाई व गहराई आदि) जल के दबाव को ध्यान में रख कर तय की जाती है। पाल अधिकतर खेती की ज़मीन पर खेतों के किनारे पर बनाई जाती हैं; लेकिन ये प्रायः नदी बेसिन के मध्य और निचान वाले क्षेत्र में भी बनाई जाती हैं। ये सहज ढलान

व समतलीय भूमि पर ज़्यादा सुरक्षित रहती हैं। बन्ध, बाँध, मेड़बन्दी, खेत-बन्ध, नाला-बन्ध, चैकडैम और छोटे एनीकट आदि का काम 'पाल' के अन्तर्गत ही आता है।

पाल बनाने का काम भी सदियों से होता आया है, लेकिन आज हमारे आधुनिक कथित विकास के तौर-तरीक़ों द्वारा मेहनती लोगों को भी श्रमहीन व आलसी बनाया जा रहा है। अरवरी नदी जलागम क्षेत्र में अब तक 178 पालों का निर्माण किया जा चुका है।

झाल :- झाल प्रायः ऊपर की तरफ और मुख्य धाराओं में ही बनती हैं। इनका उद्‌देश्य वर्षा-जल को एक नियत स्तर तक रोक कर शेष वर्षा-जल को अपने ऊपर से बह कर जाने देना है। अर्थात् तीखे ढलान पर दौड़ते हुए पानी को चलना सिखाना ही 'झाल' का मुख्य उद्‌देश्य है। ये कभी-कभी तो सीधी तथा कभी-कभी उभय चन्द्राकार बनाई जाती हैं। एक नियत बिन्दु तक वर्षा जल को झेलने के बाद पानी को अपने ऊपर से बह जाने देने वाली जल-संरचना को ही 'झाल' कहते हैं।

अरवरी नदी जलागम क्षेत्र में सैकड़ों झाल बनाये गये हैं, जिनमें भाँवता का 'साँकड़ा बाँध', हमीरपुर में भैंसादह का 'ज़बर-सागर', समरा का 'खजूरी झाल

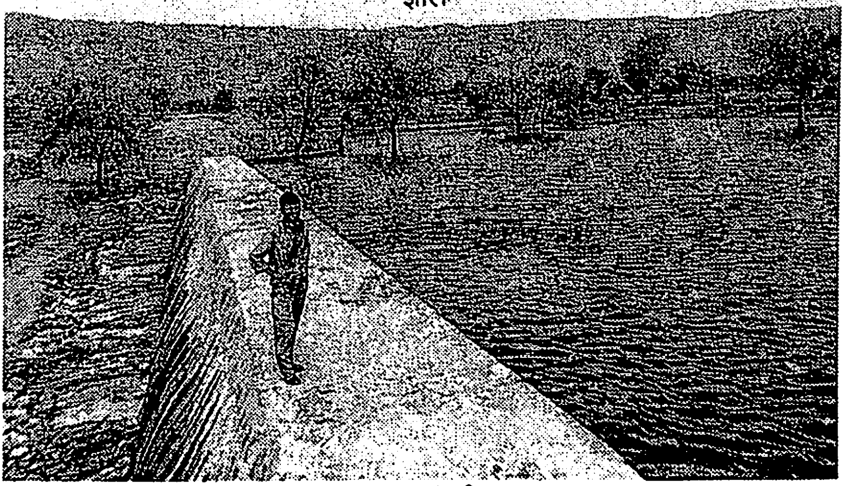

जबर सागर (हमीरपुर)

वाला एनीकट', कालेड़ का टोडी वाला 'कुंज-सागर' तथा बस्सी का 'नीमड़ी वाला एनीकट' आदि प्रमुख हैं। अरवरी नदी जलगाम क्षेत्र में अब तक 40 झाल-निर्माण कार्य हो चुके हैं।

अरवरी नदी में 1985 के बाद बनी 'ताल, पाल और झाल' जैसी परम्परागत जल-संरचनाओं ने इस नदी को 1996 में पहली बार शुद्ध सदानीरा बना कर एक हैरत अंगेज़ करिश्मा कर दिया। नदी एक बार बहने लगी तो बस! बहने ही लगी। नदी का बहना शुरू होने के बाद कई मौक़े ऐसे भी आये जब वर्षा आधी से भी कम हुई; पर तब भी आज तक यह नदी और नदी क्षेत्र के कुएँ सूखे नहीं।

1996 में जब यह नदी पहली बार बारहमासी बहने लगी तो राजस्थान सरकार ने 30 नवम्बर को नदी में से मछली पकड़ने का ठेका जयपुर जिले के एक ठेकेदार को दे दिया। ठेकेदार के लोग जब मछली पकड़ने आये, तो ग्राम वासियों ने उनको मछली नहीं पकड़ने दिया। सरकार द्वारा हस्तक्षेप करने पर अरवरी नदी क्षेत्र के सभी गाँवों के लोगों ने सरकार के विरुद्ध एक जन-आंदोलन शुरू कर दिया। आंदोलन का नाम रखा 'जलचर बचाओ आंदोलन'। अन्त में 11 अप्रैल 1997 को ग्राम वासियों के संगठित आंदोलन के कारण सरकार को अरवरी नदी में से मछली पकड़ने का ठेका रद्द करना पड़ा। राजस्थान सरकार ने जब तरुण भारत संघ के विरुद्ध झूँठे मुक़द्दमे दर्ज कराये, तो अरवरी क्षेत्र के लोगों के आग्रह पर मदद के लिए देश भर के पर्यावरणविद्, उच्च अधिकारी,

जन-सुनवाई (हमीरपुर में)

वैज्ञानिक व समाज सेवी 19 दिसम्बर 1998 को अरवरी नदी की धरती पर आये। इनमें मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री गुलाब सी. गुप्ता, राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव श्री मीठालाल मेहता व राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति श्री टी. के. उन्नीथान आदि प्रमुख हैं। जन–सुनवाई के दौरान इन लोगों ने अरवरी क्षेत्र के लोगों की समस्याएँ सुनीं और उनके समाधान के लिए कुछ निर्णय भी दिये। प्रमुख निर्णय इस प्रकार हैंः–

1. अरवरी नदी राजस्थान सरकार की है।
2. प्रकृति प्रदत्त अधिकार के तहत अरवरी नदी को जिन 72 गाँवों ने मिलकर पुनर्जीवित किया है, यह उनकी साझी नदी है। इसलिए इन लोगों को इसका पानी उपयोग में लेने तथा जल–जन्तुओं को संरक्षित करने का नैतिक अधिकार है।
3. जब तक अरवरी नदी की कोई लोकतान्त्रिक प्रबन्धीय व्यवस्था नहीं हो जाती, तब तक इस नदी की देखभाल राजस्थान सरकार करेगी।

इस फ़ैसले को सुनकर अरवरी नदी बेसिन से आये हजारों लोग(लगभग 7000) खिन्न हो गये; लेकिन उन्हें समझाया गया कि नैतिक दृष्टि से हमें न्यायाधिकरण द्वारा दिये गये इस फ़ैसले का सम्मान करते हुए इसका पालन करना चाहिये। इसके साथ ही लोगों को यह भी कहा गया की अब शीघ्र ही अरवरी क्षेत्र के सभी गाँवों को एक लोकतान्त्रिक प्रबन्धीय व्यवस्था अर्थात् 'नदी संसद्' बना लेनी चाहिये। जल्दी ही अरवरी क्षेत्र के सभी गाँवों ने मिलकर 26 जनवरी 1999 को एक 'नदी संसद्' का गठन कर लिया। इस नदी संसद् का नाम रखा गया 'अरवरी संसद्' ।

अरवरी संसद् गठन के तुरन्त बाद अरवरी क्षेत्र के सभी 72 गाँवों के सर्व–सम्मत 162 सदस्यों की सूची बनाकर सबकी सहमति से न्यायमूर्ति श्री गुलाब सी. गुप्ता को सौंप दी गई; जिसे पढ़ कर उन्होंने मुख्य सचिव श्री मीठलाल मेहता को इसे नोटीफाइड करने के लिए दे दिया। लेकिन बडे.दुःख की बात है कि राजस्थान सरकार ने उस सूची को आज तक भी नोटीफाइड नहीं किया।

इतना सब होने के बावजूद 1999 में बनी यह अरवरी संसद् स्थानीय स्तर पर सतत् रूप से अपना कार्य कर रही है। अरवरी संसद के सदस्यों का चयन प्रत्येक गाँव की ग्राम-सभा ने दो प्रमुख विशेषताओं के आधार पर किया है-

1. जिन लोगों ने अरवरी नदी जलगम क्षेत्र में ग्राम-संगठन बना कर श्रमदान कर के जल, जंगल, जमीन व जंगली जीवों को बचाने का काम स्वयं किया हो।
2. दूसरे वे लोग, जिन्होंने जल-संरक्षण कार्यों के लिए लोगों को शिक्षण-प्रशिक्षण दे कर लोक-सहयोग व सहभाग बढ़ाने में योगदान दिया हो तथा पानी को शोषण, प्रदूषण व अतिक्रमण मुक्त बनाने हेतु ग्राम-सभाओं को सशक्त व सक्रिय करने का काम किया हो। अरवरी संसद् में इन दोनों तरह के लोगों को ही सर्व-सम्मति से सदस्य बनाया गया है।

अरवरी संसद् के सदस्यों की इस प्राथमिक सूची को भले ही राजस्थान सरकार ने नोटीफाइड न किया हो, लेकिन यह संसद् पिछले 15 सालों से विधिवत काम कर रही है। अभी तक इस संसद् के 30 अधिवेशन हो चुके हैं। संसद् के लिए निर्णयों की अनुपालना कराने का काम ग्राम-सभाएँ करती हैं; क्योंकि संसद् का मुख्य आधार ग्राम सभाएँ ही हैं। यह

अरवरी जल संसद् का 17वाँ अधिवेशन

संसद् रीति–नीति निर्माण करने के साथ–साथ अनुशासनात्मक कार्रवाई भी करती है। गाँवों के आपसी विवादों का निपटारा भी यह संसद् करती है तथा निर्णय का पालन कराने के लिए सम्बन्धित ग्राम सभा के पास भी जाती है।

अब तक हुए 30 अधिवेशनों में यह बात साफ़ हुई कि जहाँ भी जल–ज़रूरत पूरी करने हेतु निर्माण व रचनात्मक कार्य किये जायें, वहाँ पर मानव व प्रकृति के 'शुभ' हेतु अनुशासनात्मक उपयोग व प्रबन्धन करना भी ज़रूरी है। अरवरी संसद् की अनुशासनात्मक कार्रवाई एवं प्रेरणादायी प्रबन्धन के कारण ही इस वर्ष कम वर्षा होने के बावजूद जून 2013 की भीषण गर्मी में भी समरा से कालेड़ व बस्सी तक यह नदी शुद्ध सदानीरा बन कर बहती रही है। अरवरी नदी का शुद्ध सदानीरा बन कर बहना, हमें सिखाता है कि यहाँ के समाज की सामुदायिक सोच, समझ, निर्णय तथा श्रम–निष्ठा से ही सृजित हो कर देश के सबसे कम वर्षा वाले क्षेत्र राजस्थान को शुद्ध सदानीरा बना कर अरवरी नदी, जो सूखी व मरी हुई थी, फिर से बहने लगी है।

आज देश की हजारों छोटी–छोटी नदियाँ सूख व मर गई हैं। उनको भी अरवरी नदी की तर्ज़ पर ही पुनर्जीवित किया जा सकता है। नदी को पुनर्जीवित करने की मूल शर्त है–

1. बादलों की गोद से निकली हर बूँद (इन्द्रजल) को नदी क्षेत्र में जहाँ भी वह पड़े, वहीं पर पकड़ लेना और धरती के पेट में सुरक्षित रख देना; ताकि नज़र न लगे सूरज की। इसके अलावा धरती के पेट का पानी तथा इसके कारण बहते झरनों का शोषण करने व लूटने के लिए तत्पर राज्य सरकारों व उद्योग पतियों से बचा लेना भी एक ज़रूरी शर्त है।

अरवरी नदी में 1996 में पहली और आखिरी बार सरकार द्वारा मछली पकड़ने का ठेका ठेकेदारों को दिया गया। लेकिन लोगों के संगठित आंदोलन के कारण सरकार को अन्ततः ठेका रद्द करना पड़ा। यदि यहाँ के लोग संगठित हो कर अपने पानी व मछलियों को नहीं बचाते तो यह नदी भी देश की अन्य नदियों

की तरह प्रदूषित हो जाती। इस पर भी जब ठेकेदारों को गाँव वालों ने मछली नहीं पकड़ने दिया तो द्वेषवश उन्होंने नदी में विष युक्त खाद्य डाल कर मछलियों को मार दिया और नदी को प्रदूषित कर दिया था, लेकिन बाद में जब राजस्थान सरकार ने अपनी दूरदृष्टि और सूझबूझ का परिचय देते हुए ठेका रद्द कर दिया, तो इस समस्या से मुक्ति मिली। ठेका रद्द करके सरकार ने अरवरी संसद् को एक तरह से अलिखित मान्यता दे कर यह सिद्ध कर दिया कि सरकार नैतिक रूप से उनके साथ है। यह बात अलग है कि बाद में अलवर ज़िला कलैक्टर ने अरवरी संसद् के नव निर्मित भवन को तुड़वा कर अपनी पद–शक्ति का प्रयोग अवश्य किया था।

इतना सब होते हुए भी अरवरी सांसदों की सूझबूझ के कारण अरवरी संसद् की विधिवत कार्रवाई में किसी प्रकार की अड़चन नहीं आई। संसद् सदस्य और संसद् के लोग उन पुरानी अप्रिय घटनाओं को याद कर कर के केवल दुःखी तो होते है, पर विचलित नहीं होते। बल्कि अब तो संसद् सदस्य और ज़्यादा तत्परता, समझदारी, संतोष और शान्ति के साथ काम करने लगे हैं। जल–सांसद (संसद्) साल में दो बार जून और दिसम्बर के महीने में–मिलते हैं। अपने छमाही अधिवेशन में ये ऐसे नियम व नीति बनाते हैं, जिन से सब को पानी पर समान अधिकार मिले तथा सब को पानी के प्रति ज़िम्मेदार बनने का भाव बना रहे। अरवरी संसद् व्यक्ति के ज़िम्मेदारी व हक़दारी के रिश्तों को जोड़ती है। इस संसद् में महिलओं व पुरुषों की समान भागीदारी रहती है। संसद् 'नदी नीर व नारी' का सम्मान करती है; इसीलिए यहाँ पर आज भी सहज, सर्वसम्मत और निर्विरोध चुनाव प्रणाली प्रभावी है। इस संसद् ने ग्यारह प्रमुख नियम बनाये हैं जो इस प्रकार हैः–

अरवरी संसद् दलगत राजनीति, साम्प्रदायिक भेदभाव, जात–पाँत और लिंग–भेद आदि से ऊपर उठ कर काम करती है। इस संसद् में लिए गये निर्णयों की पालना करना इस क्षेत्र की सभी ग्राम–सभाएँ अपनी ज़िम्मेदारी व हक़दारी समझती हैं। यह संसद् जल, जंगल, ज़मीन, फ़सल–चक्र व सिंचाई आदि से जुड़े कामों को साझे काम मान कर ही उनका प्रबन्धन कराती है।

अरवरी संसद् का इतिहास अभी बहुत छोटा है। 15 वर्ष पूर्व गठित इस संसद् में काम करने वाले लोग पिछले 28 वर्षो से संस्था के साथ जुड़े हुए हैं। पिछले 15 वर्षों से यह संसद् विधिवत् अपना काम कर रही है। लेकिन इस दौरान पानी के मुद्दे को ले कर कई विवाद भी होते रहे हैं। पहला विवाद राज्य सरकार द्वारा लोगों के श्रम से पुनर्जीवित हुई नदी में स्वतः उत्पन्न हुई मछलियों को मारने का ठेका देना। दूसरा विवाद उद्योगों व उद्योगपतियों द्वारा यहाँ के भू-जल भण्डारों का शोषण कर के पानी का व्यापार करना तथा तीसरा विवाद पानी के बँटवारे को लेकर समाज के ऊँच-नीच व छोटे-बड़े समुदायों में आपसी तनाव पैदा हो जाना।

इन सभी विवादों का समाधान यहाँ के लोगों ने अरवरी संसद् के माध्यम से स्वयं किया। अरवरी नदी में से मछलियाँ पकड़ने के ठेके को रद्द करवाने के लिए इस क्षेत्र के 72 गाँवों ने संगठित हो कर शान्तिपूर्ण तरीके से ठेकेदारों का विरोध किया। विवश हो कर सरकार को मछलियाँ पकड़ने हेतु दिया गया ठेका रद्द करना पड़ा।

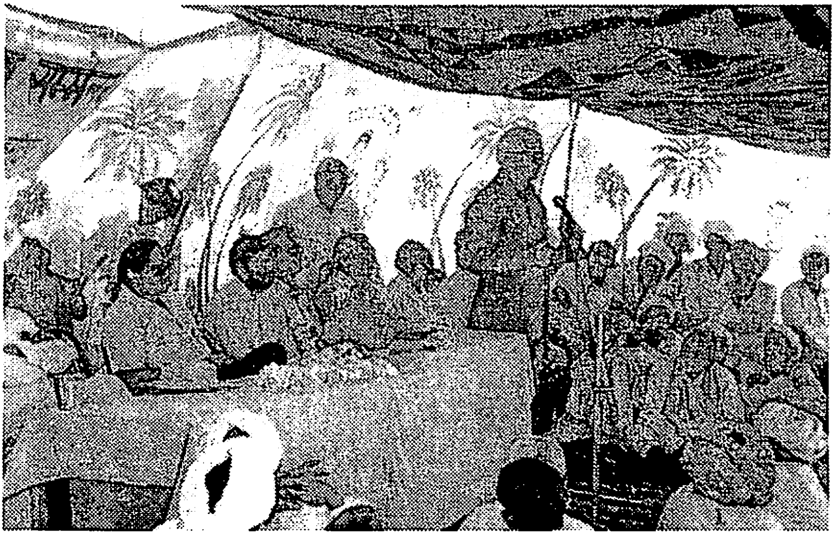

अरवरी क्षेत्र (हमीरपुर) में लोगों के साथ मीटिंग

अरवरी नदी बाल–संसद्

अरवरी संसद के वे सब पुराने सांसद, जिनके प्रयासों से अरवरी नदी ज़िन्दा हुई थी; अधिकांश स्वर्ग सिधार गये हैं। अब इसे सम्भालने की ज़िम्मेदारी अगली पीढ़ी के कन्धों पर आ गई। इसलिए नदी को ज़िन्दा रखने के लिए अगली पीढ़ी को तैयार करना ज़रूरी हो गया है। इसी को ध्यान में रखते हुए 'तरुण भारत संघ' ने अरवरी नदी जलागम क्षेत्र के सभी स्कूलों व कॉलेजों के विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति प्रेम का संस्कार पैदा करने का काम शुरू कर दिया है। इस हेतु हमने 20 अगस्त 2013 से प्रतापगढ़ के बाईसीवाला विद्यालय तथा आगर व भाँवता गाँवों में बाल–संसद् निर्माण का कार्य शुरू किया है। बाल– संसद् निर्माण के लिए विद्यालय के सभी विद्यार्थियों के साथ लम्बी चर्चा कर के उनकी इच्छा व सहमति से ही 'नदी बाल–संसद्' का गठन होता है। सभी विद्यार्थी अपनी–अपनी कक्षाओं से प्रतिनिधि चुन कर बाल–संसद् में भेजते हैं। चयनित सांसद 'अरवरी संसद्' पुस्तक को पढ़कर जानकारी इकट्ठी करते हैं; फिर रूपरेखा बना कर संसद् कार्य में जुट जाते हैं।

2 अक्टूबर 2013 को इन सभी विद्यालयों की बाल–संसद् तरुण आश्रम, भीकमपुरा में एकत्र हुई; जहाँ अलग–अलग नदियों की 'बाल–संसदों' ने मिल कर अपनी–अपनी नदियों की एक–एक 'क्षेत्रीय नदी बाल–संसद्' बनाई। अरवरी नदी क्षेत्र के 72 गाँवों ने अपनी जनसंख्या व भू–क्षेत्र के अनुपात में प्रतिनिधित्व भी सुनिश्चित किया। इस बाल–संसद् की निर्माण प्रकिया में कन्हैया लाल, छोटे लाल, सुरेश रैंकवार, रेनू सिसोदिया व मौलिक सिसोदिया की सक्रिय भूमिका है।

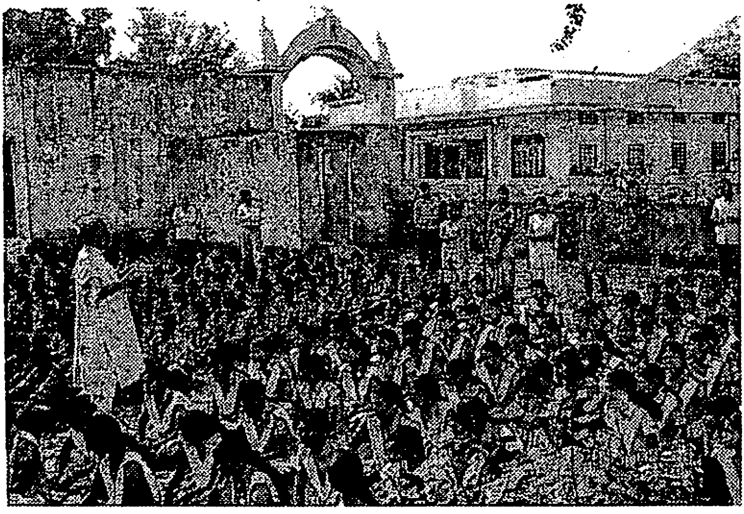

आगर गाँव के विद्यालय में बाल–संसद् निर्माण

अरवरी जल–संसद् – ग्रामीण समाज का अभिनव प्रयोग

के.जी. व्यास

अरवरी जल संसद् की कहानी एक छोटी–सी गुमनाम सदानीरा नदी के सूखने और उसके फिर से ज़िन्दा होने की कहानी है, इसलिये पहले इस कहानी से जुड़े घटनाक्रम को समझ लें, फिर पानी और समाज के रिश्तों को जनतांत्रिक स्वरूप देने वाली उन परिस्थितियों की बात करें, जो वांछित परिणाम देने या सूखी नदी को ज़िन्दा करने के लिये ज़िम्मेदार हैं। इस कहानी का विस्तृत विवरण तरुण भारत संघ द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'अरवरी संसद्' में दिया है। नीचे वर्णित विवरण उसी पुस्तक से लिया गया है। विवरण के अनुसार –

1. अठाहरवीं सदी में अरवरी नदी राजस्थान के अलवर ज़िले में प्रतापगढ़ नाले के रूप में पहचानी जाती थी। उस समय इसके कैचमेंट में घने जंगल थे। लोग पशुपालन करते थे और पानी की माँग बहुत कम थी।
2. समय बदला, परिवार बढ़े और बढ़ती खेती ने जंगल की ज़मीन को निगलना शुरू किया। इस बदलाव ने पानी की खपत को बढ़ाया। बढ़ती खपत ने ज़मीन के नीचे के पानी को लक्ष्मण–रेखा पार करने के लिये मज़बूर किया।
3. अरवरी नदी के सूखने की कहानी झिरी गाँव से शुरू होती है। इस गाँव में सन् 1960 के आसपास संगमरमर की खदानों से संगमरमर निकालने (खुदाई) का काम शुरू हुआ। खदानों के शुरू होने के कारण जंगल भी कटे। संगमरमर की खुदाई जारी रखने के लिये खदानों में जमा पानी को लगातार निकाला गया। इस प्रक्रिया ने पानी की कमी को आगे बढ़ाया। अरवरी नदी सन् 1960 के बाद के सालों में सूख गई। झिरी गाँव में पानी का संकट गहराया और धीरे–धीरे संकट आसपास के गाँवों में भी फैल गया।

4. जल संकट के कारण, प्यासे पशुओं को आवारा छोड़ने की परिस्थितियाँ बनने लगीं और रोज़ी रोटी के लिये नौजवान लोग जयपुर, सूरत, अहमदाबाद व दिल्ली की ओर पलायन करने लगे। बचे-खुचे परेशान लोगों ने विधान-सभा के सामने धरना दिया और मुख्यमंत्री तक गुहार लगाई। समस्या का निदान नहीं मिलने के कारण उनकी आस टूटी और निराशा हाथ आई।

5. इसी कठिन समय में स्वयं सेवी संस्था (तरुण भारत संघ) ने इस इलाक़े को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। गाँव के बड़े बूढ़ों ने उनसे पानी का काम करने को कहा। जोहड़ बनाने का काम शुरू हुआ और फिर एक के बाद एक जोहड़ बनाते गये। ये सब जोहड़ छोटे-छोटे थे और पहाड़ियों के नीचे की ज़मीन पर बनाये गये थे। पहली ही बरसात में उनमें पानी जमा हो गया। यद्यपि अरवरी नदी सूखी रही, पर कुओं में पानी लौटने लगा और लौटते पानी ने लोगों की आस भी लौटाई। सफलता ने लोगों को रास्ता दिखाया और उन्हें एकजुट किया।

6. सन् 1990 में अरवरी नदी में पहली बार, अक्टूबर माह तक पानी बहता दिखा। इस घटना से लोगों का भरोसा मज़बूत हुआ और उनके हौसलों को नई ताक़त मिली। काम और आगे बढ़ा तथा सन् 1995 के आते आते पूरी अरवरी नदी ज़िन्दा हो गई। तब से अब तक वह नदी सदानीरा है।

7. लोगों के मन में सवाल कौंधने लगे - अरवरी नदी को आगे भी सदानीरा कैसे बनाये रखा जावे ? यदि सही इन्तज़ाम नहीं किया तो क्या नदी फिर सूख जायेगी ? इसलिये, गाँव वालों ने अरवरी नदी के पानी को साफ़-सुथरा बनाये रखने तथा नदी के जीव जन्तुओं को बचाने और कैचमेंट के जंगल को सुरक्षित रखने के बारे में खूब सोच-विचार किया तथा ज़रूरी क़दम उठाये।

8. सन् 1996 में राजस्थान सरकार के मछली पालन विभाग ने अरवरी नदी में स्वतः पनप रही मछलियों को मारने का ठेका दे दिया। लोग आन्दोलित

हो उठे और उन्होंने सरकार और प्रशासन के सामने अपना विरोध दर्ज कराया।

9. नवम्बर 1996 में 'जलचर बचाओ आन्दोलन' हुआ। सरकारी ठेकेदार ने फरवरी एवं जून 1997 में अरवरी नदी के पानी में ज़हर डालकर मछलियों की सामूहिक हत्या की। इस घटना ने उद्वेलित लोगों को संगठित किया। उन्होंने पुलिस में रपट लिखाई, पर अपराधियों को छुट्टा घूमते देख गाँव के लोगों ने अपनी निगरानी व्यवस्था बनाई। दोषियों को पकड़ा तथा उन्हें दंडित किया।

उपर्युक्त हालातों ने लोगों को सोचने पर मज़बूर किया कि क्या गाँव जिस प्रकृति के साथ ज़िन्दा रहता है, जिसे अपनी मेहनत से संरक्षित और ज़िन्दा रखता है; जिसके साथ उसका पीढ़ी दर पीढ़ी का रिश्ता है; उस पर स्थानीय समाज का कोई अधिकार नहीं है ? इस मुद्दे पर देश भर के विद्वानों और पढ़े लिखे लोगों की राय जानने के लिये अरवरी नदी के किनारे बसे हमीरपुर गाँव में 19 दिसम्बर, 1998 को 'जन सुनवाई' कराने का फ़ैसला हुआ। इस सुनवाई में 'विश्व जल आयोग' के तत्कालीन आयुक्त श्री अनिल अग्रवाल, राजस्थान के पूर्व मुख्य सचिव एम. एल. मेहता, हिमाचल के पूर्व मुख्य न्यायाधीश गुलाब सी. गुप्ता, राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति टी. के. उन्नीथान, वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के तत्कालीन सचिव एस. रिज़वी जैसे अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। तरुण भारत संघ के अरुण तिवारी कहते हैं कि इस जन-सुनवाई में मुद्दई, गवाह, वकील, जज, विचारक, नियंता सब मौजूद थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जस्टिस गुलाब सी. गुप्ता ने की। गाँव वालों ने बाहर से आये लोगों को ध्यान से सुना और अपनी बेबाक़ राय ज़ाहिर की।

अनिल अग्रवाल ने जन-सुनवाई के दौरान कहा कि "सरकार चाहे नदी, प्रकृति और समाज के हित में क़ानून बनाए या न बनाए; अरवरी नदी और उसके किनारे के 70 गाँवों का समाज यदि जीवंत और टिकाऊ बना रहना चाहता है, तो वह पानी-प्रकृति के उपयोग और नित्य जीवन में संयम के अपने क़ानून

बनाये और ख़ुद ही उनकी पालना भी करे। नदी और उसका पर्यावरण हमारी जीवन-रेखा है। हमें इन्हें बचाये रखना है। इन्हें बचाने के लिये नेताओं वाली संसद् की ओर ताकना छोड़कर अरवरी तट के 70 गाँव मिलकर अपनी जल संसद् का गठन करें। हर गाँव से आबादी के अनुसार सांसद चुनें। यह चुनाव सर्वसम्मति से हो। स्थानीय ग्राम-सभाएँ तथा अरवरी संसद् मिलकर आम सहमति से इसके लिये क़ानून-दस्तूर बनायें। उसी के अनुसार अरवरी का जल प्रबन्धन व संवर्धन हो। 'जल संसद्' के निर्णय सर्वसम्मत व सर्वमान्य हों। ध्यान रहे कि संसदीय व्यवस्था, इन निर्णयों की पालना सुनिश्चित करने की ही व्यवस्था है। ऐसे में समाज तो अरवरी संसद् के क़ानूनों व दस्तूरों की पालना करेगा ही, एक दिन सरकार को भी इनकी पालना करनी पड़ेगी।'' बैठक में मौजूद बहुत सारे लोगों ने भी अपनी-अपनी बात कहीं।

कार्यक्रम के अध्यक्ष जस्टिस गुलाब सी. गुप्ता ने 'जन सुनवाई' के दौरान अपने फ़ैसले में कहा कि -

''जहाँ तक पानी पर अधिकार की बात है, अधिकार माँगना गाँव वालों का हक़ तो हो सकता है पर ऐसा क़ानून नहीं है। क़ानूनी हिसाब से गाँव वालों की माँग नाजायज़ है। इस तरह तो कोई भी व्यक्ति या संस्था ज़मीन और पानी का संरक्षण करके हक़ माँग सकती हैं; लेकिन वर्तमान क़ानूनों के तहत उन्हें इसका हक़ नहीं दिया जा सकता''।

तरुण भारत संघ के अरुण तिवारी कहते हैं-''भारतीय क़ानून की किताब इसे नाजायज़ मानती है, लेकिन क्या नीति और लोकतंत्र का वह आधार भी इसे ग़लत मानता है, जिस पर भारतीय गणतंत्र की स्थापना हुई है। इसलिये जन सुनवाई के दौरान राय बनी कि .... क़ानून और सरकार चाहे कुछ भी कहे, पर नीति यही कहती है कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। अतः पहला हक़ उसी का है। पहले वही उपभोग करे, उसी का मालिकाना हक़ हो। सरकार और क़ानून को चाहिये कि वह भी इसी नीति का अनुसरण करे। इसे प्राथमिकता दे। क़ानून को इंसान बनाता है न कि इंसान को क़ानून। अतः ऐसे

ख़िलाफ़ क़ानून जो समाज हितैषी नहीं हों, उन्हें बदल डालें। आख़िर हम सरकारों को भी तो बदलते ही रहते हैं न।"

अरुण तिवारी द्वारा अरवरी संसद् पर सम्पादित पुस्तक 'अरवरी संसद्' के पेज 23 पर लिखा है कि गाँव, समाज, अतिथि और जन–सुनवाई के निर्णायक जस्टिस गुलाब सी. गुप्ता आदि सभी ने मिलकर औपचारिक या अनौपचारिक तौर पर अरवरी नदी संसद् के गठन पर अपनी मोहर लगा दी। यह निर्णय अरवरी नदी के गाँव वालों के लिये रामबाण बन गया और उनका बचाखुचा सन्देह भी मिट गया। उन्हें पता चल गया कि वे सही हैं। क्योंकि इतने नामी गिरामी लोगों की मौजूदगी में आम सहमति से संसद् बनाने का फ़ैसला हुआ था। गाँव वालों के पास अहिंसा और संयम की शक्ति पहले से ही थी; अब नया उत्साह था .... नया रास्ता ! नया सपना !!

26 जनवरी 1999, मंगलवार को सबेरे 11 बजे प्रसिद्ध गांधीवादी सर्वोदयी नेता सिद्धराज ढड्ढा, जिन्होंने सन 1977 में लोकसभा की अध्यक्षता ठुकराई थी, की अध्यक्षता में हमीरपुर गाँव में संकल्प ग्रहण समारोह आयोजित हुआ और 70 गाँवों की 'अरवरी संसद्' अस्तित्व में आई। सब लोग समझ रहे थे और अनुभव भी कर रहे थे कि अरवरी संसद्, हक़ीक़त में एक ज़िन्दा नदी की जीवन्त संसद् है। इसलिये यदि नदी है तो संसद् है, यदि नदी नहीं, तो संसद् भी नहीं। उन्होंने अपनी संसद् के निम्नानुसार उद्‌देश्य तय किये –

- प्राकृतिक संसाधनों का संवर्धन करना
- समाज की सहजता को तोड़े बिना अन्याय का प्रतिकार करना
- समाज में स्वाभिमान, अनुशासन, निर्भयता, रचनात्मकता तथा दायित्वपूर्ण व्यवहार के संस्कारों को मज़बूत करना
- स्वावलम्बी समाज की रचना के लिये आवश्यक विचार–बिन्दुओं को लोगों के बीच ले जाना
- निर्णय प्रक्रिया में समाज के अन्तिम व्यक्ति की भागीदारी सुनिश्चित करना

ग्राम सभा की दायित्वपूर्ति में संसद् सहयोगी की भूमिका अदा करेगी, लेकिन जहाँ ग्राम-सभा तमाम प्रयासों के बावजूद निष्क्रिय ही बनी रहेगी वहाँ संसद् स्वयं पहल करेगी।

अरवरी संसद् के दायित्व निम्नानुसार हैं –

- संसद् में अपनी ग्राम-सभा का नियमित तथा सक्रिय प्रतिनिधित्व करना
- ग्राम-सभा तथा संसद् .... दोनों के कार्यो, निर्णयों तथा प्रगति से एक दूसरे को अवगत कराना तथा उनका लागू होना सुनिश्चित करना
- ग्राम सभा के कार्यों एवं समस्याओं के समाधान में दूसरी ग्राम-सभाओं से सहयोग लेना एवं सहयोग देना।

अरवरी नदी का सांसद कौन होगा –

- गाँव की ग्राम-सभा द्वारा संसद् में प्रतिनिधित्व के लिये चुना गया व्यक्ति सांसद होगा। ध्यान रहे कि उल्लेखित ग्राम-सभा .... सरकारी चुनाव वाली ग्राम पंचायत की ग्राम-सभा से पूरी तरह भिन्न संगठन है। यह ग्राम-सभा प्रकृति और समाज के संरक्षण एवं संवर्धन की दृष्टि से बनाई गई एक साझी व्यवस्था है। इसे पंचायत से नहीं जोड़ा जा सकता।
- अरवरी सांसद का चुनाव सर्वसम्मति से हो, इसे प्राथमिकता दें। अपरिहार्य स्थिति में भी चयनित प्रत्याशी को ग्राम-सभा के कम से कम 50 प्रतिशत सदस्यों का समर्थन अवश्य प्राप्त होना चाहिये।
- सांसद की निष्क्रियता अथवा अन्य कारणों से असन्तुष्ट होने पर, ग्राम-सभा चाहे तो उसे दायित्वमुक्त कर सकती है। उसकी जगह ग्राम-सभा जो नया सांसद चुनकर भेजेगी, संसद् को वह स्वीकार्य होगा; लेकिन यदि संसद् ग्राम-सभा को पुनर्विचार के लिये कहेगी, तो ग्राम सभा को पुनर्विचार करना होगा।

ब्रिटेन के प्रिंस चार्ल्स अरवरी का जल–प्रबन्धन देखने आए

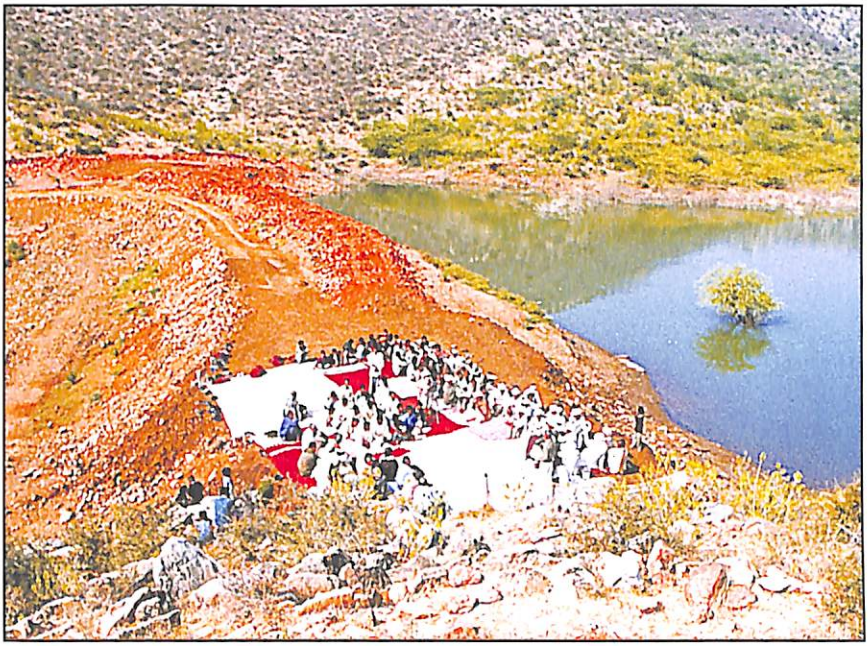

पारावाला बाँध (साँवतसर)

अरवरी नदी जलागम क्षेत्र में तरुण भारत संघ द्वारा जन–सहभागिता से निर्मित जल–संरक्षण–संरचनाएँ

(वर्ष 1985 से मार्च 2014 तक)

तहसील–थानागाजी, जिला–अलवर (राजस्थान)

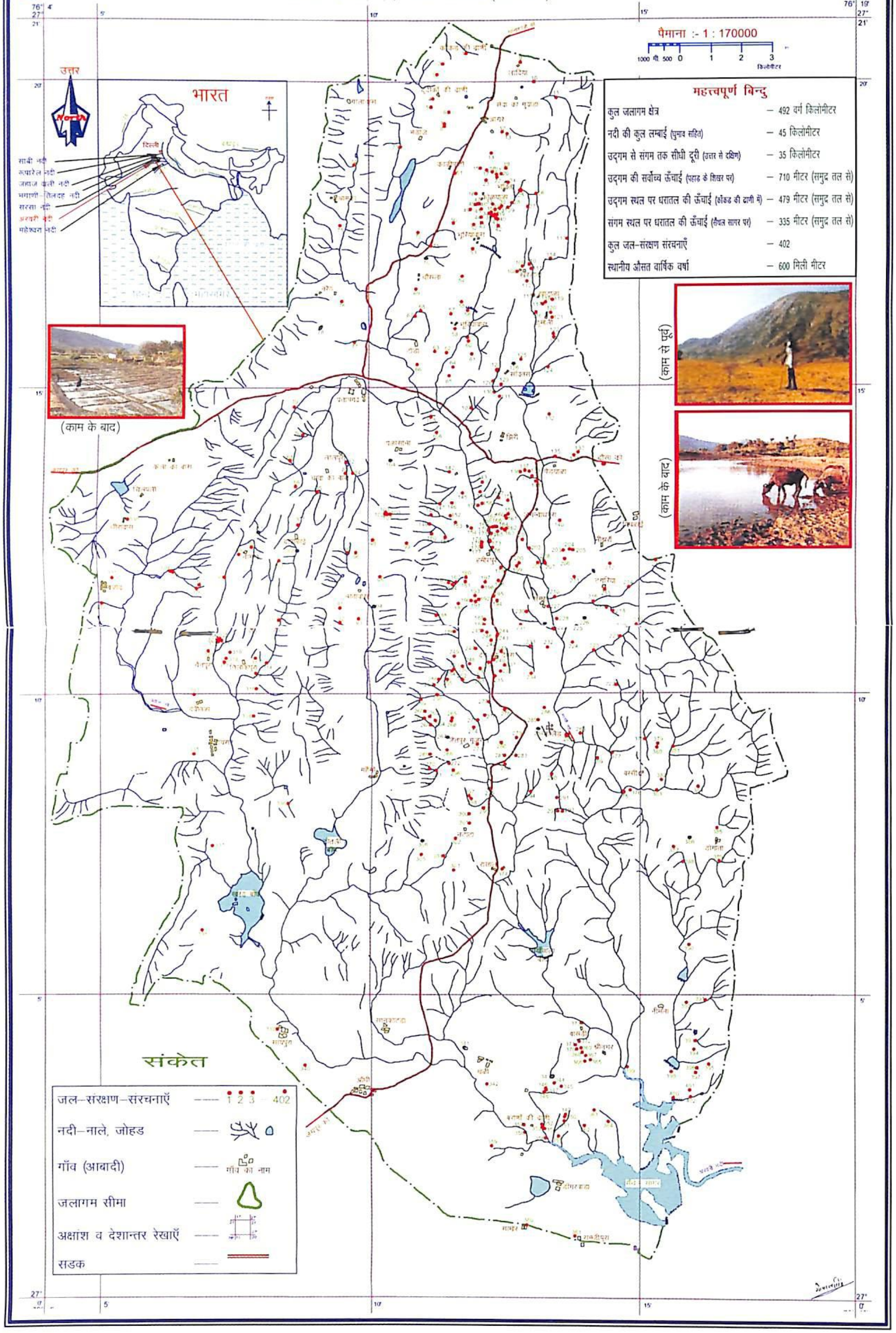

भाँवता के प्रारम्भिक सक्रिय ग्रामवासी

महिला घाट के पास का कुआँ (कोळ्याळा–भाँवता)

1999 के गणतन्त्र दिवस को अस्तित्व में आई अरवरी संसद् ने तब से लेकर आज तक पीछे मुड़ कर नहीं देखा। उसकी नियमित बैठकें होती हैं, फ़ैसले होते हैं और उनका क्रियान्वयन होता है।

विभिन्न विभागों का सरकारी अमला प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और संवर्धन के कामों पर अनेक सालों से काम कर रहा है। तकनीकी रूप से उपलब्ध सक्षम सरकारी अमले और भारी भरकम बजट के बाद भी नदी नालों का सूखना लगातार बढ़ रहा है। इसलिये अनेक लोगों को लगता है कि नदी को ज़िन्दा करना और उसे निरन्तर ज़िन्दा बनाये रखना बहुत ही कठिन काम है। ऐसे में यह देखना और समझना दिलचस्प होगा कि अरवरी नदी को ज़िन्दा करने वाली गाँव वालों की यह संसद् किस तरह के कामों को महत्त्व देती है और कौन से विषय उसकी प्राथमिकता पर हैं। पहले दिन से ही लोगों के एजेण्डे पर निम्न विषय हैं–

1. लोगों ने अरवरी नदी से सिंचाई करने के नियम बनाये। इन नियमों को बनाते समय स्थानीय परिस्थितियों एवं नदी घाटी के भू-जल विज्ञान को भलीभाँति समझा गया। इसी समझ के आधार पर लोगों को लगा कि नदी के चट्टानी क्षेत्र में स्थित होने के कारण, उसके एक्वीफर उथले तथा भू-जल पुनर्भरण क्षेत्र छोटा है; इसलिये थोड़ा-सा पुनर्भरण होते ही उसका जल-भण्डार भर कर ऊपर बहने लगता है। इस हक़ीक़त का अर्थ है नदी जितने जल्दी बहना शुरू होती है उतने ही जल्दी सूखती भी है। इसलिये तय हुआ कि होली के बाद नदी से सीधा पानी उठा कर सिंचाई नहीं की जायेगी। होली तक सरसों और चने की खेती करने वाले किसानों को नदी से पानी उठाने की अनुमति होगी। पशुओं के पीने के पानी और नये पौधों की सिंचाई के लिये कोई बन्दिश नहीं होगी।
2. लोगों ने कुओं से सिंचाई के नियम भी बनाये। इन नियमों को बनाते समय उन्होंने स्थानीय एक्वीफर की स्थिति और उसकी क्षमता को अनुभव की रोशनी में समझा। उन्हें लगा कि चूँकि यह पूरा इलाक़ा भू-जल की

छोटी–छोटी धाराओं पर टिका है; इसलिये यहाँ ज़्यादा गहरे कुएँ या नलकूप बनाना ठीक नहीं है। अरवरी नदी के साल भर बहने की प्रक्रिया का विश्लेषण आर. एन. अठावले, पूर्व वैज्ञानिक राष्ट्रीय भू–भौतिकी अनुसन्धान संस्थान, हैद्राबाद ने किया है। अरवरी संसद् ने इसी विश्लेषण के आधार पर आवश्यक क़ानून बनाये और तय किया कि नदी के दो से तीन प्रतिशत पानी का ही उपयोग किया जावे। उन्होंने पानी की कम खपत वाली फ़सलों को पैदा करने पर ज़ोर दिया। रासायनिक खाद और ज़हरीली दवाओं के कम से कम उपयोग का फ़ैसला लिया। गन्ना, मिर्च और चावल जैसी अधिक पानी वाली फ़सलें नहीं लेने और न ही लेने देने का इन्तज़ाम किया। उपर्युक्त फ़सलों को ज़बरन लेने वाले लोगों को जोहड़, कुएँ या नदी से पानी नहीं लेने देने का नियम बनाया। पानी की बरबादी रोकी और गर्मी की फ़सलें नहीं लीं। उन्होंने पशुओं के लिए अधिक से अधिक चारा उगाया और चारे की सिंचाई के लिये पानी का उपयोग सुनिश्चित कराया।

3. संसद् ने पानी की बिक्री पर रोक लगाई। संसद् ने तय किया कि नदी पर इंजन लगाकर कोई भी व्यक्ति पानी की बिक्री नहीं करेगा। पानी का उपयोग व्यावसायिक काम में नहीं होगा। अधिक गहरी बोरिंग करने और उसके पानी को बाहर ले जाने पर रोक रहेगी। पानी की बिक्री करने वाले उद्योग नहीं लगने देंगे। ग़रीब आदमी को पानी की पूर्ति निःशुल्क की जावेगी। ग़रीब को केवल बिजली या डीजल और इंजन की घिसाई का दाम ही देना होगा। पानी की क़ीमत लेना दंडनीय अपराध होगा।

4. संसद् ने उद्योगपतियों और भूमि उपयोग बदलने वाले बाहरी व्यक्तियों को ज़मीन बेचने पर भी रोक लगाई। क्योंकि संसद् को लगता है कि ऐसा करने से बदहाली, प्रदूषण, बीमारी और बिखराव होगा। इसलिये ज़मीन की बिक्री आपस में ही की जावेगी और ज़मीन की बिक्री का रुझान रोकने का भरसक प्रयास किया जावेगा।

5. अरवरी संसद् के निर्णय के अनुसार अधिक जल-दोहन करने वालों का पता लगाया जायेगा और उन्हें नियंत्रित किया जायेगा। लोगों ने फ़ैसला किया कि वे अपने इलाक़े में पानी का अधिक उपयोग करने वाले कल-कारखाने नहीं लगने देंगे। अतिदोहन को शुरू होने के पहले ही रोकेंगे और अतिदोहन पर हर समय निगाह रखेंगे।

6. अरवरी संसद् के निर्णय के अनुसार जो व्यक्ति धरती को पानी देगा, वही धरती के नीचे के पानी का उपयोग कर सकेगा। राजस्थान की गर्म जलवायु में पानी का बहुत अधिक वाष्पीकरण होता है; इसलिये पानी को वाष्पीकरण से बचाने के लिये उसे बरसात के दिनों में ज़मीन के नीचे उतारना होगा। स्थानीय एक्यूफर की क्षमता और व्यक्ति की पानी की ज़रूरत में तालमेल रखने वाले सिद्धान्तों का पालन किया जायेगा। इसके अलावा जो जल-पुनर्भरण का काम करेगा उसे पुनर्भरण नहीं करने वाले की तुलना में अधिक पानी लेने का अधिकार होगा। इस अधिकार की सीमा पुनर्भरण का 15 प्रतिशत होगा। गाँव के लोग और संसद् मिलकर एक्वीफर की क्षमता का अनुमान लगाने का काम करेंगे और क्षमता के अनुसार पुनर्भरण के काम को अंजाम देंगे।

7. अरवरी संसद् ने नदी घाटी के जीव जन्तुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये अरवरी नदी क्षेत्र को 'शिकार वर्जित क्षेत्र' घोषित किया है। संसद् ने हर गाँव वाले को जागरूक और प्रशिक्षित करने, शिकार प्रभावित इलाके की पहचान करने और 'जंगल, जीव बचाओ अभियान' चलाने की ज़िम्मेदारी सौंपी है।

8. अरवरी संसद् के सांसदों ने अपने क्षेत्र में बाज़ार-मुक्त फ़सल उत्पादन के नियम तथा स्थानीय ज़रूरत पूरा करने वाली व्यवस्था पर विचार कर फ़ैसला लिया कि क्यों न हम अपनी आवश्यकता की चीज़ें ख़ुद पैदा करें, अपना बाज़ार ख़ुद विकसित करें और आपस में लेनदेन करें। ऐसा करने से गाँव का पैसा गाँव में रहेगा और ख़ुशहाली भी आयेगी। गाँव

वालों का मानना है कि आज किसान का सबसे ज़्यादा शोषण बाज़ार ही कर रहा है। इस शोषण के कारण किसान को अपनी मेहनत का सौवाँ हिस्सा भी नहीं मिल पाता है। किसान की सारी आमदनी बीज, दवाई, खाद, फ़सल बुआई तथा कटाई में ही ख़र्च हो जाती है। वे मानते हैं कि नये बीज शुरू में तो अधिक पैदावार देते दिखते हैं पर बाद में ज़मीन की उर्वरा शक्ति को कम कर देते हैं।

9. अरवरी संसद् ने नदी क्षेत्र में हरियाली और पेड़ बचाने का फ़ैसला किया है। इस काम को पूरा करने के लिये उसने क़ायदे क़ानून बनाये हैं। उन्होंने गाँवों की साझा ज़मीनों और पहाड़ों को हरा-भरा रखने के लिये बाहरी मवेशियों की चराई पर बन्दिश लगाई है। उन्होंने हरे वृक्ष काटने पर पाबन्दी, दिवाली बाद पहाड़ों की घास की कटाई करने, गाँव गाँव में गोचर विकास करने, नंगे पहाड़ों पर बीज छिड़काव करने, लकड़ी-चोरों पर नियंत्रण करने, स्थानीय धराड़ी परम्परा को फिर से बहाल करने, क्षेत्र में ऊँट, बकरी और भेड़ों की संख्या कम करने तथा नई खदानों और प्रदूषणकारी उद्योगों को रोकने का फ़ैसला लिया है। उनका मानना है कि इन क़दमों से उनके इलाक़े की हरियाली बढ़ेगी और नदी बारहमासी बहती रहेगी।

10. अरवरी नदी के सांसदों के अनुसार नदी क्षेत्र में चल रहे खनन के कारण गाँव के कुछ लोगों को रोज़गार मिलता है, पर बाद में ज़मीन और पानी बरबाद हो जाता है। अतः दोनों को बचाने की जुगत करनी चाहिये। इसके लिये उनकी संसद् ने नियम बनाया कि क्षेत्र में खदानें बन्द कराने का प्रयास किया जाये, खदान के मालिकों से बातचीत कर समस्या का हल खोजा जाये और खनन के कारण बरबाद इलाक़े को दुरुस्त किया जाये।

11. अरवरी नदी के जलग्रहण क्षेत्र में प्राकृतिक संरक्षण की बहुत अच्छी एवं जीवन्त परम्पराएँ यथा धराड़ी, थाँई, देवबनी, देवअरण्य, गोचर तथा

मछली और चींटियों की सुरक्षा आदि हैं। अरवरी संसद् ने इन परम्पराओं के अनुसार प्रकृति संरक्षण परम्पराओं का पता लगाकर प्रकृति के हित में उन्हे पुनः जीवित करने का फ़ैसला लिया।

12. सांसदों ने जल-स्रोतों के उचित प्रबन्धन में संसद् और ग्राम सभाओं की भूमिका तथा उनके उत्तरदायित्वों के निर्धारण के लिये स्थायी व्यवस्था को क़ायम किया; ताकि देखभाल की कमी से गाँवों की साझा प्राकृतिक सम्पदा बरबाद नहीं हो। इसके लिये उन्होंने पूरी जागरूकता और समझदारी से विकेन्द्रित, टिकाऊ और स्वावलम्बी व्यवस्था क़ायम की। इसके लिये उपर्युक्त नियम और क़ायदे बनाये हैं और उन्हें पूरी तरह लागू किया है।

सत्याग्रह मीमांसा (अंक 169, जनवरी 2000) में छपे लेख में प्रख्यात गांधीवादी नेता स्व. सिद्धराज ढड्ढा ने अरवरी जल-संसद् पर अपनी प्रतिक्रिया में लिखा था कि "अरवरी नदी की स्थापना और उसके कार्य का महत्त्व केवल अरवरी नदी के पानी के उपयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आधुनिक जनतंत्र के इतिहास का एक अभिनव प्रयोग है। सांसद चुनने के अलावा, जनतंत्र के संचालन में जनता की और कोई भूमिका नहीं रही है। इसके कारण, जनतंत्रीय व्यवस्था दिनों दिन कमज़ोर हो गई है। जनतंत्र की सफलता के लिये उसकी प्रक्रिया में लोगों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। जनशक्ति जितनी मजबूत होगी, जनतंत्र उतना मज़बूत होगा। आज की संसद् के निर्णयों तथा उनके बनाये हुये क़ानूनों की पालना का अन्तिम आधार पुलिस, फ़ौज, अदालतें और जेल हैं। 'अरवरी संसद्' के पास अपने निर्णयों की पालना के लिये ऐसे कोई आधार नहीं हैं .... न ही होना चाहिये। जन-संसदों का एकमात्र आधार लोगों की एकता, अपने वचन पालन की प्रतिबद्धता एवं परस्पर विश्वास है। यही जनतंत्र की वास्तविक शक्तियाँ हैं। अतः अरवरी संसद् का प्रयोग केवल अरवरी क्षेत्र के लिये ही नहीं, जनतंत्र के भविष्य के लिये भी महत्त्वपूर्ण है।"

दूसरी टिप्पणी केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री की है। इस टिप्पणी में केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री ने अपने 25 सितम्बर, 2006 को तरुण भारत संघ के राजेन्द्र सिंह को लिखे पत्र में उल्लेख किया था कि "अरवरी संसद् पर लिखी पुस्तक को पढ़कर गाँव-समाज के लोग जल को समझ कर सहेजने में जुटेंगे तथा पानी के प्रदूषण और लूट को रोकने के लिये अरवरी नदी क्षेत्र की जनता की तरह दूसरी नदी घाटियों में भी ऐसा काम शुरू होगा। हमारी सरकार भी इससे सीखेगी।"

अरवरी जल-संसद् की कहानी, राजस्थान के एक पिछड़े इलाक़े में कम पढ़े लिखे संगठित लोगों द्वारा अपने प्रयासों एवं संकल्पों की ताक़त से लिखी कहानी है। इस कहानी में देश में लागू जलनीति और समाज की अपेक्षाओं का यदि टकराव दिखता है तो यह कहानी काफ़ी हद तक समाज और पानी के योग-क्षेम की जीवन्त कहानी भी है। यह कहानी प्रकृति के पुनर्वास, लाभप्रद खेती और आजीविका का बीमा और सरकारों तथा प्रबन्धकों के लिये लाईटहाउस भी है। तकनीकी और जनतांत्रिक संगठनों के लिये इसमें सीखने के लिये बहुत कुछ है।

लेखक का मानना है कि देश में पानी से जुड़े बहुत से विषयों पर भारी मतभेद हैं और अनेक मुद्दों पर मुश्किलें भी हैं, बावजूद इसके अरवरी नदी के किनारे बसे 70 गाँवों के लोगों ने अपने फ़ैसलों से बहुत-सी मुश्किलों को आसान किया है। इन लोगों की एकजुटता और इच्छाशक्ति, वास्तव में देश के लाखों लोगों की प्रेरणा का स्थायी स्रोत है; जो पानी से जुड़े, देश के अनेक क़ानूनों को मानवीय चेहरा प्रदान करने का सन्देश देती है।

के. जी. व्यास

पूर्व सलाहकार

राजीव गान्धी जल ग्रहण मिशन. म.प्र.

73, चाणक्यपुरी, चूना भट्टी, भोपाल

09425693922

Kgvyas_jbp@rediffmail.com

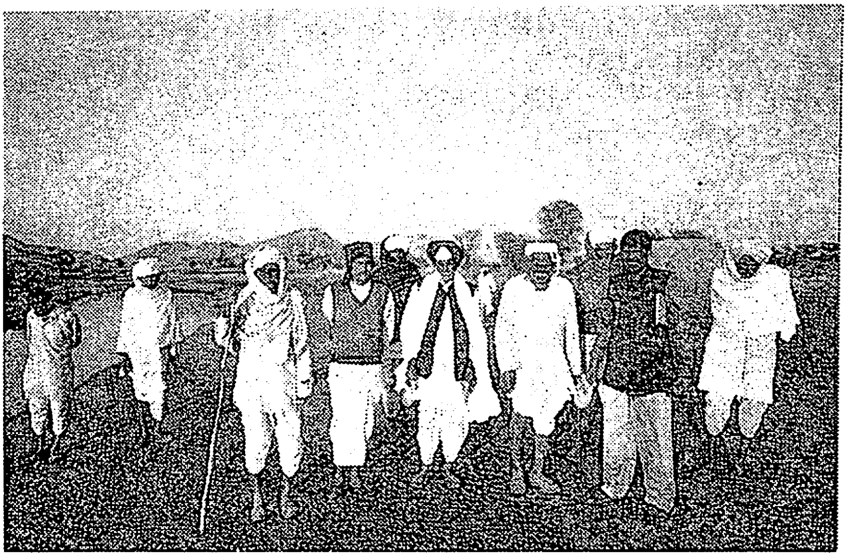

अरवरी नदी के किनारे हमीरपुर ग्रामवासी

अरवरी नदी - हमीरपुर (पुल के पास)

भाँवता ग्रामवासियों को सम्बोधित करते हुए कर्नाटक के श्री एच.के. पाटिल

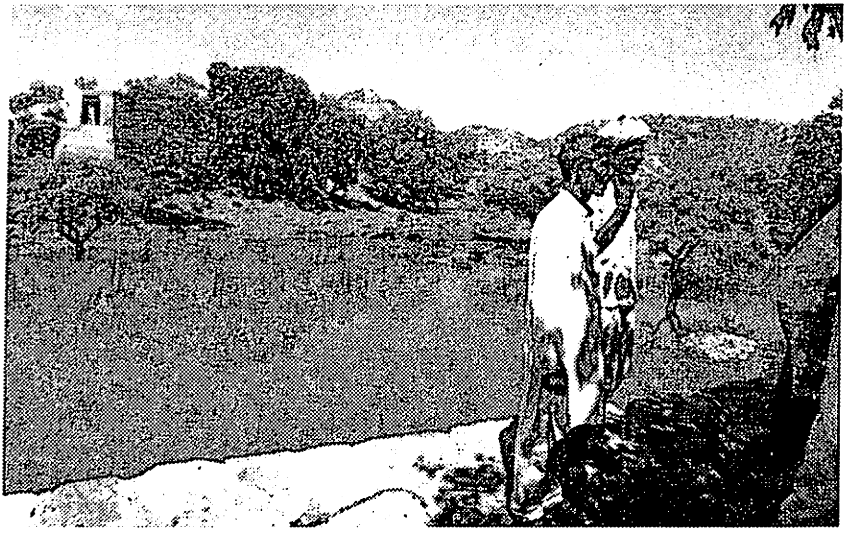

महिला घाट

बनवर (राजस्थान)   [illegible] Date: 2.12.96

1. क्रमांक 1008

अध्यक्ष

तरुण भारत संघ

द्वारा ग्राम किशोरी [illegible]

तह. थानागाजी

जिला अलवर (राज.)

विषय:- [illegible]

-x-

उपरोक्त विषय में [illegible] 30/11/96 को मौके की जांच की गई।

[illegible]

(i) नदी [illegible]

(ii) [illegible] 1952/1950 [illegible]

(iii) [illegible]

(iv) नदी [illegible]

(v) [illegible]

(vi) [illegible]

[illegible]

पश्चात [illegible]

[illegible]

तरुण भारत संघ

तरुण भारत संघ

TARUN BHARAT SANGH

भीकमपुरा-किशोरी वाया थानागाजी
301022 (अलवर) राजस्थान

Bheekampura-Kishori
Via-Thanagazi-301022
Alwar (Raj.) India

Ref. No. ___ Date ___

श्रीमान मत्स्य परियोजना अधिकारी
अलवर (राजस्थान)

संदर्भ - पत्रांक 1006 दिनांक 2/12/96

विषय - नदी कालोड़ में मत्स्य आखेट के क्रम में।

महोदय -

संदर्भ वर्णित पत्र मिला। पढ़कर ज्ञात हुआ कि आप हमीरपुर निरीक्षण के लिए गए थे, यह बात ग्राम वासियों से पूछने पर भी पता चली। लेकिन यह बात समझ में नहीं आयी कि आपने हमसे मिले बिना ही हमारे एतराज का पता कैसे लगाया? हमारी मामूली सी संस्था है, इसके एतराज का सरकार के सामने क्या अहमियत है? क्योंकि हम भी सरकार के नियमों से बंधे हैं और सरकार के अनुसार ही काम करना ही हमारी सीमाएं एवं मर्यादाएं हैं। इसके साथ निम्न तथ्य भी आपको बताना चाहता हूं।

(1) नदी कालोड़ सरकारी रिपोर्ट में अरवरी नदी के नाम से जानी जाती है।

(2) यह नदी गत अनेक समय से सूखी रहती थी। केवल वर्षा के दिनों में पानी बहता था।

[illegible] नदी के दोनों तरफ के कुंए सूख गए थे।

[illegible] हमीरपुर व मिरी गांव के पेयजल का संकट सबको ज्ञात है। राज्य व राष्ट्र के अखबारों में भी सूखे व पानी की कमी के समाचार प्रमुखता के साथ छपते रहे हैं।

[illegible] वर्षों से यह नदी सूखा मैं स्वयं देख रहा हूं।

[illegible] जल ग्रहण क्षेत्र में लोगों के सहयोग से [illegible] जोहड़/बांध/एनीकट पिछले ग्यारह वर्षों [illegible] है।

(6) मैंने पिछले ग्यारह वर्षों में इस क्षेत्र में कभी किसी अधिकारी को मत्स्य आखेट करते नहीं देखा है, क्योंकि यह नदी सूखी रहती थी।

(7) इस क्षेत्र के लोग जल, जंगल जमीन के संरक्षण का कार्य करने हेतु जागरूक हैं। ये मिलकर अपने जल, जंगल, जमीन को बचाते हैं। यह राष्ट्रीय हित में है।

(8) इस अरवरी नदी के जल जीवों को बचाने का ग्रामवासियों का संकल्प है। यह जैविक विविधता के लिए महान काम है। भारतसरकार व राजस्थान सरकार जैविक विविधता संरक्षण हेतु करोड़ो रुपए खर्च कर रही है। यह कार्य जो कि इसी क्षेत्र की जनता स्वयं करने लगे तो यह महान कार्य बिना खर्च किए ही हो जायगा जबकि आपको इस ठेके से कुल सत्तरह या अठारह हजार रुपए की ही आय होगी।

(9) लोगों के संरक्षण संस्कार व भावनाओं का आदर करना चाहिए इसी में राष्ट्रहित है। ऐसा करने से हमारे समाज सरकार को करोड़ो का लाभ होगा। क्योंकि जैविक विविधता के संरक्षण से प्रकृति का संतुलन बना रहता है। पर्यावरण संतुलन बने रहने से हमें प्राकृतिक प्रकोप का शिकार नहीं होना पड़ता। अतः इस क्षेत्र जैविक विविधता हेतु सुरक्षित करना जरूरी है।

(10) लोगों के अभिक्रम से इस क्षेत्र में होने वाले संरक्षण कार्यों में सरकार का सहयोग देर से ही मिलता है। क्योंकि इस तरह के कार्य सरकार को देर से ही समझ आते हैं। एवं जब समझ में आते हैं तो पछतावा होता है। ऐसा गोपालपुरा गाँव में जंगल बचाने की घटना में हुआ सरिस्का की खदानें बंद कराने में हुआ। देवरी में एनिकट बनाते समय में भी हुआ।

(11) अरवरी नदी में मछलियां पकड़ने का कार्य आज के सरकारी कानून में ठीक हो सकता है लेकिन प्रकृति के कानून में यह उचित नहीं है।

(12) अरवरी नदी के आस पास रहने वाले लोगों का संकल्प तरुण भारत संघ को सैद्धान्तिक रूप से मान्य है।

(13) तरुण भारत संघ कानून तोड़ने का, या कानून के विरुद्ध कार्य नहीं करता है और न ही कोई कानून विरुद्ध कार्य करेगा। लेकिन लोक हित व राष्ट्रहित में कोई कानून बदलवाने हेतु लोगों के साथ सहयोग अवश्य करेगा।

(14) आशा है आप ऊपर के तथ्यों को ध्यान में रखकर अरवरी नदी के लोगों की बात को संवेदना से समझेंगे और इस ठेके को रद्द करने पर विचार करेंगे। धन्यवाद।

आपका

राजेन्द्र सिंह

Report

on

Reconnaissance Survey of Rainwater Harvesting (RWH) Structures Constructed in Arvari and Maheshwara River Catchments by Tarun Bharat Sangh, Rajasthan

A Preliminary Report

By

S. P. Rai
Surjeet Singh
C. P. Kumar
&
V. C. Goyal

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
ROORKEE 247 667
2013-14

PREFACE

The rainwater harvesting and water conservation measures in water scarce regions are useful techniques for augmentation of groundwater recharge and base flow in rivers, particularly during the lean flow season. However, no guiding document exists on the revival of rivers through rainwater harvesting and water conservation measures in the catchment. In this context, a suggestion was given by a Member of the NIH Society to document hydrological impact of such water conservation techniques. Therefore, a field visit was undertaken by NIH scientists to Arvari and Maheshwara river catchments in Rajasthan for preliminary investigations on the impact of rainwater harvesting structures and revival of these rivers. The field visit was aimed to visit various water conservation sites in both the catchments and to collect available information, and to suggest a future course of action. During the field visit, some measurements of groundwater levels were taken and water samples of surface water bodies and groundwater were collected for isotopic and chemical measurements for preliminary analysis.

The report entitled *"Reconnaissance Survey of Rainwater Harvesting (RWH) Structures Constructed in Arvari and Maheshwara River Catchments by Tarun Bharat Sangh, Rajasthan"*. Report has been prepared by Dr. S. P. Rai, Dr. Surjeet Singh, Er. C. P. Kumar and Dr. V. C. Goyal. It provides preliminary information on the impact of water conservation and rainwater harvesting structures surveyed and recommendation for a future study.

[Raj Deva Singh]
Director
National Institute of Hydrology, Roorkee

Summary

In arid and semi-arid region, water scarcity is one of the main limiting factors for economic growth. This study highlights the noticeable prima facie visual field observations of RWH and impacts on groundwater recharge. A preliminary study of the major hydrochemical processes that control the variations of ions in the groundwater was also carried out. Groundwater and river, reservoir/ponds water were sampled from fifteen (15) locations in the Arvari and Maheshwara catchments for isotopic and chemical analysis. The measured ions (F, Na^+, K^+, Ca^{2+}, Mg^{2+}, Cl, NO_3^-, SO_4^{2-}, HCO_3^-) were generally low with wide variations. Two principal hydrochemical water types have been delineated. These are Ca-Mg-HCO_3 which constitutes about 73.4% and is dominated by alkaline earths metals and weak acids. The second water type Na-Mg-Ca-HCO_3 is the mixed water type where no particular cation dominates and HCO_3 is the main anion. The stable isotope reveals that the groundwater, river, reservoir/pond receive recharge from a common source of stable isotopic values of around -6.0‰ for $\delta^{18}O$ and -39.0‰ for δ^2H and the dam water undergoing significant evaporative enrichment of the isotopes. Tritium values in the study area are generally low and range from 1.24 to 5.31 TU; which indicates qualitative identification of modern recharge. Despite the small sample size of this work, isotope mass-balance calculations using $\delta^{18}O$ suggest a significant recharge through the anicuts to nearby groundwater for example at one site recharge ratio comes to about 50% in groundwater, hence the constructions of these dams and RWH should be encouraged to augment groundwater in the water scares regions of Rajasthan and other States of India. But before this, the foremost requirement is to properly document and disseminate such RWH practices and their positive impact on groundwater in a scientific manner to help the needy.

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

(तिथि क्रम से)

1. 1975 ई. में– तरुण भारत संघ की स्थापना (जयपुर में)
2. 1985 ई. में– तरुण भारत संघ का गाँवों में प्रवेश (भीकमपुरा–अलवर में)
3. 1986 ई. में– पहला जोहड़ (तालाब) बना (गोपालपुरा में)
4. फरवरी 1987 ई. में– सिंचाई विभाग द्वारा गोपालपुरा बाँध को तोड़ने का नोटिस
5. 30 जनवरी, 1987 ई. को– अरवरी नदी क्षेत्र में प्रवेश (ग्राम स्वावलम्बन पदयात्रा के दौरान)
6. 1988 ई. में– भाँवता गाँव में पहला काम (बाँडी जोहड़ी में)।
7. 1991 ई. – भाँवता में साँकड़ा बाँध का काम।
8. दिसम्बर, 1994 ई. में– अरवरी नदी पर हमीरपुर गाँव में 'ज़बर सागर' बाँध का निर्माण।
9. 1996 ई. में– अरवरी नदी साल भर बहना शुरू हुई।
10. 30 नवम्बर 1996 ई. को– मत्स्य विभाग ने लतीफ़ ख़ाँ को 18700 रुपये में अरवरी नदी की मछलियों का ठेका दिया।
11. 11 अप्रेल 1997 ई. को– लोगों के दबाव व संघर्ष से मछलियों का ठेका रद्द हुआ।
12. फरवरी 1998 में–लतीफ़ ख़ाँ ने अरवरी नदी में ज़हर घोला।
13. 19 दिसम्बर 1998 को–अरवरी नदी के किनारे पर जन–सुनवाई।
14. 6 अप्रेल, 1999 ई. को– केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री सोमपाल शास्त्री भाँवता–कोल्याला व हमीरपुर में आये।

15. 20नवम्बर, 1999 ई. को– केन्द्रीय जल संसाधन राज्यमंत्री श्रीमती विजोया चक्रवर्ती भाँवता–कोल्याला व हमीरपुर में आई।

16. 28 मार्च, 2000 ई. को– भारत के राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन् हमीरपुर में कोल्याला–भाँवता ग्राम–सभा को पुरस्कृत करने आये।

17. 16–17 अप्रेल, 2000 ई. को– आर. एस. एस. के सर संघ चालक श्री के. सी. सुदर्शन ने संस्था के कार्यो का अवलोकन किया।

18. 5 मई, 2000 ई. को–केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री बाबूलाल मरांडी आये।

19. 11 मई, 2000 ई. को– केन्द्रीय कृषि मंत्री सुन्दरलाल पटवा हमीरपुर में आये।

20. 18 अक्टूबर, 2000 ई. को– फोर्ड फाउण्डेशन के ट्रस्टी मिस्टर रिचर्ड व उनकी पत्नी व फाउण्डेशन के भारतीय प्रतिनिधि आये। भाँवता–कोल्याला ग्रामसभा को एक लाख रुपये का पुरस्कार दिया।

21. 3 मार्च, 2001 ई. को– अरवरी संसद् भवन (हमीरपुर) को तोड़ा।

22. 2 नवम्बर, 2003 ई. को– प्रिंस चार्ल्स आये (भाँवता में) ।

23. 6 फरवरी, 2004 ई. को– महाराष्ट्र के श्रममंत्री श्री हेमन्तराव देशमुख भाँवता–कोल्याला आये।

24. 8 अप्रेल, 2004 ई. को– भाँवता–कोल्याला व हमीरपुर में राजस्थान के सिंचाई सचिव श्री डी. सी. सावंत आये।

25. 27 नवम्बर, 2006 ई. को– 'सीडा' के काउन्सलर (हरैउ श्री कार्ल गुस्ताफ सविन्सन व श्री रमेश मुकल्ला साँवतसर व कालेड़ के काम देखने आये।

26. 3 दिसम्बर, 2006 ई.– श्रीमती दमनसिंह ने अरवरी क्षेत्र के भाँवता, डूमोली व खरड़ाटा गाँवों में जल–संरक्षण के काम देखे।

गाँव भाँवता का वर्ष 1987 व 2013 का तुलनात्मक अध्ययन

	1987 में	2013 में	वृद्धि	वृद्धि दर
कुल जनसंख्या	235	495	260	111%
पुरुष	124	262	138	111%
स्त्री	111	233	122	110%
साक्षरता (पुरुष)	32	177	145	453%
साक्षरता (स्त्री)	6	98	92	1533%
गोधन (नर व मादा)	68	36	-32	-47%
भैंस (नर व मादा)	57	149	92	161%
बकरी (नर व मादा)	494	858	364	74%
दूध (लीटर में)	178	574	396	222%
कृषि भूमि (बीघा में)	192.5	231.25	38.75	20%
गेहूँ (मण में)	378	1788	1410	373%
जौ (मण में)	564	442	-122	-22%
सरसों (मण में)	30	232	202	673%
चना (मण में)	50	225	175	350%
मक्का (मण में)	503	1083	580	115%
बाजरा (मण में)	0	0	0	0%
बैल (संख्या में)	38	4	-34	-89%
कुल वार्षिक आय (रुपये में)	2,22,000	63,70,000	61,48,000	2769%

गाँव कोळ्याळा का वर्ष 1987 व 2013 का तुलनात्मक अध्ययन

	1987 में	2013 में	वृद्धि	वृद्धि दर
कुल जनसंख्या	185	328	143	77%
पुरुष	94	174	80	85%
स्त्री	91	154	63	69%
साक्षरता (पुरुष)	16	102	86	537%
साक्षरता (स्त्री)	0	20	20	-
गोधन (नर व मादा)	73	20	-53	-73%
भैंस (नर व मादा)	66	116	50	76%
बकरी (नर व मादा)	486	542	56	12%
दूध (लीटर में)	154	322	168	109%
कृषि भूमि (बीघा में)	139.5	132.75	-6.75	-5%
गेहूँ (मण में)	275	1402	1127	410%
जौ (मण में)	315	233	-82	-26%
सरसों (मण में)	20	115	95	475%
चना (मण में)	7	75	68	971%
मक्का (मण में)	431	619	188	44%
बाजरा (मण में)	0	15	15	-
बैल (संख्या में)	36	9	-27	-75%
कुल वार्षिक आय (रुपये में)	1,92,500	37,85,000	35,95,500	1866%

ग्राम–भाँवता, पोस्ट–आगर, तहसील–

(1987 व 2013 का

क्र. सं.	परिवार के मुखिया का नाम	जनसंख्या						साक्षरता				पशु–धन					
		कुल		पुरुष		स्त्री		पुरुष		स्त्री		गाय		भैंस		बकरी	
		वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013
		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
1	सोन्या s/o धन्ना	-	6	-	3	-	3	-	3	-	2	-	-	-	2	-	2
2	रुमकिशन बबू, मन्न s/o धन्ना	-	9	-	5	-	4	-	2	-	2	-	-	-	2	-	30
	1. धन्ना s/o गणेश	8	15	5	8	3	7	-	5	-	4	4	-	2	4	-	32
3	भीरा s/o मथरा	-	6	-	3	-	3	-	-	-	-	-	2	-	-	-	50
4	सेदू s/o मथरा	-	8	-	5	-	3	-	3	-	-	-	-	-	4	-	2
	2. भीरा s/o मथरा	6	14	3	8	3	6	-	3	-	-	5	2	2	4	-	52
5	छीतर s/o सूँसा	-	15	-	9	-	6	-	1	-	-	-	2	-	4	-	40
	3. छीतर s/o सूँसा	6	15	3	9	3	6	-	1	-	-	3	2	2	4	20	40
6	काना s/o श्रवण	-	14	-	5	-	9	-	2	-	3	-	2	-	2	-	10
7	बंशी s/o नारायण	-	5	-	2	-	3	-	1	-	1	-	1	-	-	-	12
	4. श्रवण s/o नारायण	8	19	4	7	4	12	-	3	-	4	2	3	-	2	10	22
8	सुखा s/o अर्जुन	-	4	-	2	-	2	-	1	-	-	-	-	-	-	-	5
	5. अर्जुन s/o नारायण	2	4	1	2	1	2	-	1	-	-	-	-	-	-	1	5
9	रामकरण s/o मूला	-	14	-	7	-	7	-	5	-	2	-	-	-	4	-	2
	6. रामकरण s/o मूला	5	14	2	7	3	7	1	5	-	2	4	-	3	4	20	2
10	नाथू s/o रामपाल	-	5	-	2	-	3	-	1	-	1		-	-	2	-	-
11	छोटया s/o रामपाल	-	6	-	3	-	3	-	2	-	1	-	-	-	3	-	10
12	सरदारा s/o रामपाल	-	6	-	3	-	3	-	2	-	2	-	-	-	2	-	-
13	जयराम s/o रामपाल	-	5	-	3	-	2	-	2	-	1	-	-	-	2	-	-
14	रमेश s/o रामपाल	-	4	-	1	-	3	-	1	-	1	-	-	-	2	-	-
	7. रामपाल s/o बीज्या	10	26	6	12	4	14	-	8	-	6	2	-	3	11	20	10
15	बाबू लाल, कैला s/o रामपाल	-	11	-	5	-	6	-	3	-	-	-	2	-	2	-	40
16	श्योदान s/o बिशना	-	8	-	5	-	3	-	4	-	2	-	2	-	3	-	-
	8. बिशना s/o बीज्या	8	19	4	10	4	9	1	7	-	2	2	4	3	5	40	40
17	गोविन्दा s/o बीज्या	-	23	-	15	-	8	-	6	-	2	-	2	-	5	-	40
	9. गोविन्दा s/o बीज्या	7	23	5	15	2	8	-	6	-	2	2	2	2	5	30	40
18	घूडा s/o बीज्या	-	4	-	2	-	2	-	-	-	1	-	-	-	3	-	-
	10.घूडा s/o बीज्या	5	4	2	2	3	2	1	-	-	1	3	-	3	3	-	-
19	राजू सिह s/o बजरग सिह	-	7	-	4	-	3	-	3	-	1	-	2	-	3	-	-
20	वीरेन्द्र सिह s/o बजरग सिह	-	10	-	5	-	5	-	4	-	4	-	2	-	3	-	-
21	लाल सिह s/o बजरंग सिह	-	4	-	3	-	1	-	3	-	1	-	2	-	2	-	2
22	प्रताप सिंह s/o बजरंग सिह	-	5	-	4	-	1	-	4	-	1	-	-	-	1	-	2
23	शीला कँवर w/o प्रहलाद सिह	-	3	-	-	-	3	-	-	-	3	-	-	-	-	-	-
	11.बजरंग सिंह s/o बने सिह	10	29	6	16	4	13	5	14	1	10	2	6	3	9	-	4
24	मनोहर सिह s/o गोपाल सिह	-	2	-	1	-	1	-	1	-	-	-	2	-	1	-	2
25	तेज सिह s/o गोपाल सिह	-	8	-	3	-	5	-	3	-	3	-	-	-	-	-	1
	12.गोपाल सिंह s/o नारायण सिंह	9	10	5	4	4	6	5	4	2	3	4	2	3	1	-	3
26	कल्याण सिह (गाँव छोड गये)	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	13. कल्याण सिंह s/o बने सिंह	8	-	6	-	2	-	5	-	1	-	2	-	2	-	2	-
27	श्रवण s/o भोला	-	12	-	4	-	8	-	4	-	2	-	-	-	2	-	7
28	छाजू s/o भोला	-	8	-	5	-	3	-	5	-	1	-	-	-	1	-	50
29	राधेश्याम s/o भोला	-	5	-	3	-	2	-	3	-	1	-	-	-	2	-	7
	14. भोला s/o मुकन्दा	15	25	8	12	7	13	3	12	-	4	2	-	2	5	30	64
30	पूरण s/o प्रभात	-	11	-	5	-	6	-	4	-	1	-	-	-	3	-	30
31	पन्ना s/o प्रभात	-	10	-	7	-	3	-	5	-	1	-	-	-	2	-	35
32	स्योजी s/o प्रभात	-	7	-	5	-	2	-	5	-	1	-	-	-	2	-	7
33	सम्पत s/o प्रभात	-	6	-	4	-	2	-	4	-	-	-	-	-	2	-	7
	15. प्रभात s/o मुकन्दा	14	34	9	21	5	13	1	18	-	3	2	-	2	9	40	79
34	राम सहाय s/o दाना	-	8	-	5	-	3	-	5	-	2	-	-	-	1	-	10
35	मूल चन्द s/o दाना	-	6	-	2	-	4	-	1	-	2	-	-	-	2	-	2

थानाग़ाज़ी, जिला–अलवर (राजस्थान)

तुलनात्मक अध्ययन)

दूध (लीटर में)		कृषि भूमि (बीघा में)		फसल उत्पादन की मात्रा (मण में)														कुल वार्षिक आय	
वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	गेहूँ		जौ		सरसों		चना		मक्का		बाजरा		बैल			
1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013
17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
-	6	-	2.5	-	40	-	-	-	-	-	-	-	20	-	-	-	-	-	70000
-	7	-	7	-	60	-	10	-	-	-	-	-	30	-	-	-	-	-	30000
6	13	9	9.5	30	100	25	10	-	-	-	-	25	50	-	-	2	-	8000	100000
-	8	-	4	-	30	-	20	-	5	-	-	-	20	-	-	-	-	-	60000
-	12	-	3	-	20	-	15	-	-	-	-	-	15	-	-	-	-	-	50000
5	20	7	7	30	50	40	35	-	5	-	-	-	35	-	-	2	-	9000	110000
-	17	-	2	-	30	-	-	-	-	-	-	-	15	-	-	-	-	-	60000
5	17	2	2	15	30	10	-	-	-	-	-	10	15	-	-	2	-	6000	60000
-	10.5	-	1	-	15	-	15	-	-	-	-	-	15	-	-	-	-	-	30000
-	5	-	1	-	15	-	-	-	-	-	-	-	7	-	-	-	-	-	30000
2	15.5	2	2	10	30	15	15	-	-	-	-	10	22	-	-	2	-	7000	60000
-	1	-	1.5	-	20	-	5	-	-	-	-	-	15	-	-	-	-	-	30000
0.5	1	2	1.5	5	20	10	5	-	-	-	-	8	15	-	-	-	-	7000	30000
-	14	-	10	-	50	-	20	-	20	-	-	-	25	-	-	-	-	-	100000
7	14	10	10	10	50	30	20	-	20	-	-	20	25	-	-	1	-	10000	100000
-	7	-	1	-	20	-	-	-	-	-	-	-	10	-	-	-	-	-	50000
-	9	-	1	-	20	-	-	-	-	-	-	-	10	-	-	-	-	-	60000
-	7.5	-	1	-	20	-	-	-	-	-	-	-	10	-	-	-	-	-	50000
-	7.5	-	1	-	20	-	-	-	-	-	-	-	10	-	-	-	-	-	100000
-	7.5	-	1	-	20	-	-	-	-	-	-	-	10	-	-	-	-	-	60000
9	38.5	4	5	5	100	15	-	-	-	-	-	15	50	-	-	1	-	9000	320000
-	14	-	5	-	60	-	10	-	15	-	-	-	40	-	-	-	1	-	100000
-	7.5	-	2	-	30	-	-	-	-	-	-	-	10	-	-	-	-	-	50000
9.5	21.5	4	7	6	90	15	10	-	15	-	-	14	50	-	-	1	1	8000	150000
-	23	-	8	-	20	-	20	-	10	-	-	-	50	-	-	-	-	-	150000
9	23	5	8	10	20	20	20	-	10	-	-	20	50	-	-	1	-	10000	150000
-	8	-	10	-	40	-	30	-	10	-	-	-	30	-	-	-	-	-	100000
6	8	10	10	20	40	40	30	-	10	-	-	40	30	-	-	1	-	8000	100000
-	11	-	10	-	50	-	20	-	20	-	-	-	30	-	-	-	-	-	100000
-	11	-	10	-	30	-	20	-	40	-	20	-	20	-	-	-	-	-	200000
-	11	-	10	-	30	-	20	-	20	-	30	-	20	-	-	-	-	-	70000
-	0.5	-	10	-	30	-	20	-	15	-	20	-	20	-	-	-	-	-	100000
-	-	-	10	-	-	-	-	-	-	-	70	-	20	-	-	-	-	-	100000
7	33.5	40	50	20	140	30	80	-	95	-	140	30	110	-	-	2	-	10000	570000
-	11	-	8	-	10	-	-	-	10	-	30	-	-	-	-	-	-	-	50000
-	0.5	-	8	-	20	-	10	-	10	-	30	-	-	-	-	-	-	-	200000
8	11.5	30	16	-	30	10	10	10	20	20	60	20	-	-	-	2	-	7000	250000
-	-	-	22	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	———
8	-	22	22	-	-	-	-	20	-	10	-	-	-	-	-	2	-	7000	———
-	6	-	0.5	-	20	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	50000
-	11	-	0.5	-	20	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	500000
-	7	-	0.5	-	20	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	125000
6	24	1	1.5	10	60	30	-	-	-	-	-	20	15	-	-	2	-	6000	675000
-	8	-	1.5	-	20	-	5	-	-	-	5	-	15	-	-	-	-	-	100000
-	19	-	0.75	-	20	-		-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	90000
-	10	-	1.5	-	20	-	5	-	-	-	5	-	15	-	-		-	-	100000
-	7	-	1	-	15	-	5	-	-	-	5	-	5	-	-	-	-	-	80000
5	44	1.5	4.75	10	75	30	15	-	-	-	15	20	40	-	-	2	-	7000	370000
-	8	-	0.5	-	25	-	-	-	-	-	-	-	10	-	-	-	-	-	60000
-	7	-	0.5	-	25	-	-	-	-	-	-	-	10	-	-	-	-	-	60000

ग्राम–भाँवता, पोस्ट–आगर, तहसील–

(1987 व 2013 का

क्र. सं.	परिवार के मुखिया का नाम	जनसंख्या						साक्षरता				पशु–धन					
		कुल		पुरुष		स्त्री		पुरुष		स्त्री		गाय		भैंस		बकरी	
		वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013
		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
36	सीताराम s/o दाना	-	6	-	2	-	4	-	1	-	2	-	-	-	-	-	21
	16. दाना s/o मुकन्दा	10	20	4	9	6	11	1	7	-	6	2	-	1	3	20	33
37	रामकरण,तुलसी s/o भगवाना	-	5	-	3	-	2	-	1	-	-	-	-	-	2	-	7
	17. भगवाना s/o मुकन्दा	7	5	3	3	4	2	1	1	-	-	2	-	1	2	10	7
38	सोन्या s/o मुकन्दा	-	8	-	3	-	5	-	2	-	2	-	2	-	-	-	35
	18. सोन्या s/o मुकन्दा	5	8	3	3	2	5	-	2	-	2	1	2	-	-	2	35
39	सेदू s/o मुकन्दा	-	6	-	3	-	3	-	2	-	1	-	-	-	-	-	2
40	रिछपाल s/o सेदू	-	7	-	3	-	4	-	2	-	3	-	-	-	2	-	-
41	बोदू s/o सेदू	-	5	-	2	-	3	-	1	-	2	-	-	-	3	-	1
	19. सेदू s/o मुकन्दा	7	18	3	8	4	10	-	5	-	6	1	-	1	5	30	3
42	रामकँवार s/o नानछा	-	4	-	3	-	1	-	2	-	-	-	2	-	3	-	30
43	लीला राम s/o नानछा	-	2	-	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	2	-	5
44	बाबू s/o नानछा	-	7	-	4	-	3	-	4	-	1	-	-	-	2	-	15
	20. नानछा s/o बिरदू	8	13	4	8	4	5	1	6	2	1	2	2	2	7	20	50
45	सुरजा s/o मगला	-	2	-	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	10
46	बद्रू रैंसा s/o धनाराम s/o माल	-	5	-	2	-	3	-	2	-	-	-	-	-	1	-	--
47	भीरा s/o मगला	-	6	-	5	-	1	-	5	-	1	-	-	-	2	-	30
48	छोटेलाल s/o मंगला	-	9	-	4	-	5	-	4	-	2	-	2	-	-	-	4
49	गुमान s/o मगला	-	5	-	3	-	2	-	2	-	2	-	-	-	1	-	30
50	कालू s/o मंगला	-	5	-	3	-	2	-	2	-	1	-	-	-	1	-	-
51	जयराम s/o मंगला	-	6	-	4	-	2	-	4	-	1	-	-	-	-	-	3
	21. मंगला s/o बिरदू	17	38	8	22	9	16	-	19	-	7	2	2	2	5	30	77
52	अणची w/o रामदेवा	-	1	-	-	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	22. राम देवा s/o बिरदू	2	1	1	-	1	1	-	-	-	-	1	-	1	-	-	-
53	बाबूलाल s/o रामपाल	-	8	-	4	-	4	-	3	-	3	-	-	-	3	-	60
54	रतन s/o रामपाल	-	6	-	3	-	3	-	1	-	2	-	-	-	4	-	4
55	तेजाराम s/o रामपाल	-	3	-	2	-	1	-	-	-	-	-	-	-	1	-	3
56	कन्हैयालाल s/o रूपलाल s/o भू	-	4	-	3	-	1	-	2	-	-	-	-	-	2	-	40
	23. रामपाल s/o भूरा	8	21	6	12	2	9	1	6	-	5	2	-	3	10	30	107
57	रामू s/o शिम्भू	-	2		1	-	1	-	1	-	-	-	-	-	2	-	-
	24. रामू s/o शिम्भू	5	2	1	1	4	1	1	1	-	-	4	-	1	2	4	-
58	जगदीश,कैलाश s/o सेदू	-	10	-	5	-	5	-	3	-	1	-	3	-	6	-	40
59	छोटेलाल s/o सेदू	-	6	-	3	-	3	-	2	-	2	-	-	-	-	-	-
60	किशन s/o सेदू	-	7	-	3	-	4	-	2	-	3	-	-	-	4	-	5
	25.जगदीश s/o सेदू	11	23	6	11	5	12	1	7	-	6	3	3	2	10	40	45
61	रमशी s/o भोमा	-	6	-	3	-	3	-	1	-	1	-	-	-	2	-	3
62	गंगाराम s/o भोमा	-	14	-	7	-	7	-	3	-	3	-	-	-	7	-	40
	26.रमशी,गंगाराम s/o भोमा	12	20	5	10	7	10	2	4	-	4	4	-	4	9	25	43
63	प्रभु s/o सुन्दर	-	6	-	3	-	3	-	2	-	2	-	-	-	2	-	3
64	मदन s/o सुन्दर	-	5	-	1	-	4	-	-	-	2	-	-	-	2	-	2
65	घासी s/o सुन्दर	-	7	-	4	-	3	-	4	-	2	-	-	-	2	-	6
	27.सुन्दर s/o सगरा	10	18	4	8	6	10	1	6	-	6	3	-	3	6	30	11
66	जयराम s/o नारायण	-	5	-	3	-	2	-	2	-	1	-	-	-	1	-	2
67	कन्हैया लाल s/o नारायण	-	5	-	3	-	2	-	3	-	1	-	-	-	4	-	1
68	छाजू s/o नारायण	-	7	-	2	-	5	-	1	-	4	-	-	-	3	-	2
69	लाला s/o नारायण	-	6	-	4	-	2	-	2	-	-	-	-	-	3	-	2
	28.नारायण s/o सगरा	12	23	7	12	5	11	1	8	-	6	2	-	4	11	40	7
70	रामचन्द्र s/o काना	-	12	-	9	-	3	-	9	-	3	-	2	-	2	-	20
71	रामकिशन s/o काना	-	7	-	5	-	2	-	4	-	-	-	3	-	4	-	20
69	फूला s/o काना	-	7	-	4	4	3	-	2	-	2	-	-	-	3	-	3
69	पूरण s/o काना	-	8	-	4	-	4	-	3	-	3	-	1	-	4	-	4
	29. काना भरगढ़	-	34	-	22	-	12	-	18	-	8	-	6	-	13	-	47
	कुल योग	235	495	124	262	111	233	32	177	6	98	68	36	57	149	494	858

थानागाज़ी, जिला–अलवर (राजस्थान)

तुलनात्मक अध्ययन)

दूध (लीटर में)		कृषि भूमि (बीघा में)		फसल उत्पादन की मात्रा (मण में)														कुल वार्षिक आय	
वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	गेहूँ		जौ		सरसों		घना		मक्का		वाजरा		बैल			
1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013
17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
-	-	-	0.5	-	25	-	-	-	-	-	-	-	10	-	-	-	-	-	50000
5	15	1	1.5	10	75	10	-	-	-	-	-	5	30	-	-	1	-	6000	170000
-	8	-	1	-	20	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	70000
-	8	1	1	8	20	10	-	-	-	-	-	4	5	-	-	1	-	5000	70000
-	8	-	1	-	15	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	200000
-	8	1	1	7	15	8	-	-	-	-	-	4	5	-	-	-	-	7000	200000
-	-	-	0.5	-	10	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	80000
-	7	-	0.5	-	10	-	-	-	-	-	-	-	2	-	-	-	-	-	60000
-	8	-	0.5	-	10	-	-	-	-	-	-	-	2	-	-	-	-	-	50000
8	15	1	1.5	7	30	8	-	-	-	-	-	5	9	-	-	1	-	6000	190000
-	10	-	1	-	40	-	10	-	-	-	-	-	25	-	-	-	-	-	70000
-	6	-	1	-	40	-	-	-	-	-	-	-	25	-	-	-	-	-	50000
-	6	-	1	-	35	-	-	-	-	-	-	-	20	-	-	-	-	-	70000
8	22	2	3	20	115	25	10	-	-	-	-	20	70	-	-	1	-	7000	190000
-	1	-	0.5	-	5	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	15000
-	-	-	0.5	-	5	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	50000
-	8	-	0.5	-	5	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	100000
-	3	-	0.5	-	5	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	60000
-	7	-	0.5	-	5	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	50000
-	7	-	0.5	-	5	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	50000
-	-	-	0.5	-	5	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	50000
8	26	2	3.5	15	35	10	-	-	-	-	-	15	35	-	-	-	-	7000	375000
-	-	-	1.5	-	15	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	10000
5	-	2	1.5	10	15	8	-	-	-	-	-	8	5	-	-	1	-	7000	10000
-	11	-	1	-	25	-	-	-	-	-	-	-	10	-	-	-	-	-	90000
-	7	-	1	-	20	-	-	-	-	-	-	-	10	-	-	-	-	-	40000
-	7	-	1	-	25	-	-	-	-	-	-	-	15	-	-	-	-	-	60000
-	11	-	1	-	25	-	-	-	-	-	-	-	10	-	-	-	-	-	80000
6	36	3	4	10	95	20	-	-	-	-	-	20	45	-	-	1	-	8000	270000
-	8	-	4	-	50		10	-	-	-	-	-	20	-	-	-	-	-	50000
6	8	6	4	20	50	20	10	-	-	-	-	30	20	-	-	2	-	10000	50000
-	10	-	4	-	50	-	10	-	-	-	-	-	30	-	-	-	-	-	150000
-	-	-	2	-	40	-	10	-	-	-	-	-	20	-	-	-	-	-	500000
-	8	-	2	-	40	-	10	-	-	-	-	-	20	-	-	-	-	-	60000
9	18	3	8	20	130	20	30	-	-	-	-	30	70	-	-	1	-	9000	710000
-	7	-	3	-	50	-	10	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	60000
-	26	-	4	-	40	-	20	-	-	-	5	-	30	-	-	-	-	-	70000
8	33	7	7	30	90	35	30	-	-	5	5	30	35	-	-	2	-	10000	130000
-	8	-	2.5	-	30	-	10	-	-	-	5	-	20	-	-	-	-	-	70000
-	7	-	2.5	-	30	-	10	-	-	-	-	-	15	-	-	-	-	-	30000
-	8	-	2.5	-	30	-	10	-	-	-	-	-	20	-	-	-	-	-	50000
11	23	7	7.5	20	90	30	30	-	-	10	5	40	55	-	-	2	-	11000	150000
-	7.5	-	2.5	-	30	-	10	-	-	-	-	-	20	-	-	-	-	-	80000
-	8	-	4	-	30	-	10	-	10	-	-	-	30	-	-	-	-	-	150000
-	8	-	4	-	30	-	10	-	10	-	-	-	30	-	-	-	-	-	50000
-	7	-	3	-	20	-	10	-	-	-	-	-	15	-	-	-	-	-	50000
11	30.5	7	13.5	20	110	40	40	-	20	5	-	40	95	-	-	2	-	10000	330000
-	14	-	4.5	-	20	-	10	-	10	-	-	-	20	-	-	-	-	-	200000
-	17	-	4.5	-	18	-	12	-	12	-	-	-	22	-	-	-	2	-	90000
-	7	-	4.5	-	20	-	10	-	10	-	-	-	30	-	-	-	-	-	40000
-	9	-	4.5	-	25	-	10	-	5	-	-	-	25	-	-	-	1	-	150000
-	47	-	18	-	83	-	42	-	37	-	-	-	97	-	-	-	3	-	480000
178	574	192.5	231.25	378	1788	564	442	30	232	50	225	503	1083	0	0	38	4	222000	6370000

ग्राम–कोळ्याळा, पोस्ट–आगर, तहसील–

(1987 व 2013 का

क्र. सं.	परिवार के मुखिया का नाम	जनसंख्या						साक्षरता				पशु–धन					
		कुल		पुरुष		स्त्री		पुरुष		स्त्री		गाय		भैंस		बकरी	
		वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013	वर्ष 1987	वर्ष 2013
		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
1	छीतर s/o प्रभात	-	9	-	6	-	3	-	6	-	-	-	-	-	4	-	-
2	रामनिवास s/o गोपाल	-	11	-	6	-	5	-	5	-	-	-	-	-	3	-	-
	1 प्रभात,गोपाल,रेवड़	16	20	7	12	9	8	2	11	-	-	4	-	8	7	-	-
3	कल्याण s/o छीतर	-	10	-	5	-	5	-	4	-	1	-	-	-	4	-	2
	2 छीतर s/o	3	10	2	5	1	5	2	4	-	1	-	-	3	4	-	2
4	मोहन,हनुमान,प्रहलाद,किशोर	-	17	-	10	-	7	-	5	-	1	-	2	-	8	-	2
	3 हरसाय/	7	17	5	10	2	7	1	5	-	1	-	2	4	8	35	2
5	रामलाल, पप्पू , रमेश	-	13	-	8	-	5	-	6	-	-	-	-	-	6	-	-
	4 रामलाल/कन्हैया	6	13	4	8	2	5	1	6	-	-	1	-	3	6	30	-
6	जगदीश s/o भगवाना	-	15	-	9	-	6	-	5	-	2	-	-	-	3	-	25
7	बाबूलाल s/o भगवाना	-	9	-	5	-	4	-	5	-	2	-	-	-	5	-	2
8	कैलास s/o भगवाना	-	6	-	3	-	3	-	1	-	-	-	-	-	2	-	2
	5 भगवाना/छोटू	7	30	4	17	3	13	1	11	-	4	4	-	2	10	-	29
9	अर्जुन s/o नाथू	-	7	-	3	-	4	-	1	-	1	-	-	-	6	-	11
10	काना s/o नाथू	-	17	-	7	-	10	-	3	-	3	-	3	-	7	-	80
11	गंगा सहाय s/o नाथू	-	11	-	6	-	5	-	5	-	1	-	-	-	2	-	2
12	रामसहाय s/o नाथू	-	9	-	5	-	4	-	3	-	2	-	-	-	2	-	-
13	भगवाना s/o महादेव	-	8	-	4	-	4	-	3	-	1	-	4	-	3	-	50
	6 नाथू s/o भीमू	40	52	18	25	22	27	4	15	-	8	9	7	8	20	90	143
14	घोदू s/o कजोड़	-	6	-	3	-	3	-	2	-	1	-	1	-	5	-	40
15	नन्दा s/o कजोड़	-	8	-	5	-	3	-	3	-	1	-	-	-	2	-	2
16	रामकरण s/o श्रवण	-	4	-	2	-	2	-	-	-	-	-	1	-	2	-	-
	7 कजोड़/भीरा	9	18	5	10	4	8	-	5	-	2	4	2	3	9	40	42
17	भैरू s/o भीरा	-	2	-	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	2	-	-
18	गणपत s/o भैरू	-	9	-	5	-	4	-	4	-	-	-	-	-	3	-	60
19	कालू s/o भैरू	-	7	-	4	-	3	-	2	-	-	-	-	-	2	-	4
	8 भैरू/ भीरा	10	18	4	10	6	8	-	6	-	-	7	-	3	7	30	64
20	कैलास s/o रामपाल	-	6	-	2	-	4	-	1	-	-	-	-	-	2	-	1
21	मोहन s/o रामपाल	-	4	-	2	-	2	-	1	-	-	-	-	-	2	-	1
22	छाजू s/o रामसुखा	-	7	-	2	-	5	-	1	-	1	-	1	-	3	-	2
	9 रामपाल, छाजू, रामसुखा	10	17	4	6	6	11	-	3	-	1	8	1	2	7	-	4
23	धन्ना s/o रामचन्दर	-	7	-	3	-	4	-	2	-	-	-	-	-	5	-	50
	10 धन्ना/रामचन्द	6	7	3	3	3	4	-	2	-	-	2	-	2	5	40	50
24	जयराम s/o सगरा	-	11	-	5	-	6	-	3	-	2	-	2	-	2	-	41
25	बाबूलाल s/o सगरा	-	5	-	2	-	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	5
	11 जयराम, बाबू s/o सगरा	7	16	3	7	4	9	-	3	-	2	5	2	-	2	30	46
26	रामकिशन s/o भरता	-	12	-	6	-	6	-	4	-	-	-	-	-	3	-	45
27	रामप्रताप s/o भरता	-	9	-	4	-	5	-	2	-	-	-	-	-	2	-	10
28	लाला राम s/o भरता	-	11	-	3	-	8	-	2	-	-	-	-	-	2	-	8
	12 भरता s/o भूँथा	11	32	6	13	5	19	1	8	-	-	8	-	3	7	50	63
29	घासी s/o बद्री	-	9	-	5	-	4	-	3	-	-	-	-	-	3	-	15
	13 घासी s/o बद्री	3	9	1	5	2	4	-	3	-	-	-	-	2	3	-	15
30	सुन्दर s/o बिरदू	-	10	-	6	-	4	-	3	-	-	-	-	-	-	-	4
	14 छाजू, सुन्दर s/o बिरदू	6	10	3	6	3	4	-	3	-	-	2	-	-	-	-	4
31	नाथू,नारायण s/o भीरा	-	5	-	4	-	1	-	1	-	-	-	-	-	7	-	1
	15 नाथू,नारायण s/o भीरा	5	5	4	4	1	1	1	1	-	-	2	-	8	7	30	1
32	गोपालs/oरामसहायs/oबींजा	-	12	-	7	-	5	-	6	-	-	-	-	-	7	-	30
	16 गोपालs/oरामसहायs/oबींजा	7	12	4	7	3	5	1	6	-	-	4	-	6	7	30	30
33	रामलाल,लीलाs/oछीतर	-	6	-	4	-	2	-	-	-	1	-	1	-	1	-	2
	17 रामलाल,लीलाs/oछीतर	4	6	3	4	1	2	-	-	-	1	3	1	1	1	20	2
34	किशन s/o भीरा	-	6	–	3	-	3	-	1	-	-	-	-	-	1	-	8
	18 किशन s/o भीरा	5	6	3	3	2	3	-	1	-	-	3	-	2	1	20	8
35	सोहन s/o रेवड	-	5	-	2	-	3	-	1	-	-	-	-	-	-	-	15
	19 रेवड s/o डालू	5	5	2	2	3	3	-	1	-	-	3	-	2	-	10	15
36	श्रवण s/o पींपू	-	11	-	8	-	3	-	3	-	-	-	4	-	3	-	15
	20 श्रवण s/o पींपू	7	11	3	8	4	3	1	3	-	-	2	4	2	3	16	15
37	बगसा s/o प्रभात	-	8	-	5	-	3	-	4	-	-	-	1	-	1	-	1
38	चन्द्रा s/o प्रभात	-	6	-	4	-	2	-	1	-	-	-	-	-	1	-	6
	21 प्रभात s/o पींपू	11	14	6	9	5	5	1	5	-	-	2	1	2	2	15	7
	कुल योग	185	328	94	174	91	154	16	102	0	20	73	20	66	116	486	542

थानागाज़ी, जिला–अलवर (राजस्थान)

तुलनात्मक अध्ययन)

दूध (लीटर में)		कृषि भूमि (बीघा में)		फसल उत्पादन की मात्रा (मण में)														कुल वार्षिक आय	
वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	गेहूँ		जौ		सरसों		चना		मक्का		बाजरा		बैल			
1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013	1987	2013
17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
-	10	-	8	-	70	-	-	-	30	-	-	-	20	-	-	-	-	-	75000
-	6	-	8	-	72	-	-	-	25	-	-	-	15	-	-	-	-	-	80000
7	16	16	16	20	142	30	-	-	55	-	-	25	35	-	-	4	-	8000	155000
-	6	-	3	-	25	-	-	-	-	-	10	-	15	-	-	-	-	-	100000
5	6	3	3	15	25	-	-	-	-	-	10	10	15	-	-	-	-	2500	100000
-	24	-	5	-	100	-	-	-	-	-	5	-	30	-	-	-	-	-	600000
10	24	3	5	15	100	-	-	-	-	-	5	10	30	-	-	-	-	5000	600000
-	12	-	5	-	100	-	20	-	-	-	-	-	25	-	10	-	-	-	200000
6	12	5	5	30	100	-	20	-	-	-	-	20	25	-	10	1	-	5000	200000
-	8	-	4	-	50	-	20	-	-	-	10	-	15	-	-	-	-	-	200000
-	12	-	4	-	50	-	20	-	-	-	10	-	20	-	-	-	-	-	200000
-	5	-	2	-	20	-	5	-	-	-	-	-	12	-	-	-	-	-	40000
6	25	6	10	15	120	15	45	-	-	-	20	15	47	-	-	2	-	6000	440000
-	7	-	3	-	30	-	5	-	-	-	-	-	16	-	-	-	-	-	60000
-	21	-	5	-	50	-	10		-	-	-	-	20	-	-	-	-	-	150000
-	7	-	3	-	30	-	5	-	-	-	-	-	16	-	-	-	-	-	150000
-	7	-	3	-	30	-	5	-	-	-	-	-	15	-	-	-	-	-	90000
-	7	-	5	-	50	-	10	-	-	-	-	-	20	-	-	-	2	-	100000
19	49	15	19	30	190	70	35	-	-	2	-	70	87	-	-	5	2	40000	550000
-	14	-	3	-	30	-	5	-	-	-	-	-	15	-	-	-	1	-	90000
-	7	-	3	-	30	-	5	-	-	-	-	-	15	-	-	-	-	-	50000
-	7	-	3	-	30	-	5	-	-	-	-	-	15	-	-	-	1	-	50000
6	28	9	9	20	90	30	15	-	-	-	-	25	45	-	-	2	2	8000	190000
-	7	-	1	-	15	-	-	-	-	-	-	-	8	-	-	-	-	-	20000
-	7	-	4	-	30	-	15	-	-	-	-	-	18	-	-	-	-	-	150000
-	7	-	3	-	30	-	10	-	-	-	-	-	15	-	-	-	1	-	40000
6	21	9	8	20	75	30	25	-	-	-	-	30	41	-	-	2	1	8000	210000
-	7	-	2	-	30	-	-	-	-	-	-	-	15	-	-	-	-	-	40000
-	7	-	2	-	30	-	-	-	-	-	-	-	15	-	-	-	-	-	50000
-	7	-	4	-	40	-	10	-	-	-	-	-	20	-	-	-	-	-	50000
8	21	8	8	20	100	50	10	-	-	-	-	30	50	-	-	4	-	10000	140000
-	16	-	5	-	20	-	-	-	30	-	-	-	40	-	-	-	-	-	100000
4	16	5	5	-	20	-	-	15	30	-	-	15	40	-	-	-	-	8000	100000
-	11	-	1.25	-	20	-	-	-	-	-	-	-	8	-	-	-	-	-	100000
-	-	-	1.25	-	20	-	-	-	-	-	-	-	8	-	-	-	-	-	70000
6	11	2.5	2.5	-	40	-	-	-	-	-	-	10	16	-	-	2	-	9000	170000
-	7	-	1.50	-	40	-	10	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	150000
-	6.5	-	2	-	35	-	3	-	-	-	-	-	15	-	-	-	-	-	70000
-	6.5	-	1.25	-	30	-	-	-	-	-	-	-	5	-	5	-	-	-	90000
11	20	2	4.75	-	105	-	13	-	-	-	-	20	25	-	5	2	-	10000	310000
-	7.5	-	1.25	-	35	-	-	-	-	-	-	-	5	-	-	-	-	-	90000
5	7.5	1	1.25	-	35	-	-	-	-	-	-	5	5	-	-	-	-	6000	90000
-	1.5	-	4	-	20	-	10	-	-	-	-	-	13	-	-	-	-	-	50000
-	1.5	4	4	-	20	-	10	-	-	-	-	10	13	-	-	2	-	7000	50000
-	24	-	5	-	10	-	5	-	10	-	-	-	15	-	-	-	-	-	60000
24	24	30	5	-	10	-	5	5	10	-	-	30	15	-	-	2	-	10000	60000
-	14	-	8	-	100	-	25	-	20	-	-	-	40	-	-	-	-	-	150000
10	14	4	8	20	100	40	25	-	20	-	-	30	40	-	-	2	-	11000	150000
-	-	-	2.25	-	14	-	-	-	-	-	12	-	14	-	-	-	-	-	30000
6	-	4	2.25	20	14	15	-	-	-	-	12	20	14	-	-	-	-	10000	30000
-	7	-	4	-	20	-	-	-	-	-	8	-	8	-	-	-	2	-	50000
5	7	4	4	15	20	15	-	-	-	-	8	20	8	-	-	2	2	7000	50000
-	-	-	1	-	6	-	-	-	-	-	-	-	3	-	-	-		-	20000
-	-	4	1	15	6	15	-	-	-	-	-	20	3	-	-	2	-	7000	20000
-	5	-	4	-	30	-	-	-	-	-	-	-	15	-	-	-	2	-	50000
5	5	2.5	4	10	30	5	-	-	-	-	-	6	15	-	-	1	2	7000	50000
-	7	-	4	-	30	-	10	-	-	-	10	-	20	-	-	-	-	-	70000
-	7	-	4	-	30	-	20	-	-	-	10	-	30	-	-	-	-	-	50000
5	14	2.5	8	10	60	-	30	-	-	5	20	10	50	-	-	1	-	8000	120000
154	322	139.5	132.75	275	1402	315	233	20	115	7	75	431	619	0	15	36	9	1,92,500	37,85,000

ग्राम–भौंवता–कोल्याला के कुओं का सर्वे (23 व 24 जून, 2013) मानसून से पूर्व – कन्हैयालाल व गोपालसिंह द्वारा

क्रमांक	कुऐं का नाम	गाँव का नाम	मालिक का नाम	उत्तरी अक्षांश (डिग्री में)	पूर्वी देशान्तर (डिग्री में)	कुल गहराई (डाणा से) (मीटर में)	भरा हुआ पानी (मीटर में)		कुऐं का व्यास की ऊँचाई (मीटर में)	डाणा से धरातल (मीटर में)	विशेष टिप्पणी
							1987	2013			
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.	11.	12
1	मूता दादा का कुआ	भौंवता	सुन्दर,रमशी,जयराम	27.31368	76.20630	29	सूखा	12.00	3	1.5	
2	रावला कुआं	"	पूरागांव रोजीरा	27.31229	76.20618	28.35	3	11.10	3.10	3	
3	बाडाला कुआ	"	बलाई परिवार	27.31181	76.20493	25.9	3	12.90	1.90	1.5	
4	शंकरवाली के नीचे कुआ	"	(बिना नाम)	27.31414	76.20439	9.60	सूखा	सूखा	2	0	डाणा नही
5	पाडाला कुआ	"	रामलाल, धूडा,गोविन्दा,सिरदा	27.30965	76.20322	23.5	सूखा	9.40	3.10	1.20	
6	नया कुआ (भरगडों का)	"	काना भरगड	27.30976	76.20717	28.5	सूखा	11.00	4	0	डाणा नही
7	मोडाला (बरकडी वाला) कुआ	"	काना भरगड	27.31028	76.20823	28.9	1	11.40	2.80	0.30	
8	हनुमान सिंह जी का कुआ	"	हनुमान सिंह	27.30811	76.20733	28.5	सूखा	18.00	2.30	1	डाणा नही
9	मोल्याला कुआ	"	(बिना नाम)	27.30820	76.20688	19.3	1.5	8.90	3.60	0	
10	मीणा वाला कुआ	"	बजरंग सिंह	27.30733	76.20515	27.8	सूखा	15.10	2.50	1	
11	घरों आगला कुआ	"	सुन्दरा,रमशी,जयराम	27.30636	76.20658	23.7	1.5	7.10	2.40	2.50	
12	घरी वाला कुआ	"	रामपाल, धूडा,गोविन्दा,सिरदा	27.30863	76.20165	22.3	सूखा	10.00	2.80	1	
13	डोड्या कुआ	"	बजरंग सिंह	27.30640	76.20345	20.40	सूखा	8.20	3.00	1.20	
14	बन्दाला कुआ	"	बजरंग सिंह,पन्ना,मथरा	27.30476	76.20473	23.75	1.5	11.50		1.50	
15	कान्ह दादा का कुआ	"	जगदीश,छोटेलाल	27.30400	76.20470	26.10	सूखा	12.60	2.40	0.30	
16	नया कुआ	"	बजरंगसिंह	27.30424	76.20615	19.3	सूखा	5.60		1	
17	बड़ाला कुआ	"	बजरंगसिंह,श्रवण,नारायण	27.30220	76.20612	23.3	0.5	6.80		1.50	
18	कोठी कुआ	"	मनोहर सिंह	27.30099	76.20594	19.4	सूखा	2.15	2	3	
19	बोर–1 गोविन्दा,जयराम की	"	गोविन्दा,जयराम	27.31318	76.20392	100	बोर नहीं था	पर्याप्त पानी			
20	पीठ्वाला कुआ	कोल्याला	खटाणा परिवार	27.30107	76.20209	23.1	सूखा	5.60	3	1	
21	ऊपला कुआ शिवालय के पास	"	खटाणा परिवार	27.30130	76.20058	20.2	2	6.40	3.10	2	
22	गौरवाला कुआ	"	अर्जुन,रामपाल,बोदू,भैरूं	27.29950	76.20023	25.1	1	12.00	2	1.50	
23	कैमरी वाला कुआ	"	अर्जुन,रामकिशन भोपा,सुन्दरा	27.30035	76.20265	16.70	सूखा	सूखा	2.70	1.50	
24	बन्दाला कुआ	"	अर्जुन,बोदू,छाजू,भैरूं	27.29968	76.20251	24.7	3	6.00	3.75	2	
25	सगरा भोपा का कुआ बोर के पास	"	भरता,सगरा,छाजू भोपा	27.29941	76.20251	11.90	सूखा	सूखा		1	
26	धोयाला कुआ	"	श्रवण,रामकिशन भोपा	27.29960	76.20477	15.00	सूखा	सूखा	2.75	1.50	
27	मेवडी वाला कुआ	"	भोपा परिवार	27.29969	76.20585	26.35	1	8.85	2.55	1	
28	बाबाजी वाला कुआ	"	सुन्दर,छाजू (बिलानाम)	27.29950	76.20719	7.40	सूखा	सूखा	3	0	
29	दूद्याला कुआ	"	रामकिशन,जयराम,घासी	27.29970	76.20776	21.25	सूखा	12.75	3.10	0	
30	राडा वाला कुआ	"	नाथू, नारायण	27.29958	76.20868	9.60	सूखा	2.00	2		डाणा नही
31	झरखण्ड के पास कुआ, बोर	"	पन्ना सोमोड	27.29729	76.20458	16.8	सूखा	0.30	1.70	1.50	
32	नया कुआ	"	अर्जुन,भैरूं,बोदू,रामपाल	27.29818	76.20401	24.7	सूखा	7.00	3.20	2	
33	रामनिवास का कुआ	"	छीतर,रामनिवास तँवर	27.29782	76.20185	14.30	सूखा	सूखा	3	1	
34	पींदाला कुआ	"	गोपाल तँवर	27.29736	76.20096	20.2	1.5	9.90	2.60	1.50	
35	बावडीवाला कुआ	"	छीतर,भगवाना,हरसहाय रामलाल कोई	27.29651	76.20106	25.2	1.5	6.60	3.60	2	
36	बोर–1. प्रभात खटाणा की	"	प्रभात खटाणा	27.30208	76.20160	7	बोर नहीं था	पर्याप्त पानी			
37	बोर–2. अर्जुन गुर्जर की	"	अर्जुन,बोदू,भैरूं,रामपाल	27.29963	76.20248	107	बोर नहीं था	पर्याप्त पानी			
38	बोर–3. रामकिशन,बाबू की	"	रामकिशन,जयराम,घासी	27.29934	76.20244	73	बोर नहीं था	पर्याप्त पानी			
39	बोर–4. अर्जुन गुर्जर की	"	अर्जुन,बोदू,भैरूं,रामपाल	27.29845	76.20232	76	बोर नहीं था	पर्याप्त पानी			
40	बोर–5. भगवान कोई की	"	भगवान कोई	27.29632	76.20196	125	बोर नहीं था	पर्याप्त पानी			
41	बोर–6. रामलाल की	"	रामलाल,हरसहाय,छीतर	27.29580	76.20187	95	बोर नहीं था	पर्याप्त पानी			
42	बोर–7. गोपाल खटाणा की	"	गोपाल खटाणा	27.29599	76.20500	82	बोर नहीं था	पर्याप्त पानी		•	

हमीरपुर गाँव में किये गये जल–संरक्षण कार्यों का नक्शा
(1985 से 2014 तक)

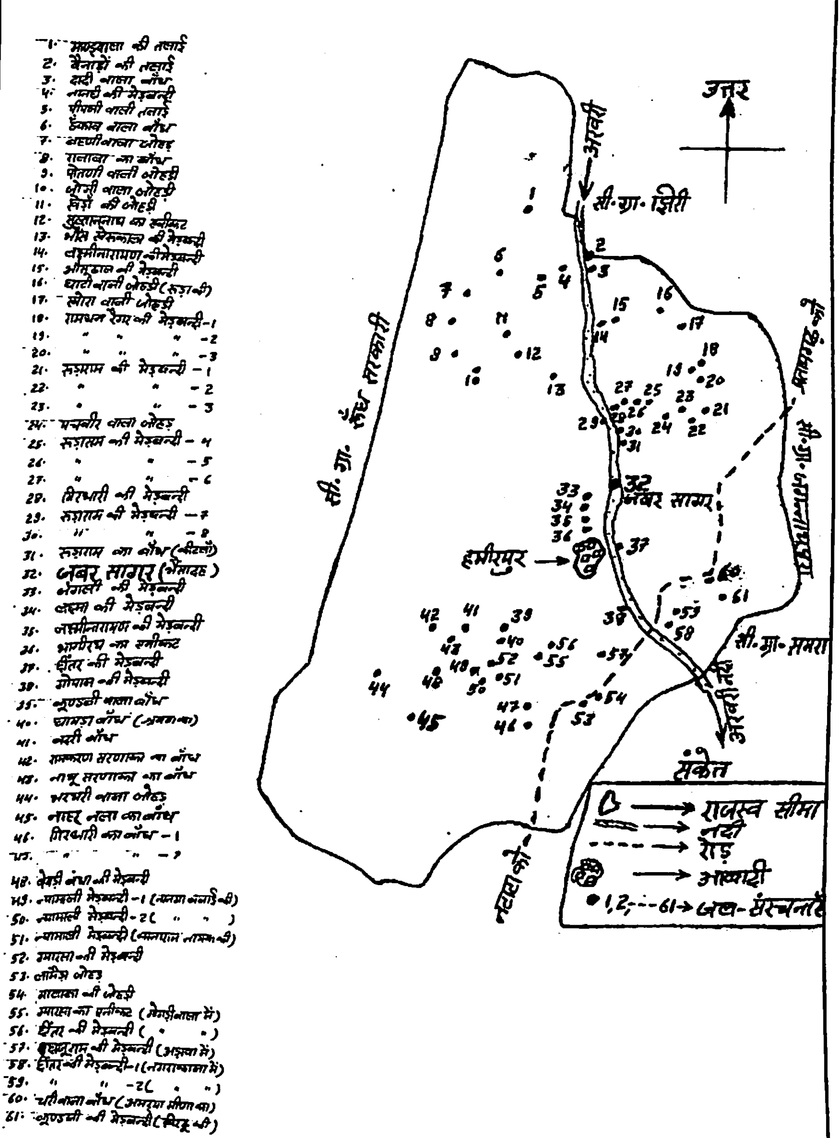

अरवरी नदी जलागम क्षेत्र में तरुण भारत संघ द्वारा जन–सहभागिता से निर्मित जल–संरक्षण–संरचनाएँ एवं उनकी भौगोलिक स्थिति

(वर्ष 1985 से अक्टूबर 2014 तक)

क्र. सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर			उत्तरी अक्षांश (डिग्री में)	पूर्वी देशान्तर (डिग्री में)
			डि.	मि.	से.	डि.	मि.	से.		
1.	हराळा बांध	कोंकड की ढाणी	27	20	26.41	76	11	43.98	27.34067	76.19555
2.	श्याजी का बांध	दूदोकों की ढाणी	27	20	16.55	76	11	18.66	27.33794	76.18852
3.	भगवाना का बांध (सांखलोकाळी में)	दूदोकों की ढाणी	27	20	06.50	76	11	11.94	27.33514	76.18665
4.	दूदोकों की जोहडी	दूदोकों की ढाणी	27	19	42.96	76	11	07.44	27.32860	76.18540
5.	छतारा का जोहड (चोंचाळा के ऊपर)	हरदश की ढाणी	27	19	34.21	76	11	05.82	27.32617	76.18495
6	जम्भूरी वाला जोहड	दूदोकों की ढाणी	27	19	29.57	76	11	25.22	27.32488	76.19034
7.	बंदडी वाली बडी जोहडी (ऊपली)	जोटक्यों का हार	27	19	18.03	76	11	20.44	27.32168	76.18901
8	बंदडी वाली छोटी जोहडी (नीचली)	जोटक्यों का हार	27	19	16.14	76	11	20.44	27.32115	76.18901
9.	नामक्याळा बांध	लादया की ढाणी (छोटी देती)	27	20	18.10	76	12	44.35	27.33836	76.21232
10.	गोपालदास जी का जोहड	घदर्ला की ढाणी	27	19	59.30	76	12	59.22	27.33314	76.21645
11.	ज्वारयाळी जोहडी (घदर्ला की ढाणी में)	संश का गुवाडा (मांडाळा)	27	19	42.82	76	13	22.55	27.32856	76.22293
12.	कानाराम का तेला बांध	ढाबका	27	19	10.27	76	12	23.62	27.31952	76.20656
13.	कानाराम की मेडबन्दी (हिंगोट वाली)	ढाबका	27	19	08.40	76	12	28.94	27.31900	76.20804
14.	जयराम की मेडबन्दी (शकरयाळी)	भाँवता	27	18	49.57	76	12	11.30	27.31377	76.20314
15.	घरों वाली जोहडी	भाँवता	27	18	34.74	76	11	59.75	27.30965	76.19993
16.	घांचाळी जोहडी	भाँवता	27	18	09.65	76	11	54.08	27.30268	76.19835
17.	कानों की मेडबन्दी (बरयाळा की)	भाँवता	27	18	32.80	76	12	06.01	27.30911	76.20167
18.	नाहर सिंह वाला जोहड	भाँवता	27	18	30.60	76	12	12.28	27.30850	76.20341
19.	पीपळी वाली जोहडी	भाँवता	27	18	34.38	76	12	27.54	27.30955	76.20765
20.	बडी जोहडी	भाँवता	27	18	29.12	76	12	22.18	27.30809	76.20616
21.	जगदीश की मेडबन्दी (माल्याळा खेत में)	भाँवता	27	18	28.40	76	12	16.67	27.30789	76.20463
22.	हनुमान सिंह की मेडबन्दी	भाँवता	27	18	25.67	76	12	17.75	27.30713	76.20493
23.	ठाकुरों वाला बांध (बाड्या कुआँ का)	भाँवता	27	18	22.61	76	12	05.54	27.30628	76.20154
24.	लादया वाली जोहडी	भाँवता	27	18	20.81	76	12	29.27	27.30578	76.20813
25.	सोंकड़ा वाला बांध	भाँवता–कोळ्याळा	27	18	13.04	76	12	43.74	27.30362	76.21215
26.	डेकाव वाला एनीकट	भाँवता–कोळ्याळा	27	18	08.20	76	13	01.45	27.30228	76.21707
27.	चबूतरा वाली जोहडी (साताळा में)	भाँवता–कोळ्याळा	27	17	56.25	76	12	52.41	27.29896	76.21456
28.	भैरू जी का बांध	भाँवता–कोळ्याळा	27	18	00.00	76	12	34.79	27.30000	76.20966
29.	मोहिला–घाट	भाँवता–कोळ्याळा	27	17	55.44	76	12	29.82	27.29873	76.20828
30	रामकिशन, जयराम भोपा की मेडबन्दी	कोळ्याळा	27	17	57.62	76	12	22.72	27.29934	76.20631
31.	नाथू , नारायण भोपा की मेडबन्दी	कोळ्याळा	27	17	55.28	76	12	20.70	27.29869	76.20575
32	छाजू भोपा की मेडबन्दी	कोळ्याळा	27	17	54.31	76	12	15.34	27.29842	76.20426
33.	श्रवण भोपा की मेडबन्दी (घोंच्याळा में)	कोळ्याळा	27	17	59.75	76	12	12.85	27.29993	76.20357
34.	अर्जुन की मेडबन्दी (बांदू व भैरू की)	कोळ्याळा	27	17	50.28	76	12	09.54	27.29730	76.20265
35.	धन्ना लोमोड की मेडबन्दी (रोण्डा वाला खेत में)	कोळ्याळा	27	17	51.22	76	12	11.20	27.29756	76.20311
36.	धन्ना लोमोड की मेडबन्दी (ढाबला खेत में)	कोळ्याळा	27	17	49.96	76	12	10.80	27.29721	76.20300
37.	श्रवण व रामसहाय खटाणा की मेडबन्दी (पीळीपाटी में)	कोळ्याळा	27	17	47.87	76	12	13.32	27.29663	76.20370
38.	किशना खटाणा की मेडबन्दी (पीळीपाटी में)	कोळ्याळा	27	17	48.80	76	12	15.01	27.29689	76.20417
39.	भगवाना व रामलाल की मेडबन्दी	कोळ्याळा	27	17	48.73	76	12	17.68	27.29687	76.20491
40.	हरसहाय, छीतर, रामलाल की मेडबन्दी	कोळ्याळा	27	17	45.02	76	12	18.43	27.29584	76.20512
41.	हरसहाय छीतर रामलाल व भगवान की मेडबन्दी	कोळ्याळा	27	17	45.42	76	12	16.78	27.29595	76.20466
42.	कोळ्याळी जोहडी	कोळ्याळा	27	17	37.46	76	12	18.83	27.29374	76.20523
43	हरसहाय का एनीकट	कोळ्याळा	27	17	41.17	76	12	00.58	27.29477	76.20016
44	गोपाल तंवर का एनीकट	कोळ्याळा	27	17	46.82	76	12	00.07	27.29634	76.20002
45.	श्रवण भोपा की मेडबन्दी (डूंगलाळा में)	कोळ्याळा	27	17	54.71	76	12	00.18	27.29853	76.20005
46	रामपाल व छाजू की मेडबन्दी (पीरोळा में)	कोळ्याळा	27	17	59.86	76	11	57.77	27.29996	76.19938
47	भैरू व नाथू की मेडबन्दी (पीरोळा में)	कोळ्याळा	27	17	59.96	76	11	56.40	27.29999	76.19900
48	गाँव बांध का जोहड	कोळ्याळा	27	17	59.06	76	11	54.10	27.29974	76.19836
49.	खानाळी जोहडी	कोळ्याळा	27	17	54.28	76	11	48.77	27.29841	76.19688
50.	काळा खेतों का जोहड (पहाड पर)	कोळ्याळा (भूरियावास)	27	17	40.38	76	11	30.37	27.29455	76.19177
51.	बावडी वाली जोहडी	काळीपाटी	27	18	30.02	76	11	31.17	27.30834	76.19199
52.	श्मशान वाली जोहडी	भूरियावास	27	17	39.30	76	11	52.62	27.29425	76.19795
53.	स्कूल वाली जोहडी	भूरियावास	27	17	15.58	76	11	51.18	27.28766	76.19755
54.	देवरा नीचे की जोहडी	बडाळा गुवाडा	27	16	49.55	76	11	39.70	27.28043	76.19436
55.	राम तळाई	भूरियावास	27	16	24.42	76	11	39.12	27.27345	76.19420
56	भीरा पटेल का बांध (तेला बांध)	भूरियावास	27	16	15.20	76	11	45.82	27.27089	76.19606
57	भोमिया जी वाली जोहडी	भूरियावास	27	16	12.07	76	11	27.96	27.27002	76.19110
58.	भरता वाला जोहड (सेर वाला जोहड)	भूरियावास	27	15	58.32	76	11	31.63	27.26620	76.19212

क्र. स.	जोहड / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर			उत्तरी अक्षांश (डिग्री में)	पूर्वी देशान्तर (डिग्री में)
			डि.	मि.	सै.	डि.	मि.	सै.		
59.	मूलचन्द बळाइ का 'खजूरी वाला बाँध	भूरियावास	27	15	48.96	76	11	45.38	27.26360	76.19594
60.	फंटा की पाळ की मेडबन्दी (सुवा बळाइ की)	भूरियावास	27	15	45.72	76	11	46.90	27.26270	76.19636
61.	हरसीवास वाला जोहड	भूरियावास	27	15	32.98	76	11	50.17	27.25916	76.19727
62.	बदरी गुजर की मेडबन्दी (पालाळा खेत मे)	भूरियावास	27	15	34.27	76	11	22.96	27.25952	76.18971
63.	कांकड की जोहडी	भूरियावास	27	15	35.68	76	11	10.39	27.25991	76.18622
64.	पापडाळी जोहडी (दोरातों की जोहडी)	भोपों की ढाणी (दोरातों की ढाणी)	27	15	19.98	76	11	29.95	27.25555	76.19166
65.	भूरा की जोहड़ी (नागेलों की जोहडी)	नागेलों की ढाणी	27	15	11.63	76	11	26.34	27.25323	76.19065
66.	पचवीर वाली जोहडी	टोडा	27	15	22.93	76	10	51.54	27.25638	76.18093
67	खारा वाली जोहडी (आर्मो वाली जोहडी)	टोडा	27	16	10.26	76	10	48.60	27.26952	76.18017
68.	खारा वाला एनीकट	टोडा	27	16	15.42	76	10	55.56	27.27095	76.18210
69.	पोड़या कुआँ का जोहड	घोसला	27	16	36.66	76	10	50.34	27.27685	76.18065
70.	पचवीर वाली जोहडी	घोसला	27	17	05.52	76	11	00.00	27.28487	76.18333
71.	जाळखी वाला जोहड	घोसला	27	17	17.94	76	11	04.52	27.28832	76.18459
72.	सामाखारा का जोहड	घोसला	27	17	31.92	76	10	52.02	27.29220	76.18112
73.	पाळा जोहड	भडाज	27	18	59.34	76	10	31.65	27.31648	76.17547
74.	खाला की बावडी का जोहड	आमका	27	18	37.98	76	09	42.96	27.31055	76.16193
75.	साधूराम की मेडबन्दी	आमका	27	17	39.58	76	09	27.36	27.29405	76.15760
76	रामपाल का बाँध	नरहट (नरेठ)	27	16	24.42	76	09	30.12	27.27345	76.15837
77.	रघुनाथ मीणा का एनीकट	नरहट (नरेठ)	27	15	44.94	76	09	43.40	27.26248	76.16206
78.	पचवीर वाला जोहड	भडाणों की भाळ	27	15	58.70	76	09	06.36	27.26631	76.15177
79.	पचवीर वाली जोहडी	भडाणों की भाळ	27	14	41.94	76	08	38.40	27.24495	76.14400
80	खेटा वाला एनीकट	घाहा का बास	27	14	15.12	76	08	48.42	27.23753	76.14678
81.	काळा जोहड	घाहा का बास	27	13	49.44	76	08	33.30	27.23040	76.14258
82.	बडा जोहड (पुराना जोहड)	लालपुरा	27	13	47.28	76	09	35.24	27.22950	76.15979
83	चौडी नळी की जोहडी	लालपुरा	27	13	36.66	76	09	33.90	27.22685	76.15942
84.	पाणी पापडा का बाँध	लालपुरा	27	13	36.70	76	09	42.06	27.22686	76.16169
85.	खांडा वाला जोहड	घाहा का बास	27	13	18.75	76	09	02.58	27.22188	76.15072
86	काळक्या वाला जोहड	घाहा का बास	27	13	24.36	76	08	40.38	27.22343	76.14455
87.	झालरा वाला जोहड	नागल	27	12	39.95	76	07	59.64	27.21110	76.13323
88.	नळ की जोहडी	नागल	27	12	25.38	76	07	52.44	27.20705	76.13123
89.	पचवीर वाला जोहड	नागल	27	12	18.48	76	07	39.00	27.20513	76.12750
90.	बघ वाली जोहडी	नागल	27	11	55.80	76	07	25.38	27.19883	76.12372
91.	पळाई वाली तळाइ	लोठवास	27	11	25.62	76	09	29.34	27.19045	76.15815
92.	लाम्बी टोळी की तळाइ	लोठवास	27	11	10.92	76	09	30.18	27.18637	76.15839
93.	कुण्ड्याळा की तळाइ	लोठवास	27	11	15.24	76	09	50.70	27.18757	76.16408
94	घोड्या की तळाइ	लोठवास	27	11	26.90	76	10	06.78	27.19081	76.16855
95.	धामलाळा मे 'खार की तळाइ (सज्यानाथ जी की तळाई)	पळासाना	27	11	55.56	76	10	13.02	27.19877	76.17028
96.	जाळखी वाली तळाइ	पळासाना	27	12	19.44	76	09	45.78	27.20540	76.15272
97.	जाळखी वाला एनीकट	पळासाना	27	12	18.90	76	09	35.93	27.20525	76.15998
98.	गाँव की तळाइ	गूजरों का गुवाडा	27	12	31.74	76	10	04.93	27.20882	76.16805
99	केमाळी की जोहडी (पहाड पर)	पळासाना	27	12	28.26	76	10	41.88	27.20785	76.17830
100.	पालू बाबा की तळाइ	पळासाना	27	12	56.22	76	10	23.52	27.21562	76.17320
101.	गोदूराम गुर्जर का बाँध	पळासाना	27	12	56.22	76	10	20.58	27.21562	76.17238
102.	गोदूराम गुर्जर की मेडबन्दी–1	पळासाना	27	12	56.48	76	10	18.60	27.21568	76.17183
103.	गोदूराम गुर्जर की मेडबन्दी–2	पळासाना	27	12	57.96	76	10	18.78	27.21610	76.17188
104.	खातोळाई की जोहडी	पळासाना	27	13	48.91	76	10	23.95	27.23025	76.17332
105	देवी की जोहडी (तळावडा मे)	घोंदपुरा	27	14	32.28	76	11	06.96	27.24230	76.18527
106.	बालाळी की जोहडी	घोंदपुरा	27	14	15.79	76	11	13.67	27.23772	76.18713
107.	पाखर का 'बीड वाला एनीकट	घोंदपुरा–सौंपतसर	27	14	40.20	76	11	51.30	27.24450	76.19758
108.	गूयली जोहडी (घाटी तळा की जोहडी)	खरडाटा	27	16	53.16	76	12	40.80	27.28143	76.21133
109.	खोरकी का एनीकट	खरडाटा	27	16	58.20	76	12	46.02	27.28283	76.21278
110	ढोलकी वाला बाँध	खरडाटा	27	16	59.88	76	12	53.71	27.28330	76.21492
111	न्हावाळी जोहडी	खरडाटा	27	16	55.80	76	12	56.04	27.28217	76.21557
112.	पन्नालाल का तेला बाँध	खरडाटा	27	16	44.28	76	12	51.42	27.27897	76.21428
113.	पो की घाटी का बाँध (गोपाज मे)	डूमोली	27	17	24.60	76	13	35.24	27.29017	76.22646
114	पीळा खेतों का एनीकट	डूमोली	27	17	05.58	76	13	16.50	27.28458	76.22125
115.	हरी सिंह का एनीकट (आर्मो का बेडा मे)	खाटाळा	27	16	29.88	76	12	58.68	27.27497	76.21630
116.	मूळ सिंह का एनीकट (कूंडळी वाला)	खाटाळा	27	16	14.34	76	13	01.50	27.27065	76.21708
117.	रामधन का एनीकट	लालाकाळा	27	16	21.84	76	13	08.64	27.27273	76.21907
118.	रामधन की मेडबन्दी	लालाकाळा	27	16	23.52	76	13	11.16	27.27320	76.21977
119.	लालाकाळा का जोहड	लालाकाळा	27	16	26.04	76	13	19.56	27.27390	76.22210
120	रैगारों वाली जोहडी (स्कूल के पास)	डूमोली	27	16	12.84	76	13	17.16	27.27023	76.22143
121	राम तळाई बाँध	डूमोली	27	16	08.64	76	13	18.96	27.26907	76.22193

क्र. सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर			उत्तरी अक्षांश (डिग्री में)	पूर्वी देशान्तर (डिग्री में)
			डि.	मि.	से.	डि.	मि.	से.		
122.	भसाळ्या वाली जोहड़ी–नई जोहड़ी (आशापाली का जोहड़)	डूमोली	27	15	51.90	76	13	20.52	27.26442	76.22237
123.	मोड़्याळी का जोहड़ (नई जोहड़ी के पास)	डूमोली	27	15	49.14	76	13	20.33	27.26365	76.22247
124.	रामधन गांवों का बाँध	डूमोली	27	15	20.58	76	13	13.92	27.25572	76.22053
125.	रामप्रसाद का बाँध (सड़डा वाला)	सांवतसर	27	15	26.94	76	12	44.85	27.25745	76.21247
126.	गाँव की तळाइ	सांवतसर	27	15	23.04	76	12	37.05	27.25640	76.21029
127.	पाराळा बाँध	सांवतसर	27	15	16.44	76	12	19.43	27.25457	76.20540
128.	काळो पाळ वाला बाँध	सांवतसर	27	15	05.94	76	12	14.46	27.25165	76.20402
129	छोटी तळाइ	सांवतसर	27	15	03.00	76	12	23.04	27.25083	76.20640
130.	बावड़ी वाला एनीकट	सांवतसर	27	14	56.08	76	12	16.13	27.24891	76.20445
131.	चौकीदारा का जोहड	सांवतसर	27	14	51.42	76	12	21.96	27.24762	76.20610
132.	कळशीकाळा की तळाइ	कळशीकाळा	27	14	33.48	76	13	16.35	27.24263	76.22122
133.	ऊपरली जोहड़ी	पेड़्याळा	27	13	56.16	76	13	47.64	27.23227	76.22990
134.	मोटावाली जोहड़ी	पेड़्याळा	27	13	53.58	76	13	43.36	27.23155	76.22872
135.	झुग्गी वाला जोहड	पेड़्याळा	27	13	51.54	76	13	22.38	27.23095	76.22255
136.	जाड़खो वाली जोहड़ी बड़ी	झिरी	27	13	37.20	76	12	45.66	27.22700	76.21268
137.	जाड़खो वाली जोहड़ी छोटी	झिरी	27	13	38.58	76	12	50.16	27.22738	76.21393
138.	जाडखो वाला ऊपरला बाँध (हनुमान, ओमप्रकाश का)	जगन्नाथपुरा	27	13	37.62	76	12	55.14	27.22712	76.21532
139.	जाडखो वाला बीचला बाँध (कजोड़, ओमप्रकाश, फूलचन्द का)	जगन्नाथपुरा	27	13	33.18	76	12	58.26	27.22588	76.21618
140.	जाडखो वाला नीचला बाँध (कजोड़, हनुमान, कानाराम का)	जगन्नाथपुरा	27	13	28.32	76	13	02.10	27.22453	76.21725
141.	खार्गो वाला बाँध (बनाजी का)	जगन्नाथपुरा	27	12	49.68	76	13	27.36	27.21380	76.22427
142.	माण्ड्याळा की तळाइ	हमीरपुर	27	13	37.99	76	11	27.30	27.22722	76.19092
143.	बेनाड़ो की तळाइ	बेनाड़ा की ढाणी	27	13	27.42	76	12	03.06	27.22428	76.20085
144.	दादी वाला बाँध	दूलों की ढाणी	27	13	17.88	76	12	00.90	27.22163	76.20025
145.	नानछी की मेढबन्दी (काळोपाटी की)	गळो का गुवाडा	27	13	17.10	76	11	41.64	27.22142	76.19490
146.	पीपळी वाली तळाइ	गळो का गुवाडा	27	13	07.26	76	11	30.78	27.21863	76.19188
147.	डेंकाव वाला बाँध	गळो का गुवाडा	27	13	06.96	76	11	17.16	27.21860	76.18810
148.	बहणो वाला जोहड	खेरूको की ढाणी (भगतों की ढाणी)	27	12	54.94	76	11	07.94	27.21526	76.18554
149.	रालाळ्या का बाँध	बड़ा गुवाड़ा	27	12	46.98	76	11	06.54	27.21305	76.18515
150.	पातणी वाली जोहड़ी	बड़ा गुवाड़ा	27	12	37.02	76	11	08.46	27.21028	76.18568
151.	जोगी वाला जोहड	बड़ा गुवाड़ा	27	12	34.36	76	11	22.86	27.20954	76.18968
152.	खेड़ो की जोहड़ी (बड़ी जोहड़ी)	बड़ा गुवाड़ा	27	12	55.38	76	11	29.10	27.21538	76.19142
153.	सुल्तान नाथ का एनीकट	बड़ा गुवाड़ा	27	12	48.42	76	11	34.80	27.21345	76.19300
154.	भीरा खेरूकाळा की मेढबन्दी (लाखाळा में)	खेरूको की ढाणी	27	12	42.72	76	11	51.96	27.21187	76.19777
155.	लक्ष्मीनारायण की मेढबन्दी	हमीरपुर	27	13	04.80	76	11	59.70	27.21800	76.19992
156.	अंसूढाळ की पाटी वाली मेडबन्दी	हमीरपुर	27	13	06.60	76	12	03.18	27.21850	76.20088
157.	पाटी वाली जोहड़ी (रूडा की)	हमीरपुर	27	13	11.70	76	12	21.24	27.21992	76.20590
158.	खारा वाली जोहड़ी	हमीरपुर	27	13	09.36	76	12	31.14	27.21927	76.20865
159.	रामधन रैगर की मेढबन्दी – 1	हमीरपुर	27	12	56.40	76	12	32.16	27.21567	76.20893
160.	रामधन रैगर की मेढबन्दी – 2	हमीरपुर	27	12	54.78	76	12	29.28	27.21522	76.20813
161.	रामधन रैगर की मेढबन्दी – 3	हमीरपुर	27	12	52.02	76	12	30.48	27.21445	76.20847
162.	रूडाराम की मेढबन्दी – 1	हमीरपुर	27	12	42.36	76	12	30.12	27.21177	76.20837
163.	रूडाराम की मेढबन्दी – 2	हमीरपुर	27	12	41.22	76	12	28.50	27.21145	76.20792
164.	रूडाराम की मेढबन्दी – 3	हमीरपुर	27	12	42.12	76	12	25.14	27.21170	76.20698
165.	पपदीर वाला जोहड (तळावड़ा वाला)	हमीरपुर	27	12	39.67	76	12	21.24	27.21102	76.20590
166.	रूडाराम की मेढबन्दी – 4	हमीरपुर	27	12	44.04	76	12	19.50	27.21223	76.20542
167.	रूडाराम की मेढबन्दी – 5	हमीरपुर	27	12	43.92	76	12	17.34	27.21220	76.20482
168.	रूडाराम की मेढबन्दी – 6	हमीरपुर	27	12	43.74	76	12	15.12	27.21215	76.20420
169.	गिरधारी की मेढबन्दी (डाबला वाला खेत में)	हमीरपुर	27	12	43.44	76	12	11.28	27.21207	76.20313
170.	रूडाराम की मेढबन्दी – 7	हमीरपुर	27	12	40.74	76	12	10.92	27.21132	76.20303
171.	रूडाराम की मेढबन्दी – 8	हमीरपुर	27	12	38.22	76	12	11.70	27.21062	76.20325
172.	रूडाराम का बाँध (कोटलों की राडी में)	हमीरपुर	27	12	38.05	76	12	11.99	27.21057	76.20333
173.	जबर सागर (मैसादह का एनीकट)	हमीरपुर	27	12	30.18	76	12	10.40	27.20838	76.20289
174.	जंगली की मेढबन्दी	हमीरपुर	27	12	29.04	76	12	03.00	27.20807	76.20083
175.	लछमा की मेढबन्दी	हमीरपुर	27	12	27.48	76	12	02.88	27.20763	76.20080
176.	लक्ष्मीनारायण की मेढबन्दी	हमीरपुर	27	12	25.56	76	12	03.12	27.20710	76.20087
177.	भागीरथ का एनीकट	हमीरपुर	27	12	24.36	76	12	03.00	27.20677	76.20083
178.	छीतर की मेढबन्दी (नदी के ढाह पर)	हमीरपुर	27	12	24.00	76	12	15.12	27.20667	76.20420
179.	गोपाल की मेढबन्दी (माळ्याळी में)	हमीरपुर	27	12	04.92	76	12	23.76	27.20137	76.20660
180.	कुण्डळी वाला बाँध (श्रवण, मूला का)	गेंडाळा	27	11	54.84	76	11	45.96	27.19857	76.19610
181.	धायड़ा बाँध (श्रवण का)	गेंडाळा	27	11	50.64	76	11	45.36	27.19740	76.19593
182.	बदरो बाँध	सरणाओं की ढाणी	27	11	50.28	76	11	35.04	27.19730	76.19307

क्र. सं.	जोहड / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर			उत्तरी अक्षांश (डिग्री में)	पूर्वी देशान्तर (डिग्री में)
			डि.	मि.	से.	डि.	मि.	से.		
183.	रामकरण सरणाका का बाँध (बाइस्या खेत में)	सरणाकी की ढाणी	27	11	49.56	76	11	27.06	27.19718	76.19065
184.	नाथू सरणाका का बाँध (बाइस्या खेत में)	सरणाकी की ढाणी	27	11	48.12	76	11	30.72	27.19670	76.19187
185.	भरथरी वाला जोहड	हमीरपुर	27	11	18.06	76	11	13.26	27.18835	76.18702
186.	नाहर नळा का बाँध	हमीरपुर	27	11	01.74	76	11	33.12	27.18382	76.19253
187.	गिरधारी का बाँध – 1 (क्यारडा में)	हमीरपुर	27	11	09.24	76	12	05.34	27.18590	76.20148
188.	गिरधारी का बाँध – 2 (क्यारडा में)	हमीरपुर	27	11	14.16	76	12	05.34	27.18727	76.20148
189.	बंपली बधा की मेडबन्दी (गिरधारी की)	हमीरपुर	27	11	29.28	76	11	37.20	27.19147	76.19367
190.	न्यामाळी मेडबन्दी –1 (नानगा बळाई की)	गालाळा	27	11	32.58	76	11	51.24	27.19238	76.19757
191.	न्यामाळी मेडबन्दी – 2 (नानगा बळाई की)	गालाळा	27	11	31.38	76	11	55.92	27.19205	76.19887
192.	न्यामाळी मेडबन्दी (कानाराम नायक की)	हमीरपुर	27	11	33.66	76	11	59.94	27.19268	76.19998
193	ग्यारसा की मेडबन्दी	हमीरपुर	27	11	37.02	76	11	55.26	27.19362	76.19868
194.	लामेडा जोहड	गालाळा	27	11	33.06	76	12	18.66	27.19252	76.20518
195.	गालाळा की जोहडी	गालाळा	27	11	37.08	76	12	14.16	27.19363	76.20393
196.	ग्यारसा का एनीकट (गागडो वाला में)	हमीरपुर	27	11	56.76	76	12	02.99	27.19910	76.20083
197.	छीतर की मेडबन्दी (गागडो वाला में)	हमीरपुर	27	11	50.28	76	12	05.88	27.19730	76.20163
198.	छाजू राम की मेडबन्दी (अडावा में)	गालाळा	27	11	51.54	76	12	20.64	27.19765	76.20573
199	छीतर की मेडबन्दी –1 (नगराकाड़ा में)	हमीरपुर	27	12	06.30	76	12	41.58	27.20175	76.21155
200.	छीतर की मेडबन्दी –2 (नगराकाड़ा में)	हमीरपुर	27	12	08.70	76	12	43.68	27.20242	76.21213
201.	घरो वाला बाँध (अमर्या मीणा का)	घरो का गुवाडा	27	12	31.56	76	12	47.94	27.20877	76.21332
202	कूण्डळी की मेडबन्दी (बिरदू की)	घरो का गुवाडा	27	12	23.10	76	12	55.02	27.20642	76.21528
203	कोला वाला बाँध	नीझरी	27	12	21.18	76	13	31.50	27.20555	76.22542
204	कुम्भाळा एनीकट	नीझरी	27	12	22.32	76	13	38.10	27.20620	76.22725
205.	खारडा का एनीकट	नीझरी	27	12	21.66	76	13	41.40	27.20602	76.22817
206.	बशी की मेडबन्दी	नीझरी	27	12	13.14	76	13	33.12	27.20365	76.22587
207.	नीसा वाला बाँध (मूलचन्द पटेल का)	राज्याळी	27	12	09.24	76	13	11.82	27.20257	76.21995
208.	बाटाळा का बाँध (मूलचन्द पटेल का)	राज्याळी	27	12	10.56	76	13	09.90	27.20293	76.21942
209	पुल्ला तळा का बाँध	गुवाडा रामदास	27	12	09.18	76	13	04.02	27.20255	76.21778
210	खानळी का एनीकट (जयराम, फूला का)	टगारिया	27	11	35.53	76	13	21.96	27.19330	76.22277
211.	पोस का टोळा का बाँध (रामेश्वर, प्रभु का)	रावळा की ढाणी	27	11	55.20	76	13	43.26	27.19867	76.22868
212.	मन्दूकाळी जोहडी	नीझरी	27	12	07.86	76	14	21.96	27.20218	76.23943
213.	कैमला की जोहडी	पिपळाइ	27	12	17.00	76	15	08.00	27.20472	76.25222
214.	क्यारडा की तळाई	टगारिया	27	11	45.18	76	14	42.54	27.19588	76.24515
215.	देवाराम की मेडबन्दी (घरों आगला बेडा में)	टगारिया	27	11	43.08	76	14	16.92	27.19530	76.23803
216.	रामकरण का एनीकट (बारला बेडा में)	टगारिया	27	11	31.02	76	14	03.96	27.19195	76.23443
217.	श्रवण का बाँध (गोपाल्याळा में)	टगारिया	27	11	25.80	76	14	18.90	27.19050	76.23858
218.	राधाळा बाँध (कालू, श्रवण, कन्हैया का)	घोपडा	27	11	22.38	76	14	25.44	27.18955	76.24040
219.	डूंगर तळा का बाँध (भगवान सहाय, सुग्गा का)	घोपडा	27	11	09.48	76	14	50.04	27.18597	76.24723
220.	पटवारी वाला बाँध (आलूका बाँध)	गुवाडा रामदास	27	11	06.66	76	14	39.45	27.18518	76.24430
221.	भोलाराम का बाँध (डूंगर तैला)	गुवाडा रामदास	27	10	56.34	76	14	32.88	27.18232	76.24247
222.	झोडा पीछे का तेजाजी वाला जोहड (पहाड पर)	ग्यारया	27	10	07.86	76	14	28.43	27.16885	76.24123
223.	रावतों वाला बाँध	ग्यारया	27	10	42.30	76	14	04.14	27.17842	76.23448
224.	गादया घाटा की जोहडी	ग्यारया	27	10	50.64	76	13	41.34	27.18073	76.22815
225.	कान्दाळा की जोहडी	ग्यारया	27	11	07.26	76	13	45.18	27.18535	76.22922
226.	काल्याकी का जोहड	काल्याकी	27	11	15.49	76	13	54.22	27.18764	76.23173
227.	कालूराम की मेडबन्दी	काल्याकी	27	11	26.52	76	13	14.52	27.19070	76.22070
228.	बेलाळा का बाँध	ग्यारया	27	11	14.76	76	13	23.76	27.18743	76.22327
229.	खजूरी वाला एनीकट	ग्यारया	27	11	02.85	76	13	21.69	27.18413	76.22269
230	राम गळी का जोहड	समरा	27	11	21.72	76	12	51.90	27.18937	76.21442
231.	साण्ड्या की तळाई	साण्ड्या	27	11	09.48	76	12	45.24	27.18597	76.21257
232	घाटी वाला जोहड	समरा	27	10	46.32	76	13	14.34	27.17953	76.22065
233	लालोळाइ की तळाई	साण्ड्या	27	10	46.14	76	12	55.50	27.17948	76.21542
234.	मांडाळा बाँध	गुवाडा रामदास	27	10	20.16	76	12	56.82	27.17227	76.21578
235.	नया कुआँ की तळाइ (मीणा वाली)	बैनाडो की ढाणी	27	10	17.42	76	12	17.57	27.17151	76.20488
236.	खारवाळी का जोहड	देव का देवरा	27	10	22.37	76	12	23.47	27.17288	76.20652
237.	रामकिशन, कालू का बाँध (पछोकडा का बाँध)	देव का देवरा	27	10	26.74	76	12	27.72	27.17465	76.20770
238.	देवनारायण की मेडबन्दी	देव का देवरा	27	10	25.14	76	12	01.62	27.17365	76.20045
239.	देवरा के पास वाली तळाई	देव का देवरा	27	10	30.97	76	12	10.44	27.17527	76.20290
240.	देव महाराज की कुई	देव का देवरा	27	10	33.48	76	12	15.36	27.17597	76.20427
241.	ओंडा नळा का जोहड (श्मशान के पास)	देव का देवरा	27	10	42.06	76	12	23.47	27.17835	76.20652
242.	रावळी का बाँध	देव का देवरा	27	10	53.04	76	12	13.14	27.18140	76.20365
243.	लामेडा का नळा की जोहडी	देव का देवरा	27	10	57.61	76	12	19.43	27.18267	76.20540
244.	लामेडा बाँध (रामकिशन, सरिया, कालू, छाजू का)	देव का देवरा	27	10	58.86	76	12	20.33	27.18302	76.20565

क्र. सं.	जोहड / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर			उत्तरी अक्षांश (डिग्री मे)	पूर्वी देशान्तर (डिग्री मे)
			डि.	मि.	से.	डि.	मि.	से.		
245.	बंदठी वाला बाँध (लक्ष्मण गुजर का)	देव का देवरा	27	11	02.11	76	12	02.41	27.18392	76.20067
246.	बंदठी वाला बाँध (बद्री, किशन, सीताराम का)	देव का देवरा	27	11	00.18	76	12	07.44	27.18335	76.20207
247.	रूपस्याळी का जोहड	देव का देवरा	27	10	45.06	76	11	56.70	27.17918	76.19908
248.	काळी तळाई	नळ का गुवाडा	27	10	30.12	76	11	50.52	27.17503	76.19737
249.	कांडियाळा की तळाई	नळ का गुवाडा	27	10	37.14	76	11	33.78	27.17698	76.19272
250.	नळ के बंध की पाळ	नळ का गुवाडा	27	10	27.18	76	11	42.96	27.17422	76.19527
251.	चंवराळा बाँध (ठाकुरों वाला)	बैनाडों की ढाणी	27	10	16.14	76	11	59.90	27.17115	76.19997
252.	बदरी का बाँध	बैनाडों की ढाणी	27	10	13.14	76	11	41.64	27.17032	76.19490
253.	मल्याळी तळाई	बैनाडों की ढाणी	27	10	23.88	76	11	33.96	27.17330	76.19277
254.	मान्याकाळा बाँध	बैनाडों की ढाणी	27	10	23.28	76	11	31.14	27.17313	76.19198
255.	रोझ वाली जोहडी	तल्याळा	27	10	14.46	76	11	26.04	27.17068	76.19057
256.	भरथरी वाला जोहड (काळी ढाब)	तल्याळा	27	10	14.04	76	11	16.62	27.17057	76.18795
257.	बाबाजी वाला जोहड	तल्याळा	27	10	08.64	76	11	10.80	27.16907	76.18633
258.	कुण्डयाळा का जोहड (बाबा जी वाला जोहड)	जैतपुर गूजरान	27	09	58.08	76	11	13.86	27.16613	76.18718
259.	भोणा जी का जोहड	जैतपुर गूजरान	27	09	54.48	76	10	55.08	27.16513	76.18197
260.	पाला का ढाबा का जोहड	जैतपुर गूजरान	27	09	41.76	76	10	59.94	27.16160	76.18332
261.	आंखळा वाली जोहडी	जैतपुर गूजरान	27	09	34.92	76	10	58.32	27.15970	76.18287
262.	सामला क्यारडा का बाँध (जयराम का)	जैतपुर गूजरान	27	09	36.18	76	11	03.90	27.16005	76.18442
263.	आंखळा का बाँध (छाटू, जगदीश का)	जैतपुर गूजरान	27	09	28.40	76	11	05.53	27.15789	76.18487
264.	सामला क्यारडा का बाँध (रामनाथ का)	जैतपुर गूजरान	27	09	32.40	76	11	10.08	27.15900	76.18613
265.	ऊपला हार का जोहड – 1	जैतपुर गूजरान	27	09	35.04	76	11	28.98	27.15973	76.19139
266.	ऊपला हार का जोहड –2	जैतपुर गूजरान	27	09	32.76	76	11	28.14	27.15910	76.19115
267.	पचवीर वाला जोहड	जैतपुर गूजरान	27	09	15.42	76	11	23.49	27.15428	76.18986
268.	भूरयाकाळा बाँध (मूलचन्द, धम्मा का)	जैतपुर गूजरान	27	09	02.70	76	11	22.44	27.15075	76.18957
269.	बेंडा वाला बाँध (बख्शा का)	जैतपुर गूजरान	27	08	58.14	76	11	04.20	27.14948	76.18450
270.	आंडो नळी का जोहड	जैतपुर गूजरान	27	08	44.76	76	11	03.54	27.14577	76.18432
271.	टापराळी का बाँध (बांदू प्रजापत का)	जैतपुर गूजरान	27	08	41.39	76	11	11.15	27.14483	76.18643
272.	बाजरा वाला खेत की मेडबन्दी	जैतपुर गूजरान	27	08	48.96	76	11	24.84	27.14693	76.19023
273.	घमील की मेडबन्दी	जैतपुर गूजरान	27	09	08.94	76	11	55.68	27.15248	76.19880
274.	नया जोहड	जैतपुर गूजरान	27	09	25.68	76	11	52.20	27.15713	76.19783
275.	झांकिड्यों वाला बाँध	झांकिड्यों	27	09	32.76	76	11	56.28	27.15910	76.19897
276.	ग्यारसी लाल की मेडबन्दी (बंध ऊपरली)	तल्याळा	27	09	37.98	76	12	03.60	27.16055	76.20100
277.	बादयों का बाँध	तल्याळा	27	09	50.82	76	12	09.94	27.16412	76.20276
278.	डालाळाइ की जोहडी (रस्ते वाली जोहडी) तेजाजी के पास	कालेड	27	09	44.34	76	12	26.82	27.16232	76.20745
279.	बाबरिया की जोहडी (सावरोतळा की)	चौक्याळा	27	09	15.72	76	12	39.00	27.15437	76.21083
280.	चौक्याळा की तळाई	चौक्याळा	27	09	10.55	76	12	21.74	27.15293	76.20604
281.	चौदाळा की तळाई	चौक्याळा	27	08	57.06	76	12	25.26	27.14918	76.20702
282.	सल की तळाई	चौक्याळा	27	08	48.42	76	12	26.40	27.14678	76.20733
283	खारी कुण्ड की तळाई	चौक्याळा	27	08	57.36	76	12	37.26	27.14927	76.21035
284.	संढ की तळाई	कालेड	27	09	24.06	76	13	03.18	27.15668	76.21755
285.	ढण्ड वाला जोहड	कालेड	27	09	33.24	76	13	02.48	27.15923	76.21735
286	काळा खेतों का बाँध (लादू का)	नानेता की ढाणी	27	09	45.42	76	13	09.78	27.16262	76.21938
287.	कुज सागर	कालेड	27	09	18.48	76	13	34.79	27.15513	76.22633
288.	खात्याळा का जोहड (सरुाली नीचे का जोहड)	खात्याळा	27	09	20.16	76	13	48.48	27.15560	76.23013
289.	पगतांडा का जोहड	माळियों की ढाणी	27	08	54.84	76	14	06.96	27.14857	76.23527
290.	पीळी तळाई	चौक्याळा	27	08	39.00	76	13	17.22	27.14417	76.22145
291.	काळा राडा का सदा वाला जोहड (बीड में)	कालेड	27	08	14.82	76	13	22.37	27.13745	76.22298
292.	छाकरा की बीड का जोहड (नीचे वाला)	नटाटा	27	08	02.29	76	13	28.81	27.13397	76.22467
293.	छाकरा की बीड का जोहड (ऊपर वाला)	चौक्याळा (कालेड–नटाटा)	27	08	02.22	76	13	24.12	27.13395	76.22337
294	आडा नळा की तळाई	चौक्याळा	27	08	20.88	76	12	54.96	27.13913	76.21527
295	भोज्याकाळा का एनीकट	नटाटा	27	08	24.00	76	12	09.06	27.14000	76.20252
296	पातूकाळा का बाँध	नटाटा	27	08	42.48	76	11	29.16	27.14513	76.19143
297.	बडायला बाँध (नारायण व रामप्रताप का)	नटाटा	27	08	17.28	76	11	46.56	27.13813	76.19627
298.	गंगा राम की मेडबन्दी	नटाटा	27	08	14.16	76	11	48.72	27.13727	76.19687
299.	पण्डाळी वाला की तळाई (पैल्या कुओं की तळाई)	नटाटा	27	08	05.16	76	12	02.04	27.13477	76.20057
300.	छीला वाला बाँध (बालाराम, सोनाराम का)	नटाटा	27	07	59.46	76	11	47.10	27.13318	76.19642
301.	पीरों वाली तळाई	नटाटा	27	07	49.92	76	11	48.06	27.13053	76.19668
302.	फत्याळी तळाई	नटाटा	27	07	34.98	76	11	33.00	27.12638	76.19250
303.	कोफड वाला बाँध	नटाटा	27	07	03.90	76	11	32.28	27.11775	76.19230
304.	जाजूराळी जोहडी	नटाटा	27	07	16.98	76	11	20.76	27.12138	76.18910
305.	बेरा वाला बाँध	नटाटा	27	07	18.36	76	10	56.46	27.12177	76.18235
306.	बाबाजी वाला जोहड	नटाटा	27	07	31.79	76	10	57.38	27.12550	76.18261

क्र. सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर			उत्तरी अक्षांश (डिग्री में)	पूर्वी देशान्तर (डिग्री में)
			डि.	मि.	से.	डि.	मि.	से.		
307.	गूदड़ी वाला जोहड़	दाराळाइ	27	12	47.20	76	08	42.25	27.21311	76.14507
308.	राम तळाइ	दाराळाइ	27	12	21.20	76	08	42.02	27.20589	76.14501
309.	अंधेरी की जोहड़ी	दाराळाइ	27	12	12.28	76	08	22.34	27.20341	76.13954
310.	घासी का एनीकट	दाराळाइ	27	11	14.71	76	08	23.89	27.18742	76.13997
311.	महादेव का एनीकट	दाराळाइ	27	11	05.89	76	08	21.98	27.18497	76.13944
312.	कुण्डयाळी का एनीकट (पहाड़ में)	तिलाकपुरा	27	11	05.28	76	07	54.12	27.18480	76.13170
313.	रांझ वाला जोहड़	तिलाकपुरा	27	10	35.11	76	07	56.14	27.17642	76.13226
314.	सांकड़ा वाला बांध (तेजा गुर्जर का)	तिलकपुरा (बाग का ढाणा)	27	10	30.61	76	08	08.13	27.17517	76.13559
315.	बड़ी वाला एनीकट	तिलाकपुरा	27	10	20.24	76	07	55.78	27.17229	76.13216
316.	भिरगी वाला जोहड़	तिलाकपुरा	27	10	05.30	76	07	55.78	27.16814	76.13216
317.	हनुमान की मेड़बन्दी–1	तिलाकपुरा	27	10	31.69	76	07	21.76	27.17547	76.12271
318	हनुमान की मेड़बन्दी–2	तिलाकपुरा	27	10	35.26	76	07	23.84	27.17646	76.12329
319	जेठ वाला बांध	तिलाकपुरा	27	10	41.84	76	07	28.13	27.17829	76.12448
320.	भेरू जी वाला जोहड़	चैनपुरा	27	10	43.39	76	07	03.72	27.17872	76.11770
321.	प्रभात कसाणा की मेड़बन्दी–1	चैनपुरा	27	10	53.69	76	07	18.70	27.18158	76.12186
322.	प्रभात कसाणा की मेड़बन्दी–2	चैनपुरा	27	10	52.18	76	07	14.64	27.18116	76.12073
323	प्रभात कसाणा की मेड़बन्दी–3	चैनपुरा	27	10	54.08	76	07	13.56	27.18169	76.12043
324	प्रभात कसाणा की मेड़बन्दी–4	चैनपुरा	27	10	55.38	76	07	15.09	27.18205	76.12086
325	प्रभात कसाणा की मेड़बन्दी–5	चैनपुरा	27	10	55.38	76	07	16.54	27.18205	76.12126
326	भोपा वाला बांध	बहलोड़	27	11	45.53	76	06	53.75	27.19598	76.11493
327	किशना जी वाला जोहड़	बहलोड़	27	11	48.77	76	06	55.99	27.19688	76.11555
328.	किशना जी का एनीकट	बहलोड़	27	12	01.73	76	06	27.83	27.20048	76.10773
329.	किशना जी का डावली वाले खेत की मेड़बन्दी	बहलोड़	27	12	02.77	76	06	25.63	27.20077	76.10712
330.	भोमिया वाली तळाइ	धोराधारा	27	12	52.56	76	05	40.60	27.21460	76.09461
331.	गिरनारी महाराज का जोहड़	बहलोड़	27	11	55.75	76	05	23.78	27.19882	76.08994
332.	सती वाला जोहड़	बहलोड़	27	11	32.64	76	05	11.18	27.19240	76.08644
333.	देवी तळा की तळाइ	देवीतळा	27	09	59.62	76	06	47.45	27.16656	76.11318
334.	पचवार वाला जोहड़	बिरकड़ी (रायसर)	27	09	37.15	76	07	51.85	27.16032	76.13107
335	नर्सरी वाला जोहड़	रायसर	27	09	00.00	76	06	47.23	27.15000	76.11312
336.	कुण्डळया का एनीकट (नीझर की घाटी में)	गुढ़ा हरूका	27	08	09.02	76	08	31.88	27.13584	76.14219
337.	जोण माता की तळाई	रामजीपुरा (रायसर)	27	07	27.23	76	07	08.54	27.12423	76.11904
338	गोपाल शर्मा का एनीकट	रामनघाटी	27	06	03.24	76	06	58.79	27.10090	76.11633
339	भूरयाळी तळाई	सायपुरा	27	04	23.99	76	08	20.80	27.07333	76.13911
340.	रामप्रताप गुर्जर का बांध	सायपुरा	27	03	48.89	76	08	51.76	27.06358	76.14771
341.	खटीकों वाली जोहड़ी	थळी	27	04	06.31	76	11	43.37	27.06842	76.19538
342.	तुलसीकाळा का बांध (जनसी मीणा का)	थळी	27	03	30.67	76	12	08.32	27.05852	76.20231
343.	दुःखभंजन का तालाब	थळी	27	03	38.32	76	13	19.88	27.06064	76.22219
344	रामकरण कुम्हार की मेड़बन्दी (पेला वाला खेत की)	थळी	27	03	32.22	76	13	22.62	27.05895	76.22295
345.	रामजीलाल शर्मा की मेड़बन्दी	थळी	27	03	28.66	76	13	30.11	27.05796	76.22503
346.	भैरे लाल कुम्हार की मेड़बन्दी (चाँदी वाला खेत की)	थळी	27	03	26.39	76	13	13.37	27.05733	76.22038
347.	भैरे लाल कुम्हार की मेड़बन्दी (नाहरी वाला खेत की)	थळी	27	03	25.16	76	13	14.16	27.05699	76.22060
348.	भगवान सहाय गोस्वामी का एनीकट	थळी	27	03	23.29	76	13	11.71	27.05647	76.21992
349.	छाटूराम खटीक की मेड़बन्दी–1	थळी	27	03	01.37	76	13	35.08	27.05038	76.22641
350.	छाटूराम खटीक की मेड़बन्दी–2	थळी	27	02	58.85	76	13	34.43	27.04968	76.22623
351.	छाटूराम खटीक की मेड़बन्दी–3	थळी	27	02	54.96	76	13	33.46	27.04860	76.22596
352	हरी सिंह की मेड़बन्दी (चौदाळा की)	बराणों की ढाणी	27	02	50.93	76	13	10.16	27.04748	76.21949
353	गंगाधर की डूंगरी तळा की मेड़बन्दी	बराणों की ढाणी	27	02	48.59	76	13	10.45	27.04683	76.21957
354.	राड़ा वाली जोहड़ी	बराणों की ढाणी	27	02	47.11	76	13	12.61	27.04642	76.22017
355.	ग्वाळगाता का जोहड़	डोंगरवाडा	27	02	39.05	76	13	27.84	27.04418	76.22440
356.	धारी घाट का जोहड़	बराणों की ढाणी	27	02	36.96	76	13	13.76	27.04360	76.22049
357.	रामप्रताप का बांध	बराणों की ढाणी	27	02	50.53	76	12	49.90	27.04737	76.21386
358	भेरू वाला बांध	बराणों की ढाणी	27	02	43.01	76	12	52.09	27.04528	76.21447
359.	कोल्याळी का बांध	जगतसर	27	02	29.36	76	12	14.44	27.04149	76.20401
360.	खानड़ा का जोहड़	सामेर	27	01	10.49	76	12	53.82	27.01958	76.21495
361	बंणजारों की तळाई	रामजीपुरा (डोंगरवाड़ा)	27	01	00.90	76	13	46.80	27.01692	76.22967
362.	चमत्कारी बाला जी की तळाइ (मंदिर के सामने)	घतरपुरा (ढाणी खारवाळ)	27	02	49.81	76	13	56.21	27.04717	76.23228
363.	चमत्कारी बाला जी की तळाइ (मन्दिर के पीछे)	घतरपुरा (ढाणी खारवाळ)	27	03	05.40	76	14	06.42	27.05150	76.23512
364.	भगवान सहाय मीणा का एनीकट (न्याळी नळा पर)	घतरपुरा (ढाणी खारवाळ)	27	02	53.81	76	14	22.34	27.04828	76.23954
365.	स्कूल के पीछे वाला जोहड़	श्रीनगर	27	03	54.60	76	14	02.00	27.06517	76.23389
366.	पचवीर वाला जोहड़ (महिला समूह का)	श्रीनगर	27	03	53.60	76	13	58.10	27.06489	76.23225
367.	पचवीर वाला जोहड़	थळी	27	03	59.83	76	13	57.00	27.06662	76.23250

क्र. सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर			उत्तरी अक्षांश (डिग्री में)	पूर्वी देशान्तर (डिग्री में)
			डि.	मि.	सै.	डि.	मि.	सै.		
368.	प्रभात की मेडबन्दी	श्रीनगर	27	04	03.11	76	13	53.33	27.06753	76.23148
369.	अर्जुन की मेडबन्दी–1	श्रीनगर	27	04	07.10	76	13	52.00	27.06864	76.23111
370.	भेरू मीणा की मेडबन्दी	श्रीनगर	27	04	05.77	76	13	47.21	27.06827	76.22978
371.	हरबख्श मीणा की मेडबन्दी (कांकड़वाला में)	श्रीनगर	27	04	10.06	76	13	45.59	27.06946	76.23933
372.	अर्जुन की मेडबन्दी –2	श्रीनगर	27	04	13.44	76	13	50.45	27.07040	76.23068
373.	बाछड़ी का एनीकट (बावड़ी वाला एनीकट)	श्रीनगर	27	04	31.73	76	13	53.03	27.07548	76.23141
374.	घरोंडी मेडबन्दी (प्रभु शर्मा की)	रासाळा	27	07	04.32	76	12	24.60	27.11787	76.20683
375.	नीमड़ी वाला एनीकट	बस्सी	27	08	21.20	76	14	34.74	27.13922	76.24298
376.	तेजाजी का जोहड	बस्सी	27	08	23.00	76	14	43.90	27.13972	76.24553
377.	जळोकाण्ड वाला जोहड	बस्सी	27	09	00.70	76	14	23.40	27.15019	76.23983
378.	रेता वाला जोहड	खान्यों	27	09	14.00	76	14	59.30	27.15389	76.24981
379.	पीपळ वाला जोहड	खान्यों	27	09	09.90	76	15	12.70	27.15275	76.25353
380.	पथवीर वाला जोहड	खान्यों	27	09	06.10	76	15	12.40	27.15169	76.25344
381.	बाँडी जोहड़ी (मास्टर जी की)	खान्यों	27	09	06.50	76	15	27.90	27.15181	76.25775
382.	ढेरडी का एनीकट	बस्सी	27	08	33.40	76	15	17.00	27.14261	76.25472
383.	रामफूल का जोहड (नई तळाइ)	बस्सी	27	08	23.00	76	15	11.80	27.13972	76.25328
384.	बाबूलाल नायक की तळाइ	डांगोता	27	08	26.04	76	15	56.40	27.14057	76.26567
385.	साथाळा का जोहड	डांगोता	27	07	45.30	76	16	17.50	27.12925	76.27153
386.	मुंगल्याळी तळाई	डांगोता	27	07	35.87	76	15	47.89	27.12663	76.26330
387.	बांद्याळा की तळाई (नीमड़ी वाली)	डांगोता	27	07	26.58	76	15	31.68	27.12405	76.25880
388.	फाराळी का जोहड	डांगोता	27	07	12.30	76	15	41.20	27.12008	76.26144
389.	जोडल्याळी का जोहड	डांगोता	27	07	12.20	76	16	21.00	27.12006	76.27250
390.	कुम्हारों की घाटी का जोहड	नीमला	27	05	49.30	76	15	47.50	27.09703	76.26319
391.	नीमला का एनीकट	नीमला	27	04	54.20	76	16	05.90	27.08172	76.26831
392.	सरपंच का एनीकट (केमां वाला)	नीमला	27	04	52 20	76	15	44.90	27.08117	76.26247
393.	बावड़ी वाला जोहड	नताळा	27	04	13.45	76	15	56.02	27.07040	76.26556
394.	खाती वाला जोहड	नताळा	27	04	05.70	76	15	53 60	27.06825	76.26489
395.	बोळाइ की तळाई (पुरानी जोहडी)	राम्याळा	27	03	50.95	76	16	11.30	27.06415	76.26981
396.	नई तळाई (लाल खम्भा वाली जोहडी)	राम्याळा	27	03	47.60	76	15	57.10	27.06322	76.26586
397.	भूंथानाथ का जोहड़	किशनाळा	27	03	42.30	76	15	55.70	27.06175	76.26547
398.	सुखदेव का बाँध (भगतकाळा)	राम्याळा	27	03	43.27	76	15	29.95	27.06202	76.25832
399.	छोटू मीणा का सुलारा का बाँध	राम्याला	27	03	47.59	76	14	42.32	27.06322	76.24509
400.	नया कुआँ का बाँध	राम्याला	27	03	17.28	76	15	32.04	27.05480	76.25890
401.	पटेल सागर	किशनाळा	27	03	25.40	76	15	48.70	27.05706	76.26353
402.	सडक ऊपरला बाँध	किशनाळा	27	03	17.82	76	15	50.76	27.05495	76.26410

हमारा संकल्प

पानी जहाँ दौड़ता है, वहाँ इसे चलना सिखाना है।
जहाँ चलने लगे, वहाँ इसे रेंगना सिखाना है।
जहाँ रेंगने लगे, वहाँ इसे ठहराना है।
जहाँ ठहर जाये, वहाँ इसे धरती के पेट में बैठाना है।
ताकि नज़र न लगे सूरज की,
और जब कभी सूखा और अकाल आए
तो मर्यादित होकर इसी जल से, जीवन चलाना है।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

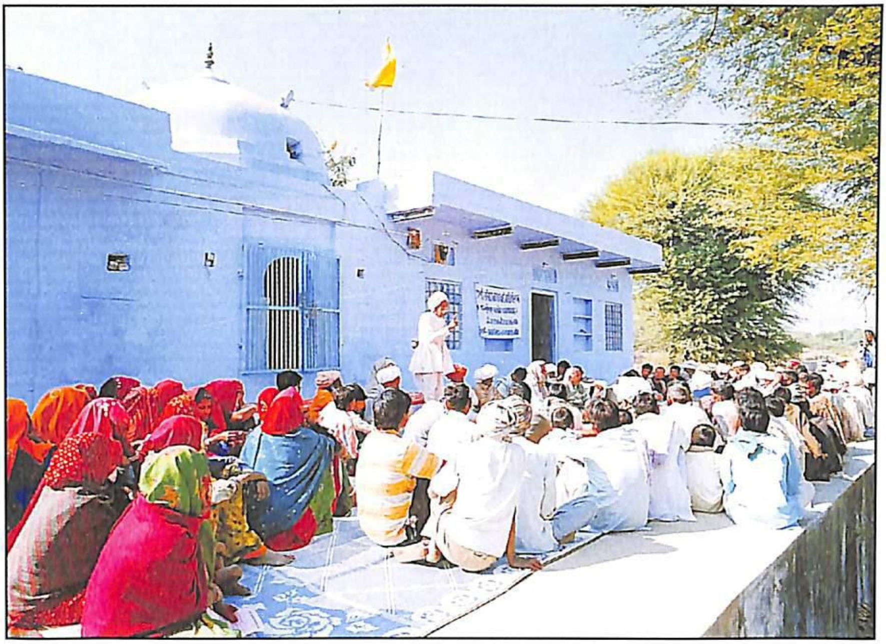

अरवरी संसद का 17वाँ अधिवेशन

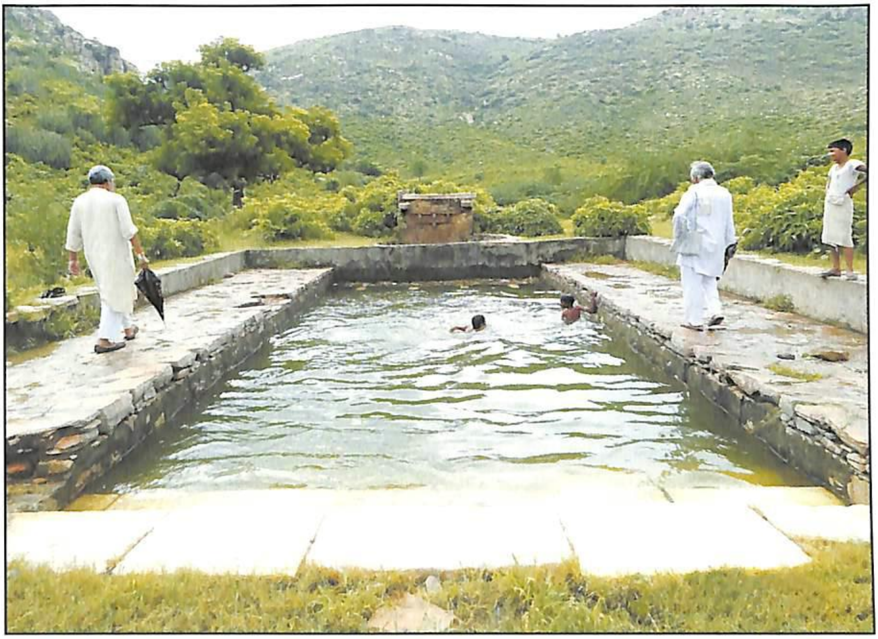

साँवतसर की बावड़ी

जोसेफ सी. जॉन अवार्ड समारोह में तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति के.आर. नारायणन्,
राजस्थान के महामहिम राज्यपाल अंशुमान सिंह, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत,
विज्ञान पर्यावरण केन्द्र की सुनीता नारायण एवं सम्मानित भांवता कोल्याला ग्राम सभा सदस्यगण